श्रीराम-चरित्र कीर्तन

[श्रीमद्-पद्मपुराण के आधार पर रचित]

जै न रा मा य ण

●

रचयित्री

कम्पावती जैन 'दासी'

●

सम्पादक

नेमचन्द जैन 'अग्र'

●

प्रकाशक

कम्पावती जैन 'दासी'
द्वारा/श्री मदनमोहन लाल जैन
१५३४, कूचा सेठ, दिल्ली-६

●

प्रथम संस्करण मई १९५७

वितरक--
विक्रेता प्रकाशन संघ
दरीबा कलाँ, दिल्ली-६

न्यौछावर ढाई रुपये मात्र सजिल्द

सूचना

इस ग्रन्थ को यदि कोई धर्म प्रेमी सज्जन प्रचारार्थ १०० या ५० प्रतियां मंगायेंगे तो उन्हें विशेष सुविधा दी जायेगी। इस के लिये वह प्रकाशक ~~अथवा वितरक~~ से पत्र व्यवहार करें।

—प्रबन्धक

मुद्रक—सन्मति प्रेस, दरीबां कलाँ, देहली।

वी० (सेवा मन्दिर)
पुस्तकालय

सम्पादकीय

श्रीराम चरित्र भारत के सामाजिक जीवन का एक आदर्श आख्यान है। मूलकथा सिर्फ भारत ही नहीं, भारत के समीपवर्ती द्वीप देशों में भी विभिन्न परिवर्तनों के साथ फली फूली है।

आज राम चरित्र का आदर्श रूप महाकवि तुलसीदास का रामचरित्र माना जाता है। मर्यादा पुरुषोत्तम के निजी जीवन का राज योग तक कविर्मनीषि ने लोकोत्तर चित्रण किया है, परन्तु अन्य मान्यताओं में कुछ इस प्रकार की धारणाएं आ गई हैं जो साधारण व्यक्ति तथा बुद्धिजावियों, दोनों के मानस में प्रश्न बनकर रह जाती हैं। जिसमें हनुमान, सुग्रीव आदि का वानर एवं रावण आदि का राक्षस होना तथा तदनुरूप विकृत आकृतियों का चित्रण अतिशयोक्ति पूर्ण लगता है। इस चीज का निराकरण जैन साहित्य में हुआ है। स्वयंभू देव रचित "पउम चरिउ" [पद्मनाभ चरित्र जो ईस्वी सन् ७७० में रचा गया] में राक्षसों एवं वानरों का चित्रण दो वंशों के रूप में किया गया है। श्री वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त सम्पादन करते हुए सम्पादक डा० शान्तिकुमार नानूराम व्यास, एम. ए. पी. एच. डी० ने भी लिखा है :

"राक्षस और वानर रामायणकालीन भारत की दो अनार्य जातियां थीं। रावण के नेतृत्व में राक्षस जाति ने असाधारण उन्नति करली। दक्षिण भारत की वानर नामक वनचर जाति को निरा बन्दर समझ

लैना भूल है । शिक्षा और ऐश्वर्य का इनमें पर्याप्त प्रसार था । (सिर्फ) शरीर के वर्ण और नस्ल में वे आर्यों से भिन्न थे ।"

यही बात आचार्य स्वयंभू कृत "पउम चरिउ" (पद्मपुराण चरित्र) में है । ग्रन्थ की मूल कथा इस प्रकार है :

"विजयार्ध की दक्षिण दिशा में रथनूपुर नगर में राजा इन्द्र राज्य करते थे । इन्होंने लंका को जीता था । पाताल लंका के राजा रत्नाश्रव का विवाह व्योमविन्दु की पुत्री केकसी से हुआ । रावण इन्ही का पुत्र था । इसने बड़ा होकर इन्द्र को परास्त करके लंका जीती और खरदूषण से अपनी बहिन चन्द्रनखा का विवाह करके उसे पाताल लंका दे दी ।

वानरवंशी शासक बालि अपने भाई सुग्रीव को राज्य दे, दिगम्बर मुनि हो कैलाश पर तप करने लगे । बलशाली रावण ने उनके मानमर्दन हेतु कैलाश पर्वत उठाया । मुनि बालि ने पर्वत पर बने मंदिरों के रक्षार्थ अंगूठे के जोर से पर्वत को दबा दिया । बाद में रावण को छोड़ दिया और तपस्या करके निर्वाण पाया ।

अयोध्या में रघु के पुत्र अरण्य के यहाँ अनन्तरथ और दशरथ दो पुत्र हुए । अनन्तरथ पिता के साथ साधु हो गये और दशरथ राजा हो गये । उन्हें नारद ऋषि ने सूचना दी कि रावण ने दशरथ पुत्र और जनकपुत्री के निमित्त से अपनी मृत्यु जानकर विभीषण को आप दोनों के वध के लिये नियुक्त किया है । दोनों राजा स्व रक्षार्थ देश देशान्तरों में चले गये । मार्ग में दशरथ ने कैकेयी से विवाह किया और एक युद्ध में प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया । वही वरदान राम के राज्याभिषेक के समय कैकेयी को देकर दशरथ ने जिन दीक्षा ली । वन में सीताहरण होजाने

पर राम ने हनुमान और सुग्रीव की सहायता से रावण का वध करके सीता को प्राप्त किया।

जैन धर्मानुयायी रावण का कुल सहित संहार अनीति के कारण ही हुआ।

अयोध्या लौट आने पर राम ने लोकापवाद के भय से सीता को निर्वासित किया। सौभाग्य से उस वन में से राजा वज्रजंघ सीता को अपने संरक्षण में ले गये। लवण और अंकुश सीता के दोनों पराक्रमी पुत्रों ने अनेक देशों को जीत कर राजा वज्रजंघ के राज्य की वृद्धि की। अनेक देशों को दिग्विजय करते हुए यह वीर जब अयोध्या आये तो पिता पुत्र में युद्ध हुआ और परस्पर परिचय भी। सीता ने अग्नि परीक्षा दी और तपस्या कर स्त्री-लिंग छेद स्वर्ग प्राप्त किया। लक्ष्मण की मृत्यु से राम छः मास तक शोकाभिभूत रहे, तत्पश्चात् ज्ञान होने पर दिगम्बर मुनि हो, दुर्धर तप कर, मोक्ष प्राप्त किया।"

इस संक्षिप्त कथानक पर "पउम चरिउ" ग्रंथ निर्मित है। जिसका नायक धीरोदात्त पद्म राम है। काव्य में शान्त रस प्रधान है और संयोग एवं वियोग पक्षीय शृंगार सहायक।

इस अभिनन्दनीय महाकाव्य की भाषा प्राकृत (अर्ध मागधी) है। एक युग था जब यह भाषा जनभाषा थी और इस महाकाव्य का घर-घर पाठ होता था। श्रीमती कंपावती जी ने जब मुझसे रामचरित कीर्तन को मुद्रण कराने की चर्चा की तो मेरे मानस में आधुनिक लोकभाषा देवनागरी में इस ग्रंथ की रिक्त पूर्ति होते देख एक प्रसन्नता की धारा बह चली और इस बात ने एक और उत्साह पैदा किया कि यह पूर्ति एक महिला द्वारा हो रही है।

पांडुलिपि पढ़ कर मैंने उन से उसमें भाषा संबंधी सुधार की अनुमति मांगी। ग्रन्थ विशेष रूप से जनसाधारण की भाषा में था इसलिये उसमे भाषा का विशिष्ट सौष्ठव लाना आवश्यक प्रतीत न हुआ। यत्र तत्र साधारण परिवर्तनों के पश्चात् काव्य पाठकों के हाथों में है। हमें आशा है कि इसे जैन समाज श्रद्धा पूर्वक अपनाएगा और साथ ही हम जैन साहित्यकारों से निवेदन करेंगे कि वे प्राचीन भाषाओं में लिखित जैन काव्यों को आधुनिक भाषा में पद्य बद्ध करने का प्रयास करेंगे।

—नेमचन्द जैन 'अग्र'
साहित्यरत्न

आत्म-निवेदन

गत शीतकाल की बात है।

मैं देहली के कूचा सेठ के बड़े दिगम्बर जैन-मन्दिर में श्रीमद् पद्म पुराण का प्रवचन करती थी। श्रद्धालु बहिनें प्रवचन सुनतीं और धर्म लाभ करतीं थीं। उनमें से कई बहिनों ने शंका समाधान में मुझ से पूछा—'क्या हनुमान की पूंछ नहीं थी? रावण राक्षस नहीं था? राम ने रावण को नहीं मारा था?'

मुझे उनकी यह शंकायें सुनकर एक हार्दिक कष्ट हुआ। स्पष्ट था कि हमारी बहिनें जैन राम कथा के स्वरूप से अनभिज्ञ हैं। वैष्णव सम्प्रदाय के साहचर्य से रामलीला का जो स्वरूप उनके हृदयों पर अंकित था वह तो था ही, परन्तु इसके साथ मैंने अनुभव किया कि इस में प्रमुख बाधा यह भी है कि पद्मपुराण एक महान् और बड़ा ग्रंथ होने के कारण साधारणतया उसके अध्ययन और मनन का अवकाश नहीं निकल पाता।

इस बात ने मेरे मन में अज्ञात प्रेरणा भर दी। मेरे मानस ने मुझसे कहा कि मैं राम-कथा को छन्दोबद्ध रूप में लिखूं। कवि कर्म एक महान् कर्म है। मुझमें उसकी योग्यता का अंश मात्र भी नहीं। हां यह अवश्य है कि कभी कभी अपने मन के उद्‌गारों को भजनों के रूप में अवश्य लिपिबद्ध कर लेती हूं। मेरी अज्ञात प्रेरणा को इस पद्य-बद्धता की

प्रवृति ने प्रोत्साहन दिया, और डेढ़ मास की अल्प अवधि में भगवान महावीर ने अपनी असीम अनुकम्पा से इस कार्य को पूरा करा दिया।

पुस्तक की छपाई एवं संशोधान कार्य में भाई नेमचन्द जैन 'अग्र साहित्यरत्न ने जो योग दिया है उसके लिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूं।

जो कुछ बन पाया है, आपके सामने है। यदि इससे जैन समाज में राम-चरित्र की भ्रान्त धारणाओं का उन्मूलन हुआ तो यह मेरे श्रम का सब से बड़ा पारितोषिक होगा।

विनीता—
कम्पावती जैन 'दासी'

श्रीराम चरित्र कीर्तन

जैन रामायण

प्रार्थना

धुन —फिल्म जागृति

महावीर तेरी याद, भी करती कमाल है।
दर्शन बगैर हो रहा, जीना मुहाल है॥

हिंसा का जोर जब हुआ, भारत में था भारी।
और यज्ञ-बलि होने से, प्रजा थी दुखारी॥
अवतार लिया तू ने, अहिंसा के पुजारी।
मिट जाँयगे सब दुख, यही कहते थे नर नारी॥

सानी नहीं तेरा कोई, तू बे मिसाल है।
दर्शन बगैर हो रहा, जीना मुहाल है॥

मैना सती ने याद में, सिद्ध चक्र रचाया।
उसके पति का राज-रोग, भी था मिटाया॥
सीता के अग्नि-कुण्ड को, कमलों से सजाया।
द्रौपदि के आगे कौरवों, का मान घटाया॥

जो आ गया शरण, गया होकर निहाल है।
दर्शन बगैर हो रहा, जीना मुहाल है॥

पुण्यात्मा को तारना, आसान काम है।
पापात्मा को तारना, महान काम है॥
जपती हूं तेरा नाम, वीर आठों याम है।
इस 'दासी' को भी तारो, तो तुम्हारा नाम है॥

दरबार में तेरे यही, मेरा सवाल है।
दर्शन बगैर हो रहा, जीना मुहाल है॥

ॐ

❀ श्री महावीराय नमः ❀

श्रीराम-चरित्र कीर्तन

दोहा—चौबीसों जिनराज को, प्रणमु बारम्बार ।
राम-चरित वर्णन करूं, तुच्छ बुद्धि अनुसार ॥
सरस्वती मां शारदे, तुमको सुमरूँ आज ।
वीर प्रभु रखना मेरी, लाज सभा में आज ॥

तर्ज—राधेश्याम

श्री पद्मपुराणाधार से ही, कुछ छन्द बनाना चाहती हूँ ।
यदि भूल कहीं पर रह जाये, गुणियों से क्षमा चाहती हूँ ॥
जिस वंश में हुए आदि प्रभुजी, भरतेश आदि वैभवधारी ।
उस कुल में राम ने जन्म लिया, दशरथ गृह में भव दुखहारी ॥
अवधेश राय के महलों में, थीं चार राणियाँ रूप भरी ।
कौशल्या, सुमित्रा, कैकेई, सुप्रभा, निछावर सब नगरी ॥
कौशल्या के श्रीराम हुए, लक्ष्मण की सुमित्रा थी माता ।
शत्रुघ्न सुप्रभा के सुत थे, कैकेई के भरत सब सुख दाता ॥

चारों सुपुत्र थे लासानी, अद्भुत बल विक्रम के धारी।
मन मोहन रूप देखकर के, मोहित होती दुनिया सारी॥
मर्यादा पालन हारे थे, पुरुषोत्तम चरम शरीरी थे।
सम्यक्-दर्शन श्रद्धानी थे, जिनराज चरण अनुरागी थे॥

दोहा—मिथिलापुर राजा जनक, सीय पिता कहलायँ।
रानि विदेहा नाम की, उनकी कथा सुनायँ॥
भामण्डल और जानकी, थी जुड़वां सन्तान।
शत्रु देव भामण्डल हि, बाल चुराया आन॥

तर्ज—राधेश्याम

ले जाके वनी में पटक दिया, वहाँ रथनुपुर राजा आया।
विद्याधर चन्द्रगति नामक, जो उठा बाल निज घर लाया॥
निज राज पहुंच,जन्मोत्सव कर,के नाम रखा था भामण्डल।
और इधर जनकजी ढूंढ रहे,सब छान लिया था भूमण्डल॥

दोहा—पुत्र मिला कहीं पर नहीं, लुटा दिया सब कोष।
हार मानकर सिया पर, ही कीना सन्तोष॥
अनुपम उस का रूप गुण, बोले तुतले बैन।
मात-पिता हर्षित हृदय, देखें भर भर नैन॥
कभी चले कभी गिर पड़े, कभी हँसे कभी रोय।
नर नारी मोहित हुए, छवि निराली जोय॥

बीते दिन, बीते वर्ष और, यौवन ने रंग जमाया है।
था जनक दुलारी आनन पे, कुछ रूप सवाया छाया है॥

सीखी हैं सोलह विद्यायें, और कला सभी मन मोद भरे।
संगीत नृत्य और चित्र आदि, जो देखे वो ही मौन धरे॥
सम्यक दर्शन धारणहारी, छवि देख शची शर्माती है।
वय देख पिता को फिक्र हुई, पुत्री वर योग कहाती है॥
दोहा—उसी समय का जिक्र है, म्लेच्छों का सरदार।
आया दक्षिण देश से, लेकर सैन्य अपार॥
नगर उजाड़े बहुत से, मिथिलापुर में आन।
जनक राय को युद्ध का, दे दीना ऐलान॥

तर्ज—राधेश्याम

तब अवध पुरी से मदद हेतु, बुलवाये राम जनकजी ने।
लक्ष्मण भ्राता संग सैन्य दिये, भेजे तुरन्त दशरथजी ने॥
श्री जनक राव ने युद्ध मध्य, में मात करारी खाई है।
लेकिन लक्ष्मण के बाणों से, राक्षस की मति घबराई है॥
श्रीराम का धनु टंकार सुना, सब कांप कांप कर भाग गये।
कर विजय प्राप्त दोनों भाई, श्री जनक राव के चरण गहे॥
दोहा—आशीष दीनी बहुत सी, हर्षित हुए अपार।
पुत्री सिया वर योग्य हैं, रामचंद्र सुकुमार॥
देनी कीनी राम को, जोड़ी बनी महान।
राम लखन ने अवध को, शीघ्रहि किया प्रयाण॥
नारद मुनि कलह-प्रिय, उनका सुनो बयान।
राम गुणों पर मुग्ध हो, आये अवध महान॥

सुन सीता सम्बन्ध को, सोचे बारम्बार ।
क्या जाने कैसी लली, है वह जनक दुलारि ॥

लावणी-गीत

जाके देखूँ सिया को मैं सुघराई ।
जिसको वर ने जाहिं श्री रघुराई ॥ जाके देखूँ०
श्री राम बड़े गुणवान और बलधारी ।
यह देखूँ जाकर, योग्य भी है सुकुमारी ॥
चल दिये गगन मग, फौरन वीणा धारी ।
चुपके से पहुंचे, सीता महल मंझारी ॥
सीता दर्पण के पास तभी थी आई ।
नारद छवि देखी भूल गई चतुराई ॥
था जटा जूट कोपीन सुशोभित बाना ।
नहीं देवर्षि को सीता ने पहिचाना ॥
भय खाकर फौरन माता के ढिग आई ।
कह 'हाय' गिरी सीता को मूर्छा आई ॥
घिर गये अचानक मुनि महलों में आई ।
कठिनाई से उन अपनी जान बचाई ॥

दोहा—बदला लेने का तभी, नारद किया विचार ।
सीताजी के रूप का, लीना चित्र उतार ॥

ले जाकर के वह रूप पटल, भामण्डल को दिखलाया है ।
लखते ही मोहित हुआ, और तन मन की सुधि विसराया है ॥

कुछ देर बाद सुधि आने पर, नारद से हाल पूछते हैं।
वह सिया छवि वर्णन करके, सब समाचार बतलाते हैं॥
दोहा—चन्द्रगति ने जब सुना, भामण्डल के हाल ।
जनक बुलाने को तभी, चली भूप एक चाल॥
एक विद्याधर को तभी, अश्व धराया रूप ।
छल करके लाओ अभी, तुम मिथिलापुर भूप॥

* गजल *

गगन गामी अश्व उड़ कर, जनक नगरी में आया है।
न ऐसा अश्व देखा है, शोर नगरी में छाया है॥
पकड़ने को सभी दौड़े, सभी ने मात खाई है।
चले राजा जनक भी, धुन सवारी की समाई है॥
चढ़े राजा जभी उस पर, उड़ा वह अश्व पल भर में।
देश विद्याधरों के आनकर, आराम पाया है ॥
दोहा—देश निराला देख कर, जनक हुए हैरान ।
श्री मन्दिर में जायकर, पूजे श्रीभगवान ॥
इतने में चन्द्रगति आये, श्री जनक राव को साथ लिया।
अपने महलों में लाकर के, सन्मान सहित ठहराय दिया॥
फिर समय पाय कर कहन लगे, तुम पुत्री सीता सुकुमारी-
को पुत्र से मम परणा दीजे, जोड़ी ये बनेगी अति प्यारी॥
तब कही जनक ने सुनो राव, ऐसा तो नहीं हो सकता है।
श्रीराम से यह सम्बन्ध हुआ, कोई भी तोड़ न सकता है॥

दोहा—चन्द्रगति कहने लगे, हम विद्याधर जान ।
हमसे यह सम्बन्ध कर, पाओगे सन्मान ॥
रखे कौन गुण राम में, भूमि गोचरी जान ।
हम चलते आकाश में, विद्या बल की शान ॥

तर्ज—इन्द्र सभा

बात यह सुन जनक, क्रोध में भर गये ।
थे जो कहने नहीं, वह वचन कह गये ॥
पक्षी उड़ते बहुत, से हैं आकाश में ।
फर्क क्या उनमें तुम में, बताओ जरा ?
तीर्थंकर व बलभद्र, चक्रेश तक ।
है इसी भू पे आकर, जनम धारते ॥
पूजते जिनको आकर, के अमरेश भी ।
हम न झूंठी प्रशंसा, करा चाहते ॥
व्यर्थ श्रीराम के गुण, न हम गा सकें ।
यह है सम्बन्ध ऐसा, न छुड़वा सके ॥

दोहा—जनक राव के सुन वचन, हुए राव गम्भीर ।
शर्त रखी है एक कठिन, धार हृदय में धीर ॥

तुम राम की जो महिमा गाई, हमको विश्वास नहीं आता ।
हम लेंगे परीक्षा थोड़ी सी, गुणगान आपका नहीं भाता ॥
दो धनुष आपको देते हैं, कर लीजे स्वयंवर की त्यारी ।
जो इनको आन चढ़ायेगा, वो ही परणेगा सुकुमारी ॥

यदि राम से धनुष चढ़ेगा नहीं, जबरन सीता को लाएँगे ।
सन्देश पठाओ देशों में, हम भी तो शीघ्र ही आएँगे ॥
सुन जनक आए मिथलापुर में, मन में सन्देह हुआ भारी ।
श्रीराम धनुष को चढ़ा सकें! बस ये ही चिन्ता थी सारी ॥
वह धनुष नहीं विकराल काल, अगनी और सर्प फुंकारते हैं ।
हैं देव सहस सेवा करते, कोई पास तलक नहीं आते हैं ॥

दोहा—जनकपुरी में हो रहे, घर घर मंगलचार ।
जनक आगमन से हुआ, सब को हर्ष अपार ॥
राजा चिन्तातुर हुए, कठिन शर्त को देख ।
रानी सुन व्याकुल भई, क्या विधना के लेख ॥

तर्ज—राधेश्याम

पहले तो पुत्र गया मेरा, क्या पुत्री भी अब जायेगी ।
हा! कौन कर्म आगे आये, होनी क्या खेल खिलायेगी ॥
राजा ने स्वयम्बर की ठानी, खबरें सब देश विदेश गईं ।
मण्डप बनवाया बहुत बड़ा, जिसमें सब प्रजा समाय गई ॥
रघु-वंशी और चन्द्र-वंशी, हरि-वंशी भी सब आये हैं ।
राजा ने कर सन्मान सभी का, आदर से बैठाये हैं ॥
सतखने महल पर सीता थी, सखियों के मध्य विराज रही ।
एक दासी सब राजाओं के, गुण रूप वंश बतलाय रही ॥
इन धनुषों पर इस मण्डप में, जो पहली डोर चढ़ायेगा ।
हे राजकुमारी आज वही, तुम से वर माल डलायेगा ॥

दोहा—खड़े हुए राजा जनक, बोले वचन गंभीर ।
जो चाहे आगे बढ़े, धनुष चढ़ाये वीर ॥

चौबोला

धनुष चढ़ाने वीर जो आते, हार मान कर जाते ।
महाप्रलयधारी धनुषों को, छूने तक नहीं पाते ॥
प्राण गए तो क्या शादी, क्या सुन्दर राजकुमारी ।
कोई कहे शील पालेंगे, सदा रहें ब्रह्मचारी ॥

मैदान

हाय हम क्यों यहाँ आयेजी, प्राण नहीं बचने पायेजी ।
धनुष नहीं काल हमारा ।
प्राण यदि बच जाएँ भाई, ब्याह न करें दुबारा ॥

दोहा—राजाओं को देखकर, विकल और बेचैन ।
धनुष ओर देखन लगे, श्रीराम भर नैन ॥
उठे धीर गति से बढ़े, आए धनुष के पास ।
आदि प्रभु को सुमर के, धर हृदय विश्वास ॥

तर्ज—राधेश्याम

वह वज्रावर्त और सागरावर्त, देवो पुनीत कहलाते हैं ।
श्री राम के आते ही दोनों, शिष्यों की तरह नम जाते हैं ॥
जिस समय उठाया वज्रावत, भूमण्डल सारा कांप गया ।
सारे राजाओं के मन पर, इक सांप सा मानों लोट गया ॥
और इधर उठा लक्ष्मणजी ने, सागरावर्त को तान दिया ।

जब बाण उठाया हाथों में, सब राजाओं का प्राण गया ॥
जब धनुष चढ़े ले वरण माल, सीता जी मण्डप में आई।
वरमाल कण्ठ में पहनातीं, वह पुलक प्रेम में सकुचाई ॥
जो विद्याधर वहाँ आए थे, लक्ष्मण को देख हर्षाय गए।
निज अष्टादश कन्याओं से, वो उनका ब्याह रचाय गए ॥
श्री कनकराय ने निज पुत्री, श्री लोक सुन्दरी स्यानी का।
कर-ग्रहण भरत से करा दिया, उस रूप सुन्दरी ज्ञानी का ॥
शादी की वेदी सजी और, सीता का ब्याह संस्कार हुआ।
फिर सखी सहेली मिल बैठीं, घर भर में मंगल-चार हुआ ॥
जब हुई विदा की तय्यारी, माता ने शिक्षा दीनी है।
श्री जानकी जी ने हर्ष सहित, वह सभी ग्रहण कर लीनी है ॥

तर्ज—गज़ल

विदा होकर के अय बेटी, तुम अब ससुराल जाओगी।
मुझे आशा यही भारी, सुयश कुल का बढ़ाओगी ॥
तेरी माता कौशल्या है, हुकम उनका बजाना तुम।
पिता दशरथ जी को मानो, तभी सन्मान पाओगी ॥
दौरानी और सासुओं को, करो आदर सहित सेवा।
इसी सेवा की मेवा से, वहाँ तुम प्रेम पाओगी ॥
पतिव्रता बनो, पतिदेव को हृदय में रखना तुम।
करो तन-मन से सेवा भी, शीघ्र भव पार जाओगी ॥
है अब तो तेरे हाथों में हमारी लाज अय सीते।

तू खुद गुणवान है बेटी, न 'दासी' को भुलाओगी ॥

दोहा—जनक राव ने सिया को, दिया दहेज अपार ।
आभूषण रत्नों जड़े, दीने बे शुम्मार ॥
हाथी घोड़े पालकी, दासी दास हजार ।
कहाँ तलक वर्णन करूँ, देखें सब नर-नार ॥
जनकपुरी से चल दिए, दशरथ विदा कराय ।
द्रव्य लुटाया बहुत सा, अवधपुरी में आय ॥

तर्ज—राधेश्याम

सब देख-देख हर्षाते हैं, सीता सी सुन्दर रानी को ।
त्रैलोक्य सुन्दरी आ पहुँची, सब देख थके पेशानी को ॥
यह कथा यहाँ ही छोड़ जरा, कुछ रथनुपुर का हाल सुनो ।
भामण्डल को नहीं चैन कहीं, उसके मनका अहवाल सुनो ॥
जब उसने सारा हाल सुना, सीता श्री राम से ब्याही गई ।
धनुषों की विषम परीक्षा में, श्रीराम लखन की विजय रही ॥
बैठा विमान में अवधपुरी को, और उड़ा बदला लेने ।
ले काम-मोह से भ्रष्ट बुद्धि, सीता को चला हरण करने ॥
मग के विदग्धपुर से, उड़ता विमान जब वह आता है ।
भामण्डल ने देखा पुर को, जाति स्मरण हो आता है ॥

दोहा—पहले भव इस नगर में, जो राजा था जान ।
कुण्डल मण्डित नाम को, खूब गया पहचान ॥

॥ चौबोला ॥

खूब गया पहचान,वह राजा मैं ही यहाँ पर रहता ।
यह सीता है बहन हमारी, जान पाप क्यों गहता ॥
फेर विमान वहीं से उल्टा, रथनुपुर को आया ।
पिता चन्द्रगति से आकर के, सारा हाल सुनाया ॥

❀ मैदान ❀

सुनके वैराग्य हुआ उनको, जाऊँगा दीक्षा ले वन को ।
अयोद्धया सब मिल आए ।
मुनी संघ जो वहाँ पे ठहरा, उनको गुरु बनाए ॥

दोहा—भामण्डल को तिलक कर, सौंप राज का भार ।
दीक्षा लीनी चन्द्रगति, होती जै-जै कार ॥

तर्ज—राधेश्याम

यह समाचार दशरथजी सुन, परिवार सहित वहाँ आते हैं ।
सीता भामण्डल भाई-बहिन मिलकर, मन हर्ष मनाते हैं ॥
मिथिलापुर से श्री राव जनक, रानी युत कौशलपुर आये ।
माँ-बाप पुत्र से मिल करके, हृदय में भारी हर्षाये ॥
एक मास अयोद्धा में रहकर, भामण्डल रथनुपुर आए ।
मिथिलेश कनक बना, पिता श्रीजनक राज को संग लाए ॥
दशरथजी को एक वृद्ध देखकर, उन्हीं दिनों वैराग्य हुआ ।
क्षण भर में जग के रागों से, मन में उनके नैराश्य हुआ ॥
अब श्रीराम को तिलक करो, दरबार बीच ऐलान किया ।

हमने तो दीक्षा लेने का, निर्णय निज मन में ठान लिया ॥

दोहा—राम देव को राज्य दे, जावें दीक्षा काज ।
यह संसार असार है, त्यागें इसको आज ॥

॥ तर्ज राधेश्याम ॥

सुनते ही मंत्री पुरवासी, सब मिलकर हर्ष मनाते हैं ।
श्रीरामचन्द्र के राज-तिलक का, सब मिल भारी ठाठ रचाते हैं ॥
सब देश विदेशों के राजा, उपहार लिये यहाँ आने लगे ।
सज गई अयोध्या दुलहन-सी, श्रीजिनकी पूजा रचाने लगे ॥

वार्ता:—उसी समय महलों में मंगल गान, श्रीराम का पंच-स्नान और सीता का शृंगार होने लगा ।

तर्ज—फिल्म नागन (मन डोले)

देखो री सखी, आई शुभ की घड़ी, छाई कैसी अजब बहार जी, आज हमारी नगरिया ।

अन्तरा:—श्रीराम के राजतिलक की, धूम मची है भारी ।
राजा बनेंगे युवराज हमारे, नाचो दे-दे तारी ॥
सखी री नाचो दे दे तारी,
सब मिल गाएँ सखीरी हर्ष मनाएँ, अरु झूम उठे नर नारी
कर में लेकर के बाँसुरिया....देखो री सखी....

सीता का शृंगार बनाओ, माथे बिंदिया लगाओ ।
मुतियन मांग भरो अब सजनी, हाथों में मेंहदी रचाओ ॥
सखी री हाथों में मेंहदी रचाओ ।

कैसी छवि है भली, जैसे साँचे में ढली ॥
सब सखियां मोहित आज री, देख सिया की सूरतिया।
देखो री सखी....
श्रीराम दरबार पधारे, देखे परजा सारी।
जैसे इन्द्र आए पृथ्वी पर, शोभा है अति भारी ॥
सखी री शोभा है अति भारी।
माथे मुकुट सजे, रवि बिम्ब लजे।
सब मोहित सुर-नर आज री, देख राम की मूरतिया।
देखो री सखी...
रत्न माल गल बीच बिराजे, कानन कुण्डल भारी।
कांधे धनुष, कर में भुज बन्धन, नीलाम्बर के धारी ॥
सखी री नीलाम्बर के धारी ॥
हर्षित हैं सभी, होवे तिलक अभी।
'दासी' को भी खुशी अपारजी, देख राम की सूरतिया ॥
देखो री सखी...
दोहा—दशरथजी के जब हुए, बन जाने के भाव।
उदासीन हुए भरत भी, ले मन दीक्षा चाव ॥
रानी कैकेई सोचती, अब क्या करूँ उपाय।
पति चले दीक्षा धरन, और पुत्र भी जाय ॥
तर्ज—राधेश्याम
बस उसी समय कुछ सोच, समझकर दशरथजी को बुलवाया।

वरदान दिया था राजा ने, उसकी बाबत कुछ बतलाया ॥
है याद हमें राजा बोले, तुम माँगलो जो इच्छा आए ।
हम को भी हर्ष हुआ भारी, इस ऋण से भी मुक्ति पाएँ ॥

(तब रानी कैकेई क्या कहती है ?)

दोहा—सुनो राव प्राणन पती, हो गया कौन कसूर ।
हमें छोड़कर जा रहे, आप बनों में दूर ॥

चौबोला

आप बनों में दूर जा रहे, हम कैसे धीरज धारें ।
आप रहो स्वामी कुछ दिन, हम तन, मन, सब ही वारें ॥
जाय आप के संग ही भरत भी, क्या विधना ने चाही ।
उसके लिए मैं राज मांगती, तड़पूं जल बिन माही ॥

मैदान

राज उसको मिल जाए जी, न फिर वो वन में जाए जी ।
फंसे जब राज काज में ।
तो कुछ दिन घर में रह जाए, यही मांगती आज मैं ॥

दोहा—राव कहें रानी सुनो, दिया भरत को राज ।
वचन तुम्हारा पूर्ण हो, अब तो सुधरे काज ॥

(वनवास)—चौबोला—

अब तो सुधरे काज तुम्हारे, हो गई है मन मानी ।
कोई राज करे मैंने तो दीक्षा की है ठानी ॥
अभी बुलाओ श्रीराम को यह संदेश सुनाऊँ ।
राज भरत को देकर के अभी मैं वन की सुरत लगाऊँ ॥

मैदान

जो होनी होकर रहती है, यही जिनवाणी कहती है।
देव भी हार गए हैं।
वे ही उतरें भवसागर से, जो मन मार गए हैं॥

गजल

बुलाकर राम को दशरथ ने सारा हाल बतलाया।
राज होगा भरत को ही ये सब कर्मों की ही माया॥
समय बीता बहुत मैंने, दिया था एक वचन बेटा।
तुम्हारी मात कैकेई को, तुम्हारा भाग्य था हेठा॥
धरोहर था धरा उसने, नहीं उस वक्त कुछ मांगा।
कर्म ने आज जो चाहा, भरत को राज है मांगा॥
अजब उलझन पड़ी मुझको, राज के तुम हो अधिकारी।
वचन पूरा करूँ 'दासी' पड़े ना झूठ का साया॥

दोहा—श्री राम ने सुन लिया, दशरथ जी से हाल।
कहन लगे हम जायँगे, दक्षिण दिश फिलहाल॥

तर्ज—राधेश्याम

हे पिता! न कुछ अफसोस करो, हम हर्ष सहित बन जायेंगे।
यदि रहे यहाँ पर, भाई भरत फिर राज नहीं कर पाएंगे॥
हे पिता हमें कुछ कष्ट नहीं, हम आप की आज्ञा पालेंगे।
नहीं झूठ वचन रघुवंशी का, सो आप भी कैसे टालेंगे॥
अब हर्ष सहित लघुभ्राता को, बस राजतिलक प्रभु कर दीजे।

सब माता इस की शरण रहें, और आप जाय दीक्षा लीजे ॥
इतना कहकर चल दिये राम, दशरथ को मूर्छा आई है।
हा कौन उदय ऐसा आया, बन जाएँ श्री रघुराई हैं॥
श्री राम गए कौशल्या पर, जाते ही शीस झुकाया है।
जो बातें पुत्र पिता में हुई, सारा ही हाल सुनाया है॥
सुनकर के माता तड़प उठी, गिर गई, मूर्छा आई है।
श्री राम ने माता सचेत करी, बेटे से यों बतलाई है॥
बेशक ले राज भरत बेटा, मुझ को कोई वह गैर नहीं।
पर तुम कैसे बन जाओगे, मेरे प्राणों की फिर खैर नहीं॥
जीवित-मुर्दे से बदतर हो, तुम बिन कैसे रह पाऊँगी।
बन जाओ, या नगरों में रहो, मैं संग तुम्हारे जाऊँगी॥
हे राम तुम्हारे बिन मुझ को, इक पलको आता चैन नहीं।
तुम बिन क्या प्राण रहें मेरे, दुःख बतलाने को बैन नहीं॥
सन्तोष करूँ कैसे बेटा, क्या इसी लिए ही पाला है।
अपराध किया क्या विधना का, हा किस विपदा में डाला है॥
दोहा—राम कहें माता मेरी, हृदय में धारो धीर।
दुख-सुख में समता गहें, सम्यक धारी वीर॥
मुझ को कोई संताप नहीं, मैं दक्षिण दिश को जाऊँगा।
स्थान वहाँ रहने को बना, फिर आप को लेने आऊँगा॥
यदि अब बन जाओ माता, तो बहुत ही दुःख उठाओगी।
कन्टक मय राहों पर, कैसे तुम पांव-पियादे जाओगी॥

सौगन्ध तुम्हारे चरणों की, यह वादा करके जाता हूँ ।
तुम को अवश्य बुलाऊँगा, पर अब तो नहीं ले जाता हूँ ॥
माता समझाई बार-बार फिर पास जानकी के आये ।
हे प्रिये ! विदा करिये अब तो हम कुछ दिनको बनमें जायें ॥

दोहा—स्तब्ध हुई श्री जानकी, सुना शब्द बनवास ।
रंग में भंग क्यों हो गया, तिलक न आया रास ॥

चौबोला

तिलक न आया राम प्रभु जी, हाल बताओ सारा ।
कौन खता पर बन को जाओ, हृदय है दुःखी हमारा ॥
आप यदि बन को जाओगे, संग में मैं भी जाऊँगी ।
बिना आपके दर्शन प्रभु जी, नहीं मैं भोजन पाऊँगी ॥

मैदान

करूँगी सेवा तुम्हारी जी, प्रार्थना यही हमारी जी ।
चरणों में शरण दीजिये ।
दया करो स्वामी मुझ को भी, संग में अपने लीजिये ॥

दोहा—बातें सुनकर सिया की, सोच श्री रघुवीर ।
सीता से कहने लगे, धरो हृदय में धीर ॥

तर्ज—राधेश्याम

माता कैकेई को एक वचन, किसी समय पिता ने दीना था ।
सो आज पिता से मांग लिया, जो वचन धरोहर कीना था ॥
श्री भरत भ्रातको राजतिलक हो, पिताने भी स्वीकार किया ।

वचनों के बन्धन में हैं बंधे, इसलिए नहीं इन्कार किया ॥
यदि मैं यहाँ पर रह जाऊँ प्रिये ! भाईका राज जमेगा नहीं।
मेरे होते लघुभ्राता को, राजा कोई भी गिनेगा नहीं ॥
दोहा—यदि यह है तो ठीक है, ये ही एक उपाय ।
लेकिन संग मैं भी चलूं, रहूँ एक पल नाय ॥
राम देव कहने लगे, सुनो प्रिये जी बात ।
आज्ञा लाओ मात से, तभी चलो मम साथ ॥

तर्ज—गजल

प्रिये धीरज धरो मन में, मात के पास अब जाओ ।
यदि आज्ञा मिले तुमको, तो फिर तैयार हो जाओ ॥
चली सीता सास के पास, और चरणों में जा बैठी ।
न मुख से बोल आता है,हृदय कहता है कह जाओ ॥
मात आज्ञा मुझे दीजे,कि मैं भी बन में संग जाऊं ।
दिखायेंगे कर्म क्या २ इन्हें आगे भी अजमाओ ॥
नहीं सेवा बनी कुछ आप की, यह दुःख है भारी ।
कृपा 'दासी' पै अब करना, दयालु आप कहलाओ ॥
दोहा—सुनकर सीता के वचन, माता हुई उदास ।
क्या तुम भी अब जाओगी,कौन रहे मम पास ॥

॥ तर्ज राधेश्याम ॥

अच्छा बेटी जाओ तुम भी, कुछ चिन्ता मेरी नहीं करना ।
हँसते रोते कट जाएगी, तुम सेवा स्वामी की करना ॥

आज्ञा पाकर जानकी उठी, चरणों में मस्तक नाया है।
आँखों से नीर हुआ जारी, दोनों ने रुदन मचाया है॥
दोहा—उधर लछमण ने सुना, राम चले बनवास।
शीघ्र पास आए तभी, होते बहुत उदास॥
ये पिता ने क्या अन्याय किया, जो राज भरत को दीना है।
हक़दार फिरे मारा-मारा, बन-बन में योंही छवि छीना है॥
क्या हम में है वीरत्व नहीं, जो राज नहीं ले पाएँगे।
है कौन खता बनवास दिया, श्रीराम न बन को जाएँगे॥
दोहा—राम कहें समझायकर, करो न कुछ अफ़सोस।
खता किसी भी नहीं, सब कर्मों का दोष॥
तब यही लछमण ने कहा, संग चलूँगा नाथ।
आप बिना जीवन मेरा, ज्यों दीपक बिन बाति॥
इतना कहकर श्री लखन, गये मात के पास।
राम संग बन जान की, की उनसे अरदास॥

तर्ज—राधेश्याम

बोली यह सुमित्रा मात तभी, मैं भी यह कहने वाली थी।
वह इकले बन को ना जावें, मैं तुम्हें भेजने वाली थी॥
जाओ बेटा श्री राम सिया, की सेवा तन मन से करना।
यदि क्रोध भी उनको आए कभी, तो मैल नहीं मनमें रखना॥
आज्ञा लेकर कौशल्या जी, के राज भवन में आए हैं।
चलने को दोनों भाइयों ने, हाथों में धनुष उठाए हैं॥

आशीर्वाद कौशल्या ने, हिचकी भर-भर के दीना है।
आगे हैं राम पीछे लछमण, और बीच सिया को लीना है॥
इन्द्राणी सम बनको जाती, नीचे को दृष्टि लगाई है।
माता के अन्तिम चरण छुए, नैनों में नीर भर लाई है॥
माताओं, पिताजी से मिलकर, फिर भरतजी को समझाया है।
कुछ दिन में वापस आजाएँ, तुम धैर्य धरो बतलाया है॥
जिस समय अयोध्या से निकले, लाखों नर-नारी संग में थे।
समझाते सब को बार-बार वह संग छोड़ नहीं जाते थे॥
दोहा—चैत्याला उद्यान में, वहीं किया विश्राम।
रात में सोते छोड़ कर, सब को चल दिए राम॥

खयाल

सीता राम लखन के संग में, धीरे २ जाती है।
पवन समान चलें दोनों, पर कुछ नहीं पार बसाती है॥

अन्तरा—

प्रजा सब पीछे ही आई, सोते छोड़ चले आए।
धन्यवाद सीता का कीना, इसके कारण मिल पाए॥
चलते २ एक अगम नदी, जलका पार न पाया है।
उतरे राम लखन जल में, सीता का हाथ थमाया है॥
जिस समय नदी में उतरे हैं, पानी का वेग कम होता है।
है पुन्य प्रबल इनका साथी, जो जल भी मारग देता है॥
सब नर-नारी पुकार उठे, हम को भी संग में ले लीजे।

राम कहें जाओ भाई, मन भरत की सेवा में दीजे ॥
लाचार हुए बहु रुदन किया, कुछ लौट के घर को आए हैं।
कुछ ने दिया संसार त्याग, कुछ ब्रह्मचारी बन पाए हैं ॥
दोहा—इधर कौशल्या, सुमित्रा दुखित, रात दिन रोय।
भरत देख व्याकुल हुए, केकई धीरज खोय ॥

तर्ज—राधेश्याम

केकेई कहती अय बेटा भरत, श्रीराम को वापस ले आओ।
मैं भी आती हूँ पीछे ही, दोनों माताओं को ले जाओ ॥
सुनते ही चल दिए भरत बनों को, प्रजा सारी संग चली।
माताऐं भी सब हर्ष सहित, पीछे जाती लगती हैं भली ॥
उस नदी पै आकर तरह २ के बेड़े बांध बनाए हैं।
उन पर होकर के संग-सहित, श्री भरत पार हो पाए हैं ॥
जो मिले उसी से पूछते हैं, श्रीराम किधर को पधारे हैं।
सब राह बताते जाते थे, सब ही के राम दुलारे हैं ॥
जब दूर से देखा तीनों को, तो भरत धैर्य को खो बैठे।
जाकर के गिरे चरणों में, और रोते २ यूँ कह बैठे ॥
या तो मैं भी बन में रहूँ, या संग तुम्हें ले जाऊँगा।
नहीं चैन एक पलको है मुझे, तुम्हें छोड़ कहाँ सुख पाऊँगा ॥
इतने में माताऐं आईं, सब मिलकर रुदन मचाने लगीं।
मैं पापिन बड़ी अभागिन हूँ, केकेई ऐसे पछताने लगी ॥
अब वापस राम चलोघरको, नहीं तुम बिन शोभा राजकी है।

अब क्षमा करो मुझको बेटा, अब चिन्ता तुम्हारे ताज की है ॥
श्रीराम ने उठकर कैकेई के, चरणों में मस्तक नाया है ।
हे माता क्षमा मांग के क्यों, बेटे को पाप लगाया है ॥
मैं तो चरणों का सेवक हूँ, बालक पर कृपा करो माता ।
वचनों की रक्षा करनी है, आदेश पिता का है माता ॥
वहाँ राज पिताने भरतको दिया, यहां मैं भी तिलक कर-देता हूँ ।
अब राज करो कुछ दिन भाई, यह आज्ञा तुमको देता हूं ॥
कुछ अवधि बीते आऊँगा, यह सत्य वचन मानो भ्राता ।
सेवा तन मन से कर लीजे, तुम पै छोड़ी तीनों माता ॥
ऐसे समझाकर भरत और, माताओं को वापस कीना ।
वह दुखित हृदय लेकर आए, और राज भरत ने आ लीना ॥
पर हृदय राज में लगता नहीं, तन मन वैराग्य समाया रहे ।
किस दिन दीक्षा धारण मैं करूँ, बस ये ही ध्यान लगाय रहे ॥
जिस दिन वापस दोनों भाई, हां अवधपुरी में आएंगे ।
यह अटल प्रतिज्ञा है मेरी, हम शीघ्र ही वन को जाएंगे ॥
यह कथा यहाँ ही छोड़के अब, श्रीराम का हाल सुनाना है ।
वन विहार का हिस्सा दूसरा, 'दासी' को लिखकर गाना है ॥

खण्ड द्वितीय

(श्रीमहावीर कीर्तन)

जय श्री महावीर स्वामी, तेरी जय श्री महावीर स्वामी ।

भक्तों के दुख हरने वाले, दीन अनाथों के रखवाले।
जय हो अन्तरयामी ! तेरी जय श्री महावीर स्वामी ॥ १
आतम ज्ञान सिखाने वाले, मुक्ति की राह बताने वाले।
जय हो वीर निष्कामी ! तेरी जय श्री महावीर स्वामी ॥२
राग और द्वेष मिटाने वाले, प्रेम का पाठ पढ़ाने वाले।
जय शिवपुर विश्रामी ! तेरी जय श्री महावीर स्वामी ॥३
अग्नि में कमल खिलाने वाले, द्रौपदी चीर बढ़ाने वाले।
तुम हो जग में नामी ! तेरी जय श्री महावीर स्वामी ॥४
भव से पार लगाने वाले, 'दासी' का दुख हरने वाले।
शिव रमणी के स्वामी ! तेरी जय श्री महावीर स्वामी ॥५

दोहा—सबको देकर के विदा, चले श्री रघुवीर ।
तापस भी मोहित हुये, लख दोऊ रणधीर ॥

तर्ज—राधेश्याम

पशु पक्षी तक मोहित होते, लख सुन्दरता बलवीरों की।
वीरों का वेश है मनमोहन, और आन शान गम्भीरोंकी ॥
त्रैलोक्य सुन्दरी सीता को, वन बीच तपस्वनी देखती हैं।
यह नागकुँवरि या यक्षकुँवरि, इन्द्राणी है ? यह सोचती हैं॥

दोहा—आ सीता से पूँछती, वन वासिन सब नारि ।
कौन कहाँ से आ रही, हे सुन्दरि सुकुमारि ॥

गाना

तुम कौन हो देवी, सुन्दरि राज कुमारी ।

चन्द्रमुखी मृदु कोकिल बैनी, गज गामिनि मतवारी ॥
नैन कमल, नख शिख युत, सुन्दर क्या हो सुरपति नारी।
स्वर्ण-वर्ण और नील-वर्ण, यह बलशाली धनु धारी ॥
दोनों कौन तुम्हारे संग में, वीर वेश के धारी।
तुम कौन हो देवी, सुन्दरि राज कुमारी ॥
सिया रहें कहीं मौन, कहीं उत्तर दे जाती हैं।
प्रेम भरे आग्रह को उनके, टाल न पाती हैं ॥
है मम नाम जानकी, राजा जनक दुलारी हूँ।
स्वर्ण-वर्ण सुन्दर मन, मोहन, इनकी नारी हूँ ॥
ये अवधेश्वर पिता वचन, प्रतिपालक, वन आये।
संग श्री लखनलाललघु, भ्राता सेवक वन आये ॥
नील कमल सम वर्ण ये, नारायण अवतारी हैं।
सिया रहे कहीं मौन, कहीं उत्तर दे जाती हैं ॥

तर्ज—राधेश्याम

जहाँ भी जाते हैं यह तीनों,वहाँ पर ही आदर होता है।
कोई कुटी बनाकर रखता है,कोई मीठे फल चुन लाता है ॥
कोई कहे राम अब यहीं रहो, आगे वन भीम भयंकर है।
है चित्रकूट नामक पर्वत, पशुओं का भी रहता डर है ॥
इतना बीहड़, दिनधोली भी, रहता है वहाँ पर अन्धकार।
सीता सी सुकुमारी ले कर है, उसे लांघना दुर्निवार ॥
हे स्वामी आगे मत जायें, नहीं कष्ट अनेकों पायेंगे।

कहते समझाकर राम उन्हें, टिक एक जगह ना पायेंगे ॥
वन, वनवासी, वन घूम-घूम, आगे दक्षिण पथ जाना है ।
पुरुषार्थ भरोसे हैं हम तो, क्या कष्टों से घबराना है ॥
दोहा—नहीं सुनी रघुवीर ने, बढ़े बराबर जांय ।
सिया संग धीरे चले, देश मालवे आंय ॥

तर्ज—राधेश्याम

श्री राम लखन सीता चलकर, अब देश मालवे आए हैं ।
वन उपवन नगर विशाल अति, पर सब उजाड़ दिखलाए हैं ॥
श्री राम कहें हे लखन जरा, इक वृक्ष पै चढ़कर देखो तो ।
क्यों मनुष्य नहीं यहाँ रहते, क्या बात है खोज लगाओ तो ॥
लक्ष्मण कदम्ब पर चढ़ करके, चारों ही ओर निहार रहे ।
कुछ दूर दरिद्री मनुष्य दिखा, उसको ही आप पुकार रहे ॥
वह डरते-डरते जब आया, श्रीराम पास ले आते हैं ।
घबराये हुए दीन जन को, तब राम धैर्य दिलवाते हैं ॥
दोहा—पूछे उससे राम, क्यों है यह नगर उजाड़ ।
निर्जनता छाई यहां, खड़े झाड़-झंखाड़ ॥

चौबोला

खड़े झाड़ झंखाड़, हमें सब सच्चा हाल सुनाओ ।
नगरी के निर्जन होने का, भेद सभी बतलाओ ॥
घबरा कर वह मनुज कहे, आई ज्यों विपदा भारी ।
वज्रकरण और सिंहोदर की, कथा सुनाऊं सारी ॥

मैदान—

उज्जैनी नगर का राजा जी, सिंहोदर अति बलसाजा जी।
है सेवक वज्रकरण भी,
अटल प्रतिज्ञा धारी उसने, विनशे सब काजा जी॥

दोहा—देव शास्त्र गुरु जैन के, उनको ही शीस झुकाय।
सिंहोदर दरबार में, नमन वह करता नाय॥
जिन मूरति की मुद्रिका, पहने है कर माहिं।
नमन उसी को वह करे, शत्रु चुगली खाय॥

तर्ज—राधेश्याम

सुन सिंहोदर आदेश दिया, और वज्रकर्ण को बुलवाया।
एक साधर्मी जन ने आकर, सब वज्रकर्ण को बतलाया॥
वहाँ न जाइयेगा स्वामी, प्राण बचा नहीं पाओगे।
यदि जाओगे उज्जैन बीच, तो नहीं लौट कर आओगे॥
निश्चय जानी जब वज्रकर्ण, तो गढ़ के अन्दर जाय रहे।
नगरी के चारों दर्वाजे बन्द करके,पहरे वहाँ बिठाय दिए॥
सिंहोदर ने सेना लाकर, गढ़ चारों ओर से घेर लिया।
कोई आने-जाने पाए नहीं, पहरा अपना बिठलाय दिया॥
सब नगर ग्राम करके उजाड़, कुछ लूट लिए कुछ जला दिए।
इस ही कारण सब नर नारी,निज जान बचाकर भाग लिए॥
मैं हूँ अति दीन गरीब प्रभु, नारी ने लड़ कर भेजा है।
कुछ गिरी पड़ी वस्तु लाऊँ, पर जाते धड़के कलेजा है॥

सुन सर्व कथा श्रीरामजी ने, बहुमूल्य रत्न का हार दिया।
वह हर्ष सहित कर नमस्कार, वहां से घर वापिस लौट लिया॥
दोहा—कहा राम ने नगर में, जाओ लक्ष्मण वीर।
प्यासी है व्याकुल सिया, लाओ थोड़ा नीर॥

तर्ज—गजल

चले लक्ष्मण तो आगे, सिंहोदर सेना पड़ी भारी।
यह निर्भय जा रहे रोके, नहीं देखे जो बल धारी॥
गए वज्रकर्ण के गढ़ में, तो पहरेदार बतलाये।
सुनो स्वामी कोई यहाँ इन्द्र या नागेन्द्र हैं आए॥
कहा वज्रकर्ण सेवक से, उन्हें जाकर बुला लाओ।
मैंने भी दूर से देखे, बड़ा आश्चर्य है आओ॥
दोहा—सेवक जाकर लखन के, झुका सामने जाय।
स्वामी चलिए आपको, गृहपति रहे बुलाय॥

तर्ज—राधेश्याम

यह सुनकर लक्ष्मण चल दीने, वज्रकर्ण निकट जब आये हैं।
कहा वज्रकर्ण भोजन करिये, बड़े भाग्य से दर्शन पाये हैं॥
तब बोले लक्ष्मण नगरी के, बाहर जो इक चैत्याला है।
वहाँ भाई-भावज ठहर रहे, उन बिन नहीं भोजन पाना है॥
तब इक सेवक सब खाने की, सामग्री देकर साथ किया।
श्रीराम-लखन सीताजी ने, मिल करके भोजन पान किया॥
आदेश श्री रघुवर ने दिया, सिंहोदर पर अब जाना है।

सम्यग्दृष्टि है वज्रकर्ण, उसका परिताप मिटाना है ॥
भाई का सुन आदेश, श्री लक्ष्मण ने धनुष उठाया है ।
कर के भाई को नमस्कार, वह सैन्य कटक में आया है ॥

दोहा—द्वारपाल से यों कही, सिंहोदर पै जाय ।
कहो भरत के दूत हैं, खास संदेशा लाँय ॥

तर्ज—राधेश्याम

प्रहरी राजा की आज्ञा पा, लक्ष्मण जी को ले जाता है ।
यह निर्भय होकर जाय रहे, ज्यों सिंह वनी में जाता है ॥
नहीं जाकर नमस्कार कीना, जल भुनकर राजा खाक हुए ।
और कहा लखन से तुम जैसे, क्यों अवधेश्वर के दास हुए ॥
कहो अवधपुरी में तुम जैसे, कितने उजड्ड सेवक रहते ।
नहीं विनय नमन करना जाने, नहीं चरणस्वामि के हैं गहते ॥
वाणी सुन लक्ष्मण गर्ज उठे, 'ये ही बतलाने आया हूँ ।'
मिथ्याती, निर्दयी, पापी को, कुछ पाठ पढ़ाने आया हूँ ॥
सेवक जो वज्रकरण तेरा, सम्यग्दृष्टि, श्रद्धानी है ।
क्यों उसे मारना चाहता है, करता अपनी मन मानी है ॥
तू क्या मारेगा वज्रकर्ण को, खुद ही मारा जायेगा ।
देखूँगा मेरे बाणों से, तू कैसे प्राण बचायेगा ॥

आल्हा

इतनी सुनकर सिंहोदर के, तन में अगनि सी लग जाय ।
मारो मारो अभी पकड़ लो, जीवित बच कर जावे नाय ॥

चारों तरफ़ से घेरा डाला, राजा हाथी पर चढ़ जाय ।
क्रोध में भर कर लक्ष्मणजी ने, गज का थंब उखाड़ा जाय ॥
चारों ओर से शस्त्र बरस रहे, सब को मारा-मार सुहाय ।
इकले लक्ष्मण जी के डर से, कोई पड़े सामने नाय ॥
राजा लगा पास में आकर, बाणन वर्षा रहा कराय ।
उछल चढ़े हाथी पर लक्ष्मण, केश पकड़ के लिया गिराय ॥
बाँध ले चले सिंहोदर को, रानी गिरी पछाड़ें खाय ।
हाथ जोड़ चरणों में गिरकर, लक्ष्मणजी से वचन सुनाय ॥
कृपा करो छोड़ो बालम को, वरना मरें कटारी खाय ।
इनके बदले हमें बाँधलो, जिन्दा गुण भूलेंगी नाय ॥
लक्ष्मण बोले सुनो देवियो, इन को ऐसे ही ले जांय ।
पहुंच चैत्य पर ही सौंपेंगे, अपने भाई को हम जाय ॥
इतने रोना वृथा तुम्हारा, उन से तुम करना अरदास ।
दयासिन्धु हैं भ्रात हमारे, पूरी करें तुम्हारी आस ॥

गजल

सभी चल करके वहाँ आए, जहाँ श्रीराम बैठे थे ।
बढ़े लक्ष्मण खड़े आगे, शीस चरणों नवाते थे ॥
कहा भाई सिंहोदर को, तुम्हारे पास लाया हूँ ।
हुआ है युद्ध वहां भारी, विजय पा करके आया हूँ ॥
पड़ा चरणों में सिंहोदर, गिरी चरणों में रानी भी ।
क्षमा कर दीजिए स्वामी, मैं अपराधी कहाया हूँ ॥

बुलाया वज्रकर्ण को भी, कहा श्रीराम ने उस से ।
कहो क्या दें सजा इसको, इसी कारण बुलाया है ॥

दोहा—वज्रकर्ण कहने लगा, होकर के गम्भीर ।
यह स्वामी होते मेरे, क्षमा करो रघुवीर ॥

चौबोला

क्षमा करो रघुवीर, दया ही धर्म मुख्य मैं जानूं ।
नहीं सताऊं किसी जीव को, इनसे बैर न मानूं ॥
दोनों में करवाई मित्रता, राज बांट दिया आधा ।
सैना, सम्पति, अर्थ, कोष भी, सब में हो गया साझा ॥

मैदान

राम कृपा से दोनों में, मित्रता मन के कोनों में ।
बढ़ी इकदम है भाई ।
वज्रकर्ण और सिंहोदर को, मित्र किए रघुराई ॥

दोहा—वज्रकर्ण और सिंहोदर, प्रीत बढ़ावन आज ।
कन्या लाये तीन सौ, लक्ष्मण जी के काज ॥

तर्ज—राधेश्याम

हे स्वामी इनको परणा कर, चिन्ता मम आज मिटा दीजे ।
हम सेवक सेवा कुछ न बने, दासियों में इनको रख लीजे ॥
कहें राम ये हमारी हुई, पर ब्याह अभी हो सकता नहीं ।
अभी रहने का स्थान बनाना है, हमको जाकर के और कहीं ॥
माता को लेने जाना है, तब विवाह कर ले जायेंगे ।

अब तो हमको कर दीजे विदा, हम शीघ्र लौट कर आयेंगे ॥
सम्यकदृष्टि है वज्रकरण, मन देख के हर्षित होता है।
मुझे देखके भी मस्तक न झुका, आश्चर्य बड़ा ही होता है ॥
दोहा—सीता सब को छोड़ कर, किया रात्रि प्रस्थान।
नल कूबर एक नगर में, पहुँच किया विश्राम ॥

तर्ज—राधेश्याम

स्वर्णिम प्रभात में लखन लाल, पहुंचे एक श्याम सरोवर पर।
उस नगरी का जो राजकुँवर, वह आया उसी सरोवर पर ॥
लक्ष्मण पै मोहित होकर के, सेवक से उनको बुलवाया।
फिर हाथ पकड़ निज महलों में, लाकर के उनको बिठलाया ॥
तब लक्ष्मणजी ने राम सियाको, वहाँ पर ही बुलवाय लिया।
फिर सब को बाहर भेज कुंवर ने, एक अचरज का काम किया ॥
नारी का रूप बना करके, वह सीता के पास चला आया।
श्रीराम ने तब उससे पूछा, यह है कैसी छलना माया ॥
दोहा—इतनी सुन कहने लगी, सुनिये दीन दयाल।
मुझ अभागनी का प्रभु, सबही सच्चा हाल ॥

तर्ज—राधेश्याम

मैं बालखिल्य की कन्या हूँ, और जिन शासन अनुगामी हूँ।
मम पिता म्लेच्छ के बन्दी हैं, बस इतना ही मैं ज़ानूं हूँ ॥
सिंहोदर पिता के स्वामी हैं, जब पिता को बंदी सुन लीना।
मैं गर्भ में थी उस समय तभी, यह हुक्म राव ने दे दीना ॥

यदि राजा के पुत्री होगी, लावारिस राज हमारा है।
यदि पुत्र हुआ तुम भाग से तो, बेशक अधिकार तुम्हारा है॥
जिस समय हुई, मंत्री माता ने मिलकर के यह कार्य किया।
नहीं भेद दिया और राजकुमर, सारी पृथ्वी पे प्रकट किया॥
है नाम मेरा श्री कल्याणी, अब तो कल्याण कुमर कहते।
यह भेद नहीं जाने कोई, सब राजकुमार मुझे कहते॥
दिन रात पिता की चिन्ता में, मां-बेटी दोनों शोक करें।
क्या कभी हमें दर्शन होंगे, यह लिये आश मन मोद करें॥
इतना कह कर बहु रुदन किया, गिर पड़ी मूर्छा खाकर के।
हृदय में करुणा भर आई, सीता ने उठाया जाकर के॥
श्री राम कहें अब कुछ दिन को, अय देवी तुम सन्तोष करो।
जब कर्मोंकी गति जानती हो, फिर क्यों इतना अफ़सोस करो॥
लच्मण ने कहा कुछेक दिन में, तुम पिता छूट कर आयेंगे।
हम म्लेचपती से लड़ने को, अब शीघ्र यहां से जायेंगे॥
दो तीन रोज तो गुजर गए, बस इसी तरह मेहमानी में।
फिर रात कोही उठ चल दीने, वह म्लेच्छों की रजधानी में॥
विंध्याचल की अटवी में ही, म्लेच्छों का राजा रहता था।
सेना उसकी इतनी भारी, कोई जीत उसे नहीं सकता था॥
श्रीराम लखन वहां पहुंच गए, दोनों ने धनुष चढ़ाये हैं।
टंकार सुनी जब राजा ने, ले सैन्य युद्ध को आये हैं॥

दोहा—राम लखन के बाण से, मच गया हा हा कार ।
कुछ घण्टे बीते नहीं, पकड़ लिया सरदार ॥

चौबोला

पकड़ लिया सरदार काल सन्मुख होकर के गाजा ।
चरणों में गिर कहे म्लेच्छपति, क्षमा करो महाराजा ॥
राम कहे अय पापी तुमने, राजा बहुत सताए ।
जनता लूटी नगर उजाड़े, जरा दया नहीं लाए ॥

मैदान

बाल-खिल्य को अब छोड़ो जी, पाप से सब मुंह मोड़ो जी ।
वीर की शरण में जाओ ।
आईन्दा जो करोगे ऐसा, फिर पीछे पछताओ ॥

दोहा— म्लेच्छपति कहने लगा, मुझे सभी मंजूर ।
वीर शरण लूंगा प्रभु, रहूँ पाप से दूर ॥

तर्ज—राधेश्याम

फिर बालखिल्य को करा मुक्त, रघुवीर पास ले आए हैं ।
स्नान करा वस्त्राभूषण सुन्दर सुन्दर पहनाए हैं ॥
सब जनता और जनितपति ने श्रीजैनधर्म स्वीकार किया ।
कर राजा का सन्मान राम ने प्रेम से उनको विदा किया ॥
जब नगरी के बाहर पहुंचे, स्वागत को राजकुंवर आया ।
सब हाल राव ने सुन करके, श्रीराम लखन का यश गाया ॥
और उधर राम-सिय वहां से चल, इक नगरी के बाहर आए ।

श्री सीताजी को प्यास लगी, इक ब्राह्मण के द्वारे आए ॥
था कपिल नाम उस ब्राह्मण का, निर्दयी, क्रोधी, दारिद्री था ।
लेकिन उसकी पत्नि का मन, अतिथि सेवा से गर्वित था ॥
इन तीनों को ठहराय दिया, उस ब्राह्मणी ने यज्ञशाला में ।
शीतल जल पिला कहा उसने, भोजन भी बनाऊं आला मैं ॥
इतने में कपिल ने आकर के, वहाँ हा-हाकार मचाया है ।
मेरी यज्ञशाला में पापिन, किस किस को ला ठहराया है ॥
तीनों से कहा अभी जाओ, नहीं यहाँ से मार निकालूंगा ।
था काम कौन यहाँ आने का, जो मैं मन को समझालूंगा ॥
नर-नारी बहुत इकट्ठे हुए, सब कपिल को बुरा बताते हैं ।
क्या छीन लिया पापी तेरा, मिल करके सभी समझाते हैं ॥
कहा कपिल ने ले जाओ इनको, अपने घर में ठहरा लेना ।
लक्ष्मण को क्रोध चढ़ा भारी, श्रीराम कहें, कुछ मत कहना ॥
सीता जी उठ कर कहने लगीं, इससे तो वन ही अच्छा है ।
दुर्जन के संग से तो स्वामी, जीवन से मरण ही अच्छा है ॥

सोहनी

चल दिए तीनों वहाँ से, बन में पहुँचे आन के ।
एक वट के वृक्ष नीचे, सो रहे कुछ जान के ॥
इतने में उस वट का स्वामी, यक्ष जो रहता वहां ।
सोचता यह इन्द्र या नागेन्द्र आए हैं यहाँ ॥
हैं बड़े तेजस्वी, इनके तेज के प्रताप से ।

जा नहीं सकता मैं वट पै, सोचता हूँ आप से ॥
यक्ष अपने स्वामी से, जाकर के यह कहने लगा।
क्या करूं, अब यत्न रहने का बता दीजे जरा ॥
दोहा—यक्षाधिपति ने सुना, जब सारा अहवाल ।
अवधिज्ञान से जानकर, आन झुकाया भाल ॥

तर्ज—राधेश्याम

बलभद्र नरायण आये हैं, यह यक्षपति ने जाना है ।
एक रची अयोध्या सम नगरी, शय्या पर उन्हें सुलाना है ॥
नौकर चाकर भी अवध जैसे, नगरी को रामपुरी कहते ।
सब रात रात में निरमाणी, सुबह होते राम-चरण गहते ॥
रघुवर ने जाना यक्ष ने ही, यह सारे ठाठ रचाए हैं ।
अचरज नहीं कोई हुआ उनको, मन तो विशाल ही पाए हैं ॥
एक रोज कपिल ब्राह्मण वन में लकड़ी लेने को आया है ।
नगरी देखी तो सोच रहा, क्या स्वर्गपुरी की माया है ॥
दोहा—एक यक्षणी सुन्दरी, बैठी वहां पर आन ।
उससे पूछा जाय कर, ये सब कैसी शान ॥

तर्ज—राधेश्याम

यह रामपुरी यहाँ रामदेव, लक्ष्मण भ्राता भी साथ में हैं ।
वह राजा यहाँ के हैं भारी, धनसम्पत्ति सब कुछ हाथ में है ॥
सीता सी सुन्दर रानी हैं, देवांगना देख लजाती हैं ।
तीनों की अद्भुत ज्योति है, कुछ कहने में नहीं आती है ॥

वह ही उन से मिल सकता है,जो जैन धर्म का धारी हो।
प्रवेश उसी का नगर में हो, नमोकार मंत्र उच्चारी हो ॥
फिर धन भी इतना देते हैं, राजा सम वह बन जाता है।
प्रतिपाल करें तन मन धन से,जो शरण में उनकी आता है ॥

तर्ज-(इन्द्र सभा) अरे लाल देव

यह सुन के कपिल सोचता रह गया,
मैं श्रावक बनूं, मन में यह आगया ॥
उसी बन में आगे मुनि मिल गए।
सुना धर्म, हृदय में जो छागया ॥
बड़े पाप मैंने किए आज तक,
नर्क का ही सामां मेरे हो गया ॥
पुरुषोत्तम मेरे घर पे जो आए थे।
न सन्मान कीना मैं, क्या हो गया ॥
कहे दुर्वचन और निकाला उन्हें,
यह पछतावा हृदय मेरे रह गया ॥

दोहा—जाय ब्राह्मणी से कही, मन की सारी बात।
श्रावक व्रत दिलवा दिए,उसको भी परभात ॥

तर्ज—राधेश्याम

फिर दोनों रामपुरी आए, यक्षों ने माया फैलाई।
कहीं अजगर शेर दिखाई पड़े, कहीं नाचे व्यंतर मायाई ॥
णमोकार मंत्र उच्चारण से, वह माया लुप्त हुई सारी।

जिन मंदिर देखे आलीशान, श्रीराम महल देखा भारी ॥
फिर सामने ही लक्ष्मण को देख,वह भयसे थर२ कांप गया।
और छोड़ ब्राह्मणी को वहाँपर,वह शीघ्र ही पीछे भाग गया॥
हँस कर लक्ष्मण बोले भाई, ब्राह्मण मिलने को आया है।
मुझको देखा तो भाग गया,भय उसके हृदय समाया है ॥
रघुवर ने कहा,ले आओ उसे,अब धैर्य दिलासा दे करके।
अवगुण पर गुण हम करते हैं,सन्मान करें धन दे करके॥
सेवक दो चार झपट करके,ब्राह्मण को वहाँ पर लाते हैं।
थर २ कांपे और बोले नहीं, रघुवीर बहुत समझाते हैं॥
चरणों में गिरके क्षमा मांगे,अपमान किया स्वामी भारी।
मैं पश्चाताप में जलता हूँ, कर्मों ने क्या मत थी मारी॥
रघुवर ने कहा चिन्ता ना करो,जो होनी हो सो होती है।
धन ले जाओ चाहे जितना,हीरा,पन्ना और मोती है॥
दोहा—राम कृपा से बन धनिक, ऊँचे महल बनाय।
मन में आई न शान्ति,त्याग ही हृदय समाय॥
उत्तम पुरुषों का किया, मैंने जो अपमान।
दीक्षा लेने से मिटे, मन में हो गया ज्ञान॥
सोच समझ कर चल दिया, दीक्षा लेने भोर।
पंच महाव्रत धार के, काटे कर्म झकोर॥
और उधर चौमास समाप्त हुआ,श्रीराम ने चलने की ठानी।
यक्षों ने कहा क्या भूल हुई, सेवा न हुई क्या मन-मानी॥

श्रीराम कहें यह बात नहीं, तुमने तो मन हर लीना है।
पर आगे जाना है माई, निश्चय यह ही कर लीना है॥
एक स्वयं-प्रभा था हार दिया, उपहार में यक्ष ने रघुवर को।
दो कुण्डल लक्ष्मण को दीने, चूड़ामणि सीता के कर को॥
चल दिए राम, लक्ष्मण सीता, और यक्षों ने गुण गाया है।
आगे चल कर के विजय नगर, के वन में आसन लाया है॥
वहां का राजा था पृथ्वीधर, इन्द्राणी रानी कहलाती।
देवी सम पुत्री वनमाला, पद्मनी रूपसी, मदमाती॥
बचपन से ही वह लक्ष्मण के, गुण सुन-सुनकर अनुरागी थी।
हृदय से पति मानती थी, उन ही से तो लौ लागी थी॥

दोहा—पृथ्वीधर ने सुन लिया, राम लखन वनवास।
पुत्री विवाह के कारणे, करवाई तालाश॥

चौबोला

करवाई तालाश मिले नहीं, वर ढूँढा है दूजा।
प्राण त्याग दूँ वनमाला को, ये उपाय है सूझा॥
दिन भर तो उपवास किया, फिर शाम को मता उपाया।
वन यात्रा को जाऊँगी मैं, माता को बतलाया॥

मैदान—

सहेली संग साथ में जी। बनाऊँ लखन नाथ मैं जी॥
प्राण तो मेरे हाथ में।
पालकी सजकर वन में आई, कुछ सेवक थे साथ में॥

दोहा—सब ने बन में आनके, डेरे दिए लगाय।
रात्रि जागरन भी किया, मंगलगान कराय ॥
अर्धरात्रि के समय में, सो गए पहरेदार।
गमन कुमारी ने किया, फांसी फन्द विचार ॥

लक्ष्मण भी उस ही बन में थे, सिया राम का पहरे देय रहे।
यह कौन कहाँ को जाती है, मन ही मन ऐसा सोच रहे ॥
सोचा कोई विपदामारी, आतम हत्या करने आई।
देखूं छिप कर क्या करती है, पीछे चलने की ठहराई ॥
छिप गए वृक्ष पीछे जाकर, चुपचाप खड़े इक ओर हुए।
वनमाला भी वहां पर पहुंची, इक डोर हाथ में लिए हुए ॥
उस वृक्ष की शाखा में जाकर, उसने रस्सी लटकाई है।
और कहती है उस वृक्ष से क्या, सुनलीजे ध्यान लगाई है ॥

तर्ज़:—ग़म का फ़साना किस को सुनाएँ

शादी मेरी लक्ष्मण जी से होती। ओ ऽ ओ ऽ ओ ऽ
तो! आज क्यों नैना भर के रोती। शादी मेरी……।

॥१॥

मैं बालपन में ही गुण सुने थे, पति हृदयमे ही चुन लिए थे।
तड़प रहा है ये मनका मोती। ओ, ओ, ओ, शादी…. ॥

॥२॥

पिता ने मेरे यह क्या विचारी, जो और मंगना कीनी हमारी।
नहीं कभी निद्रा भरके सोती। ओ, ओ, ओ। शादी… ॥

॥३॥

ए वनके वृक्षों फ़रियाद सुनना, लखन जो आएँ कभीतोकहना।
विरह में उनके ही फाँसी खाती। ओ ओ ओ। शादी....॥

॥४॥

पति उन्हें दिलसे मान लीना, उनके बिना है बेकार जीना।
'दासी' भी लिख लिख करके सुनाती। ओ ओ ओ। शादी ...॥

दोहा—लक्ष्मण जी ने जब सुने, प्रीत रीत के बैन।
हृदय भर आया तभी, सजल हो गये नैन॥
सोचना भी है ये बुरा पाप है आतम घात।
प्रकट होय कहने लगे, सुनो सुन्दरी बात॥

धुन—वैराग्य के रंग में रंग दे

वनमाला से बोले लक्ष्मण, सुन लीजे राज दुलारी।
क्यों करती आतमघात, पाप यह होगा अय सुकुमारी॥

॥१॥

आगई है शुभ घड़ी विधि ने मिलाया आन के।
गर नहीं मिलती मुझे, तो प्राण जाते जान के॥
तुम हो पतिव्रता सति, चिन्ता न अब कुछ कीजिये।
साथ चलिये अब मेरे, रस्सी भी मुझ को दीजिये॥

अब करलो हम से बात सुन्दरी, हृदय बुरी विचारी।
वनमाला से बोले लक्ष्मण, सुन लीजे राजदुलारी॥

॥२॥

देखलो आंखें उठा कर, लक्ष्मण हूँ या नहीं।
दे दिया बचपन में मन, हम को खबर कुछ भी नहीं॥
भाई हैं गुणवान मेरे, और भाभी भी यहीं।
विश्वास जो तुमको न हो, वह हाल बतलावें सही॥
अवधेश पति श्रीराम संग में आई जनक दुलारी।
वनमाला से बोले लक्ष्मण, सुन लीजो राजदुलारी॥

॥३॥

नींद से उठ पूछते रघुवर, लखन कहाँ पर गए।
वह उधर से आ रहे, दोनों हृदय हर्षित लिए॥
कह उठीं सीता, है लक्ष्मण चन्द्र सम शोभा धरे।
साथ उनके जो कुमारी, चन्द्रिका उससे परे॥
'दासी'ने सुनाया हाल,मरण से बच गई राजकुमारी॥
वनमाला से बोले लक्ष्मण, सुन लीजे राजदुलारी॥

दोहा—उधर सखी जागी सभी, जाग उठे दरबान।
वनमाला कहीं पर नहीं, बिगड़ गए औसान॥

तर्ज—राधेश्याम

शैया को खाली देख, निवेदन जा राजा से कीना है।
क्या बेसुधि होकर सोए थे,निद्रा ने नाश कर दीना है।
कह कर गर्जे राजा, भेजो चहुं ओर खोज करने सैनिक॥
वन में सीता के पास विराजी, वनमाला देखी, सैनिक।

पृथ्वीधर को जा खबर करी, जो खबर वहां से पाई थी ॥
श्री लखनलाल ने किस प्रकार, कुंवरी की जान बचाई थी ।
परिवार सहित राजा आकर, चारों को लेकर जाते हैं ॥
महलों में पहुँचा कर इन को, सब भारी हर्ष मनाते हैं ।
इक रोज़ सभा में बैठे थे, एक दूत संदेशा लाया है ॥
नन्दावृत नगरी राजा श्री अतिवीर्य ने तुम्हें बुलाया है ।
पृथ्वीधर आओ जल्दी से, सब राजा हम से आय मिले ॥
दस अक्षोहिणी सैन्य लेकर, हम राज्य भरत पर जाय रहे ।
आज्ञा वो हमारी ना माने, मम दूत का भी अपमान किया ॥
शत्रुघन ने धोखा देकर, सैना को हमारी लूट लिया ।
कुछ राजाओं को साथ में ले, यहाँ भरत शत्रुघन आए हैं ।
सो मात खाय कर जाएंगे, संधि भी नहीं कर पाए हैं ॥
दोहा—राम लखन ने भी सुना, सभी पत्र का हाल ।
पृथ्वीधर से यूं कही, हम जाऐं फिलहाल ॥

तर्ज—राधेश्याम

हम प्रगट होन नहीं पाऐंगे, और भरत से जाकर युद्ध करें ।
एक पुत्र और कुछ सैना दो, क्यों नाहक संकट आप भरें ॥
सब चल कर नंदावृत पहुँचे, श्री राम से सीता बोल उठीं ।
कुछ कहना चाहती हूँ स्वामी, मन में शंका है आज उठी ॥
दस अक्षोहिणी दल इधर खड़ा, अरु राजे भी हैं बड़े नामी ।
तो भरत विजय कैसे पायें, रघुवंश की होगी बदनामी ॥

नहीं आपको इनको कुछ भी कठिन, नहीं करनी कुछ है तैयारी।
लक्ष्मण जी को आज्ञा दीजे, यह नारायण हैं बलधारी॥
लक्ष्मण जी कहें कुछ चिंता नहीं, हम दोनों ही अब जाते हैं।
उस अतीवीर्य को बाँध अभी, आपके तुम पास ही लाते हैं॥
बोले श्री राम यह ठीक है सब, पर भरत के खेमे पास खड़े।
हमें प्रकट नहीं होना चहिए, यह सोच रहे हैं खड़े खड़े॥
तब दोनों ने कर युक्ति सहित, नृत्यकारिणी वेश बनाया है।
सब अंग पे आभूषण सजते, वीणा को हाथ उठाया है॥
नर नारी देख देख कहते, स्वर्गों से अप्सरा आई हैं।
क्या हावभाव झुलकन थिरकन, रसमय नृत्यगान सुनाई हैं॥
प्रभु गुणनुवाद गाते गाते, हैं राजा के द्वारे आए।
अतिवीर्य देखकर मुग्ध हुए, और सिंहासन से उठ धाए॥
गुण गान श्री चौबीसों का, वीणा पर मृदु स्वर में गाया।
लेखनी शक्ति से बाहर है, जैसा है वहां नृत्य दिखलाया॥
कभी मध्यम में, कभी पंचम में, संगीत भी मानो हार गया।
राजा व प्रजा सब मोहित हैं, प्रत्येक इन्हीं को निहार रहा॥
सब को मद मस्त बना करके, अतिवीर्य से उठ कर कहने लगे।
जाकर के भरत को नमन करो, वह वीरता रस में बहने लगे॥
इतना सुनते ही उठे राव, और खड्ग हाथ में लीना है।
नृत्य-कारिणि भी तैयार हुई, रख कर जमीन में वीणा है॥
और एक उछल सिंहासन पर, गहि केश पकड़ कर बांधलिया।

लेकर आए अपने दल में, सीता ने उन्हें खुलवाय दिया ॥
तब राम कही जाओ भाई,श्री भरत को जाय प्रणाम करो।
बेखटके होकर राज करो, आगे ना ऐसा काम करो ॥
बोले अतीवीर्य हे राम सुनो,झुक कर नहीं राज चलाऊँगा।
मेरे तो हितैषी आप बड़े, दीक्षा ले वन को जाऊँगा ॥
तब पुत्र को राज्य सिंहासन दे,गुरु निकट जाय दीक्षा धारी।
श्री भरत भी सुन वन्दन आये,अतिवीर्य सुयश गाते भारी ॥
अतिवीर्य पुत्र ने लक्ष्मण को, निज बहन रत्नमाला दीनी।
श्रीराम सिया सब मिलकरके,तब विजयनगर की सुध लीनी ॥
श्रीभरत अयोध्या में आकर,उन नटिनी के प्रति सोच रहे।
नहीं नारी में इतनी शक्ति, देवी ने आकर केश गहे ॥
और इधर राम लक्ष्मण ने, पृथ्वीधर से आज्ञा मांगी है।
हम तो जाएँगे अब आगे, दिल में अपने लौ लागी है ॥
वनमाला बोली लक्ष्मण से,स्वामी क्या फिर तज जाओगे।
क्यों प्रान बचाया मरने से, जो फिर वैसे तड़पाओगे ॥
लक्ष्मण ने बहुत दिलासा दिया,हम जल्दी ही ले जायेंगे।
लेकिन इस समय जरूरी है, भाई भावज संग जायेंगे ॥

दोहा—खण्ड दूसरा यों खतम,वन-विहार गुणवान।
जो"दासी"की चूक हो, क्षमा करें विद्वान ॥

तृतीय खण्ड

सीता हरण

❀ मंगलाचरण ❀

दोहा—सब मिल बोलो प्रेम से, जय श्री सम्भवनाथ ।
जिन की कृपा कटाक्ष से, कटे कर्म की फांस ॥

❀ कथा प्रारंभ ❀

दोहा—सिया हरण की यह कथा, सुनो हृदय धर धीर ।
करुण भाव से जो भरी, लाती नयनों नीर ॥
क्षेमांजली नगरी निकट, आये श्री रघुवीर ।
तीनों को लख नागरिक, हुए विकल तज धीर ॥

तर्ज—राधेश्याम

आपस में यों सब कहते हैं, ये कौन कहां से आए हैं ।
मनमोहन अतिशय रूप देख, देवता मात मन खाए हैं ॥
दुर्भाग्य आज इनका देखो, दरबार बीच में जाते हैं ।
इनको रहस्य कहना चाहिए, क्यों अपनी जान गंवाते हैं ॥
जितपद्मा नहीं कालकन्या, कितनों का प्राण हरेगी वह ।
क्या जाने कितने वर्षों तक, यह खूनी कांड रचेगी वह ॥
यह चले आ रहे सौम्य भाव, आवाज कान में आते ही ।
कौतुकी स्वभावी लक्ष्मण थे, आगे बढ़ पूछें, बात सही ॥

यह जितपद्मा है कौन? और क्यों नर हत्या करवाती है।
कुछ रहस्य तुम्हारी बात में है, जो नहीं समझ में आती है॥
तब कहने लगा नागरिक इक, आप सब हाल सुनाता हूँ।
अविवेकी शत्रुदमन राजा, यहाँ उसकी कथा सुनाता हूँ॥
जितपद्मा है पुत्री उसकी, सौन्दर्यमयी, शचि भी हारी।
विद्वता, कला में पारंगत, पद्मनि रूपसी है नारी॥
ना जाने क्या मन भाव हुआ, है पुरुष जाति से घृणा उसे।
गन्धर्व, यक्ष, विद्याधर, स्वर्गिक देव रिझा ना सके उसे॥
राजा पुत्री की हठ देखी, तो अपनी लाज बचाने को।
घोषणा करादी सब जग में, आये जो शक्ति खाने को॥
मेरी शक्ति का वार झेल, जीवित जो भी रह जायेगा।
उससे ही जितपद्मा ब्याहूँ, दामाद वही कहलाएगा॥
सैकड़ों वीर शक्ति खाने आये, पर लौट न पाये हैं।
दीपक पे पतंगे की भांति, यहाँ आकर प्राण गंवाये हैं॥
दोहा—यही गति तुम दोऊ की, सोच हृदय अकुलाय।
हँस लक्ष्मण कहने लगे, हम भी देखें जाय॥

चौबोला

हम भी देखें जाय, कि कैसी है वह राजदुलारी।
जो निज मान बचावन कारण, करती हत्या भारी॥
लेकर आज्ञा बड़े भाई की, पृथ्वी को कंपाते।
नारायण अवतारी चल कर, राज द्वार पर आते॥

मैदान

चोट डंके पर मारी जी। रही देख प्रजा सारी जी।
द्वार का प्रहरी आया।
कर प्रणाम लक्ष्मण जी को, राजा समीप पहुंचाया॥

दोहा—मतवाले हाथी सदृश, आता देखा वीर।
राजा मन हर्षित हुए, आज मिटेगी पीर॥
पहुंच राज दरबार में, खड़े धीर गम्भीर।
राजा पूछें चाव से, आए कहां से वीर॥

गजल

कहा लक्ष्मण ने राजा से, अवधपुर से हैं हम आते।
वहां के भर्त राजा के ही हम, सेवक हैं कहलाते॥
यहां आकर सुना हमने, कि तुम शक्ति चलाते हो।
जरासी बात के कारण, खून होली रचाते हो॥
हो ताकत अपनी शक्ति की, जानते आप तुम राजा।
जो आये बेगुनाह मारे, सोच मन में न लाते हो॥
कहाँ वह लाडली तेरी, जरा देखें उसे हम भी।
हो जिसके कारणे राजा, यों अत्याचार ढाते हो॥
सुना जो नाम अपना, आन कर खिड़की में देखा है।
हुई मोहित; किया संकेत, शक्ति को नहीं खाते॥
इधर लक्ष्मण भी उसको देख; कर अनुराग में आये।
दिया संकेत में उत्तर, नहीं शक्ति से घबराते॥

दोहा—लक्ष्मण बोले गरज कर, सुनो राव धर ध्यान।
कहाँ है शक्ति आप की, है जिस पर अभिमान ॥

तर्ज—राधेश्याम

सब अपनी शक्ति लगा करके, राजा जी शक्ति चलाओ तुम।
दो चार यदि हों और भी तो, एक बार ही वार चलाओ तुम ॥
यह सुन कर राजा तड़फ उठे, शक्ति भरपूर चलाई है।
लक्ष्मण ने दाहिने हाथ गही, राजा ने द्वितीय उठाई है ॥
जिस समय चलाई लक्ष्मण पर, बाँये कर में गहि लीनी है।
तब आह भरी जितपद्मा ने, देखो विधना क्या कीनी है ॥
ये कहा लखन ने, शक्ति का मुझपै तो असर कुछ हुआ नहीं।
जितपद्मा को आश्चर्य हुआ, आया कोई ऐसा वीर नहीं ॥
अन्याय किया है राजा ने, दो शक्ति और चलाई हैं।
दोनों कक्षों में गहि लीनी, जितपद्म नैन भर लाई है ॥
तब अंत पांचवी शक्ति को, राजा ने लखन पर चला दिया।
दांतों में उसको गहा वीर, देवों ने जय जयकार किया ॥
आकाश से पुष्प बरसने लगे, अनहद बाजों की ध्वनि आई।
जितपद्मा वरमाला लेकर, लक्ष्मण जी के सन्मुख आई ॥
राजा ने भी भर प्रेम पुलक, लक्ष्मण को हृदय लगाया है।
तुम-सा बलशाली आज तलक, मम देखन में नहीं आया है ॥
दोहा—कहैं राव शादी करो, मम पुत्री के साथ।
इसका निर्णय राव जी, भ्रात हमारे हाथ ॥

दोहा—इक रथ में जितपद्म अरु, लखन हुए असवार।
राजा ने रानी सहित, संग लिया परिवार॥

चौबोला

संग लिया परिवार, नारियाँ करती मंगलचारा।
राम-सिया थे मगन, तभी सीता ने वचन उचारा॥
उड़ती धूल आ रही है, क्यों यह कोलाहल भारी।
ना जाने उत्पात किया, क्या यह लक्ष्मण ने भारी॥

मैदान

राम कहें क्यों घबराती जी, दृष्टि फिर धनुष्य पे जाती जी।
तभी लक्ष्मण रथ आया।
हर्ष सहित श्रीराम चरण में, शत्रुदमन सिर नाया।

दोहा—दोनों को लेकर चले, राजा बहु हर्षाय।
जितपद्मा और लखन का, दीना ब्याह रचाय॥

जितपद्मा के अतिशय स्वरूप, गुण प्रेमकला में मोहित हो।
थे हर्ष सहित कुछ दिन बीते, फिर कहा प्रिये अब आज्ञा दो॥
हालत समझाकर प्रेम सहित, दे धैर्य उसे समझाया है।
राजा से विदा मांग करके, आगे को कदम बढ़ाया है॥
कुछ दिन बीते चलते चलते, वंशस्थल नगरी आते हैं।
वहाँ देखा नगर छोड़ करके, सब नागर भागे जाते हैं॥

दोहा—राम कहें कहाँ जा रहे, नगरी से सब वीर।
क्या भय यहाँ सता रहा, कहो जरा धर धीर॥

ख्याल—क्या पूछे महाराज, तीन दिन होगये बहुत सताये हैं।

वंशगिरि पर न जाने, क्या दुःख के बादल छाये हैं ॥
होती है आवाज भयंकर, धरा कांप रह जाती है ।
बाल-वृद्ध सारी जनता, भय से कोई सो नहीं पाती है ॥
इसलिये सांझ को नगरी से, सब पाँच कोस पर जाते हैं ।
होते प्रभात भय मिट जाये, सब मिल वापिस आ जाते हैं ॥
सीता बोली चलिये स्वामी, हम सब भी इनके साथ चलें ।
समयानुकूल करने से काम, सब दुःख के बादल जायँ टले ॥
तब हँस बोले दोनों भाई, हम को तो नहीं आना-जाना ।
तुम जाओ इनके साथ, सुबह जब यह आवें तब आ जाना ॥
है हमें मिटाना वह खटका, जो त्रास नगर को देता है ।
है कौन शत्रु इस नगरी का, जो प्राण सभी के लेता है ॥
दोहा—यह कह करके चल दिये, दोनों गिरि की ओर ।
सिया भी चली साथ में, लिये पति कर का जोर ॥
चढ़ गये शिखर पर क्या देखें, मुनिराज तपस्या करते हैं ।
कुलभूषण, देशभूषण नामक, जा नमस्कार यह करते हैं ॥
इतने में मुनियों के पहले, भव का शत्रु आ जाता है ।
इस भव में जो था हुआ देव, आकर उपसर्ग रचाता है ॥
कुछ कुटिल भयंकर सर्प आन, मुनियों के तन से लिपट रहे ।
श्रीराम औ लखन परिश्रम से, उन तनसे उन्हें कर दूर रहे ॥
फिर राम लखन दोनों ने मिल, वीणा पर मृदु संगीत रचा ।
गुण-गान करा चौबीसी का, सीता ने नृत्य में भाव रचा ॥

इतने में एक आवाज भयंकर, भेद पहाड़ को निकली है।
भूकम्प हुआ, पृथ्वी डोली, व्यन्तरों की हा-हा सुनली है॥
आकाश से खून की बूंद पड़ें, कभी हाथ कटे आ जाते हैं।
सर पैर अलग गिरते देखे, सीता को चक्कर आते हैं॥
भय मान राम से लिपट गई, वो मीठे शब्द सुनाते हैं।
हे प्रिये मुनि चरणों में रहो, हम उसको मार भगाते हैं॥
दोहा—राम लक्ष्मण ने उस समय, लीने धनुष चढ़ाय।
माया नाशक बाण कुछ, चहुँदिश दिये चलाय॥
बाणों की शक्ति के आगे, मिट गई असुर की सब माया।
हो शक्तिहीन, निज खैर मना, उनके सन्मुख से भाग गया॥
उपसर्ग मिटा, लग शुक्ल-ध्यान, मुनियोंको केवल ज्ञान हुआ।
आ स्वर्गलोक से देवों ने, तब गंधकुटी निर्माण किया॥
मिलकर नरेशयुत सभी प्रजा, श्रीराम के यश गुण गाते हैं।
वन में ही मण्डप छा उनको, सिंहासन पर पधराते हैं॥
पहले भव के मुनियों के पिता, इस भव गरुड़ेन्द्र कहाते थे।
यह कृत्य राम का देख, मगन हो उन्हें वचन दे जाते थे॥
जो इच्छा हो वह अब मांगों, या पड़े भीड़ तब स्मरण करें।
निजलोक से आकरके रघुपति, उससमय तुम्हारी मदद करें॥
दोहा—उधर गये गरुड़ेन्द्र, और इधर इन्हें तैयार।
गमन हेतु लख कर सभी, कहन लगे नर-नारि॥
हे राम यहाँ कुछ दिन रहिये, सहवास आपका सुखकर हो।

हे राम यहां कुछ दिन रहिये, सहवास आपका सुखकर हो।
तब राम कहें दण्डक वन में, जाना हम को निश्चय कर हो॥
कर पिता वचन परमाण, आज हम भरत राज्य से दूर चले।
दण्डक वन सीमा से बाहर, इसलिये उ धर की ओर चले॥
उस अटवी में स्थान देख, निज वास-स्थान बनावेंगे।
हम सिया सहित वहां टिक करके, माता को वहीं बुलावेंगे॥
दोहा— यह कह कर के चल दिये, तीनों भव्य स्वरूप।
दण्डक वन में आन कर, रचली कुटी अनूप॥
कुटिया आंगन क्यारियां बना, सीता ने पोदे रोप दिये।
केतकी जुही चम्पा बेला, पा समय, खिले मृदु गंध लिये॥
आया वसंत नव पुष्प गंध से, महक उठा सारा जंगल।
कुछ पलित हिरण लेकर कुलांच, करते थे जंगल में मंगल॥
मादक मौसम के वशीभूत हो, राम के मन नव भाव आया।
फूलों से सिय का कर सिंगार, निज संग झुले पर झुलवाया॥
आमोद-प्रमोद में इसी तरह, जीवन के दिन कुछ बीत गये।
तीनों अवतारी होकर भी, जग की माया में विरम गये॥
दोहा—एक दिवस की बात है, करी रसोई त्यार।
आगत पारण हेतु थे, तीनो ठाढ़े द्वार॥
उसी समय चारण मुनि, गुप्ति सुगुप्ति नाम।
दण्डक वन में आगए, हर्षित हो गए राम॥
गजल—कहा सीता ने अय स्वामी, भाग्य सुन्दर हमारे हैं।

जो ऋद्धिधारी दो मुनिवर, आज वन में पधारे हैं ॥
बड़ी नवधा व भक्ति से, उन्हें आहार देते हैं।
देव आकाश में से देख, कर जयकार करते हैं ॥
रत्न और पुष्प वृष्टि, साथ पंचाश्चर्य होते हैं।
वहीं एक गिद्ध बैठे वृक्ष, पर यह दृश्य लखते हैं ॥
मुनि दर्शन से परभव, याद सारे आगये उसको।
इस भव पापों का फल, रौरव दिक्खा सामने उसको ॥
मिटाने पाप अपने आ गिरा मुनियों के चरणों में।
हुआ सुन्दर स्वरूप ऐसा, कहाँ तक हाल वरणु मैं ॥
पैर वैडूर्यमणि सम चोंच, हो गई लाल मूंगे सी।
चमकते स्वर्ण की वह पंख लगते बहुत प्यारे हैं ॥
कहा सीता ने अय स्वामी, भाग्य सुन्दर हमारे हैं ॥

दोहा—राम देखते रह गए, काय बदलती जाय।
तीनो को आश्चर्य है, प्रभु महिमा नहीं पाय ॥
राम कहें पक्षी तेरी, शुभ गति हो गई आज।
इस भव में ही सब तेरे, पूर्ण होगए काज ॥

मुनि चरणों से सब दूर करें, वो नहीं हटाये हटता था।
आंखो से नीर बहा कर वह, चरणों में शीश रगड़ता था ॥
मानो निज पापों का प्रायश्चित, यों करके प्राण छोड़ देगा।
और भाव तपस्या से मानो, स्वर्गीय सुखों को पालेगा ॥
यह देख हाल श्री मुनियों ने, उसको जिन-धर्मोपदेश दिया।

उस ज्ञानी पक्षीने जिसको, निज शीश हिला स्वीकार किया ॥
फिर पंचशील व्रत आदि दिये, और सीताजी को समझाया ।
सम्यक्‌दृष्टि यह जीव हुआ, इस पर रखना अपनी छाया ॥
दोहा—यह कह करके चल दिये, नभ मग श्री मुनिराय ।
जनक नन्दिनी निज कुटी, पक्षी को ले आय ॥
बड़े प्रेम से रख दिया, उसका नाम जटायु ।
तीनों को इमि प्रिय लगे, जिमि प्रिय लगती आयु ॥
श्रीराम लक्ष्मण ने मिलकर, एक रथ सुन्दर निर्माण किया ।
शैया आसन सबका प्रबन्ध, गज से घोड़ो का काम लिया ॥
दण्डक वन के रमणीक-स्थल, उस रथ से देखे चारों ने ।
जायें; माताओं को लायें, घेरा था इन्हीं विचारों ने ॥
लक्ष्मण से करने लगे प्रकट, इतने में आ बरसात लगी ।
तब मन में निश्चय किया, शरद् में बुलवायेंगे मात सभी ॥
आ गई शरद्‌ऋतु धीरे से, चन्द्र की चन्द्रिका छिटक उठी ।
इस ऋतु में वन बिहार करलें, यह लक्ष्मण के मन बात उठी ॥
दोहा—आज्ञा लेकर भ्रात से, लखन घूमने जाय ।
वन में थोड़ी दूर पर, अजब सुगन्धि आय ॥
अचरज भरकर मनमें लक्ष्मण, जब तक सुगंधीकी खोज करे ।
श्रोताओं सुनो ध्यान करके, उस गंध का सारा हाल कहें ॥
दक्षिण दिशा में सागर के मध्य, लंका अनूप रजधानी थी ।
प्रति-नारायण रावण राजा, की चले वहां मनमानी थी ॥

अठदस सहस्र रानियों मध्य जीवन की मौज उड़ाता था।
था तीन खंड का वह राजा, राक्षस-वंशी कहलाता था॥
रावण से छोटे कुम्भकर्ण, और सबसे लघु विभीषण थे।
थे पूर्व कर्म के उदय, भाग्य से तीनों ही तेजस्वी थे॥
रावण पंडित विद्वान् बड़ा, जिन शासन के पालन हारा।
विद्याएँ बहुत थी सिद्ध उसे, और न्याय नीति जानन हारा॥
थे इन्द्रजीत और मेघनाथ, दो पुत्र बड़े ही बलधारी।
और चन्द्रनखा सुन्दर भगिनी जो, खरदूषण की वर-नारी॥
पाताल-लंक में चन्द्रनखा, संग खरदूषण सुख राज करें।
दोनों आँखो से दो कुमार, शम्बूक व सुन्दर भाग भरे॥

❀ गजल ❀

खड्ग सूर्यहास सिद्ध करने, कुमर शम्बुक वन आया।
बैठा बांसों के बीड़े में, नहीं कुछ मन में भय लाया॥
वर्ष बारह किया साधन, हुई खड्ग सिद्धि थी भारी।
चार दिन हो गए लेकिन, उठा लेने ना बलधारी॥
सिद्धि पश्चात् जो साधक, सात दिन तक नहीं लेवे।
तो साधक का वधिक हो खंग, नियोगों में यही आवे॥
खड्ग की ही सुगन्धी थी, दिव्य महकार वो सारी।
खोजते आन लक्ष्मण ने, खंग वह ले लिया भारी॥

दोहा—खड्ग लिया जब हाथ में, मन में उठा विचार।
इस बीड़े पर चला कर, देखें इस की धार॥

चौ०—देखें इसकी धार कि कैसी, सिफ्त का है यह स्वामी ।
देव हजारों सेवा में हैं, खड़े खड्ग के नामी ॥
इधर चलाया कटा शीश, शम्बूक बांस का बीड़ा ।
कौन मरा निरदोष सोच, यह व्यापी मन में पीड़ा ॥
मै०—लिये मन भारी लौटे जी, राम तब लखन सम्बोधे जी ।
जब सारा हाल सुनाया ।
सुन सम्बोधन राम खंग, को लक्ष्मण शीश लगाया ।
दोहा—हर्षित तीनों हो रहे, आगे सुनो बयान ।
भोजन लेकर आई थी, चन्द्रनखा उस थान ॥
बांसों का बीड़ा कटा देख, शम्बूक मरा जब पाया है ।
तब देख पुत्र की हालत को, रो रो कर रुदन मचाया है ॥
हत्यारे ऊपर क्रोध बढ़ा, वह करती खोज उधर आई ।
जहाँ राम लखन सीता बैठे, तीनों पर अद्भुत छबि छाई ॥
श्री राम को देख मोहित हुई, और क्रोध भी सारा नष्ट हुआ ।
है काम की माया क्या विचित्र, सब पुत्र मोह भी नष्ट हुआ ॥
क्वारी कन्या का रचा स्वांग, एक वृक्ष तले बैठी रोती ।
सुन सीता को करुणा उपजी, आकर के पास धैर्य देती ॥
श्रीराम कहें क्यों रोती हो, हो कौन कहां से आई हो ।
इकली बन में कैसे फिरती, कहां बाप तुम्हारा भाई हो ॥

❀ गजल ❀

बताऊँ क्या तुम्हें साजन, निशां अपना पता अपना ।

मरे माता पिता दोनों, न कोई आसरा अपना ॥
अकेलेपन से घबड़ाती बनों में, आई जाँ देने ।
मुसीबत हर तरफ छाई, सुखों के दिन हुये सपना ॥
शरण हूँ आपकी अब तो, मुझे वर लीजिये स्वामी ।
करूँ सेवा मैं तन मन से, नाम नित आपका जपना ॥
सुने खोटे वचन उसके, वो तीनों मौन हो बैठे ।
नहीं उत्तर मिला कोई चली, पति पर जो था अपना ॥

चौबोला

दोहा—निज नारी का देखकर, यह वित्रस्त सा हाल ।
खरदूषण कहने लगे, ये क्या प्रिये हवाल ॥
यह क्या प्रिये हवाल, जरा सब साफ साफ बतलाओ ।
किस का आया काल, नाम तुम उसका मुझे बताओ ॥
बोली चन्द्रनखा ले हिचकी, दो तापस सुकुमारा ।
साथ में है एक सुन्दर नारी, काम उन्हीं का सारा ॥
मै०—पुत्र भी मेरा माराजी, खड्ग हर लिया विचाराजी ।
धर्म मम हरना चाहा ।
दण्डक वन से भाग, शरण आ अपना शील बचाया ॥
दोहा—खरदूषण ने जब सुना, छलिनि से यह हाल ।
क्रोधाग्नि में जल उठा, आंखें हो गई लाल ॥

तर्ज—राधेश्याम

सेनापति मन्त्री बुलवाये, और युद्ध की की तैयारी है ।

रावण पर भेजा दूत कहा, हम चाहते मदद तुम्हारी हैं ॥

और इधर सभी राजाओं सहित, खरदूषण युद्ध को जाता है ।
सीता ने कहा प्रभु देखो तो, यह कौन गर्जता आता है ॥
भय से व्याकुल हो गई सिया, श्रीराम ने धैर्य बंधाया है ।
कोई सिंह वगैरह ही वन में, ये त्रास दिखाने आया है ॥

फिर शत्रु का दल देख लिया, तो समझ गई माया सारी ।
शंबूक हना और खड्ग लिया, उसके बदले की तैयारी ॥
उठ गए राम बख्तर पहिना, और दृष्टि धनुष पे धारी है ।
लक्ष्मण बोले मेरे होते, क्यों आपने की तैयारी है ॥

जाऊँगा अकेला और सभी, पे विजय प्राप्त कर आऊँगा ।
यदि भीड़ पड़ी तो सिंहनाद, कर आपको मैं बुलाऊंगा ॥
चल दिये लखन इतना कहकर, खरदूषण सन्मुख आया है ।
वह खरदूषण चौदह सहस्र, विद्या स्वामी कहलाया है ॥
विद्याधर नभ के मध्य और, भूमि पर लखन अकेले थे ।
मायावी नरेशों के लाखों, ही वार इन्होंने झेले थे ॥

रावण सुनकर पैगाम तुरत, ही लंका से चल देता है ।
बन बीच राम के निकट सती, सीता को देख वो लेता है ॥

सीता का रूप अनूपम था, जो वर्णन में नहीं आ सकता ।
लख सुधि अपनी रावण भूला, अब युद्ध में भी नहीं जासकता ॥

दोहा

विद्या भूत अवलोकनी, रावण लई बुलाय।
जो परिचय दे राम का, दे सब हाल बताय॥

तर्ज—राधेश्याम

सब बातें सुन दशकन्धर ने,हा राम! हा राम! पुकारा है।
भैया की सुन व्याकुल पुकार, श्रीराम ने वचन उचारा है॥
'भाई पर विपद पड़ी भारी, सीते तुम भी कुछ सुनती हो।'
हाँ नाथ! करुण व्याकुल पुकार,देवर की सी ही सुनती हूँ॥
कुछ उनपर विपद् पड़ी भारी, रक्षा हित को जाना चहिये।
मेरी रक्षा को है जटायु, अब शीघ्र गमन करना चहिये॥
है कथन तुम्हारा उचित प्रिये,मैं लखन मदद को जाता हूँ।
कुछ भय मत लाना तुम मन में,मैं शीघ्र ही वापस आता हूँ॥
पुष्पों में छुपाकर सीता को, रक्षा में जटायु छोड़ दिया।
भाई की चिन्ता हृदय लगी,श्रीरामने शीघ्र ही गमन किया॥
जाकर के लखन से मिले राम, उसने पूछा तुम क्यों आये।
यह वन है बहुत ही विपद भरा,माताको अकेली छोड़आये॥
करुणिक पुकार की सुनी बात, लक्ष्मण बोले यह माया है।
हमको विधि से छलने को, दुष्टों ने जाल बिछाया है॥

दोहा

मुझे तो है चिन्ता बड़ी, क्यों आए हो वीर।
हरण न मां होवें कहीं, मन नहीं धरता धीर॥

शीघ्र जाओ माता निकट, मुझे न कोई भीर ।
लक्ष्मण के सुनकर वचन, राम हुए गम्भीर ॥

❀ गजल ❀

उधर श्री राम लौटे हैं, इधर रावण भी है आता ।
देख वनदेवी सीता को, है भोचक्का सा रह जाता ॥

जटायु ने उधर देखा, न जाने कौन है आया ।
नहीं औसान इसके नेक, ये पक्षी के मन आया ॥

चोंच नख और पंजों से, विपुल संग्राम है कीना ।
देख स्वर्णिम गिद्ध रावण, बड़े अचरज में है आया ॥

लगा फिर सोचने मन में, राम वापस अगर आवें ।
तो मेरे मन के सब अरमां, मेरे मन में ही रह जावें ॥

मिटाओ बीच का खटका, और एक चोट दी मारी ।
गिरा क्षत पक्षी पृथ्वी पर, लिये बेचैन लाचारी ॥

हरण सीता का कर रावण, चला पुष्पक में नभ मग से ।
कहे 'दासी' बड़े विद्वान की, होनी ने मति मारी ॥

❀ दोहा ❀

रो रो रुदन करे सिया, विधि क्या कीना आज ।
हा साजन ! हा लक्ष्मण ! आन बचाओ लाज ॥

तर्ज—राधेश्याम

भामण्डल सेवक रत्नजटी, था उसी मार्ग से जाय रहा।
सीता का शब्द पहिचान, आन रावण से युद्ध रचाय रहा॥
कटु स्वर में कहा मानी रावण, तू बचके कहाँ को जाएगा।
मेरे होते, मम स्वामी की, भगिनी को हर ले जाएगा॥
तैयार युद्ध को देख उसे, रावण नें विद्या हर लीनी।
नभ से पृथ्वी में उसे पटक, रावण ने दक्षिण-दिशि लीनी॥
और उधर राम वापस आए, कुटिया में जानकी ना पाई।
हो गिरे मूर्छित धरणी पर, हा सिय! की क्षीण ध्वनि आई॥
फिर हो सचेत खोजने चले, पक्षी को कण्ठ-प्राण देखा।
दे नमोकार, सन्यास दिया, हो गया पूर्ण उसका लेखा॥
आई फिर से सीता की सुधि, वन वृक्षों से पूछते फिरें।
देखी है तुमने कहीं सिया, मृग छौनो से पूछते फिरें॥
कभी सोचते हैं क्या रूठ गई, मैं यहाँ अकेली छोड़ गया।
मेरा अपराध सरासर है, मैं कैसे मुँह को मोड़ गया॥

❀ दोहा ❀

सिय विरह में हो गए, ऐसे राम निराश।
ना तन की सुधि बुधि रही, ना जीवन की आश॥

स्फटिक शिला पर बैठकर, बहते नैनों नीर।
मन की व्यथा सुना रहे, इस विधि से रघुवीर॥

धुन—गम दिए मुस्तकिल

ना मिली है सिया, ढूंढ सब वन लिया, मन न माने।
हाय कित जा छुपी, कौन जाने ?

॥१॥

अक्ल तेरे विरह ने है खोई।
हाय तकदीर है आज सोई॥
वन के वृक्षों पता, देखो तुम ही बता, मन ना माने।
रूठकर क्या छुपी, आजमाने॥ ना मिली है सिया....

॥२॥

आये माताओं को दुःख देकर।
और आज्ञा पिता जी की लेकर॥
वन में है दुःख कोई, हमने जाना नहीं, आज जाने।
याद आते हैं, तेरे फसाने॥ न मिली है सिया....

॥३॥

कोई आ कर पता तो बतादे।
कहां गई जानकी यह पता दे॥
चैन आता नहीं, ढूढ़ी सारी मही, मन ना माने।
बोल अब तो कोई जो न जाने॥ ना मिली है सिया....

दोहा—सिया वियोग में राम इत, हो रहे थे हल्कान।
उधर युद्ध में विराधित, लक्ष्मण से मिले आन॥

दोहा—खरदूषन का वध हुआ, पुष्प वृष्टि सुर कीन।
गही लंक-पताल को, लखन विराधित दीन ॥

तब दोनों मिल कर वहाँ से चले, श्रीराम कुटी पर आते हैं।
कुटिया को खाली पड़ी देख, लछमणजी घबड़ा जाते हैं ॥
दोनों मिल आगे को धाये, अपशकुन हुए मग में भारी।
मारग वन-बिल्ली ने काटा, रोते उलूक थे भयकारी ॥

दुश्चिन्तित हृदय लिये लछमण, पद चिह्न देखते जाते हैं।
रस्ते में जटायु मारा मिला, होनी को सोच घबराते हैं ॥
दे रहा विराधित उन्हें धैर्य, पर धैर्य न उन्हें सुहाता है।
मग पर तेजी से बढ़े जाय, नैनों में नीर भर आता है ॥

❀ चौबोला ❀

दोहा—चलते चलते आ गये, दोनों उस स्थान।
सिय वियोग बैठे जहां, होय राम हल्कान ॥

चौ०—होय राम हल्कान, मोह में दुखित हुये हैं भारी।
बड़े विवेकी सम्यक्‌दृष्टि, बुद्धि गई सब मारी ॥
देख देख भाई को लछमण, शोक करें मन माही।
पुरुषोत्तम को कष्ट दिया क्यों, क्या विधना ने चाही ॥

मैदान—धैर्य देते हैं भाई को। ढूंढेंगे जनक की जाई को।
करो कुछ सोच न भ्राता।
सारी पृथ्वी छान के लाऊं, जहां गई हो माता ॥

दोहा—श्रीराम ने लखन को, उर से लिया लगाय ।
विजय प्राप्ति लख भ्रात की,शोक में हर्ष मनाय ॥
फिर विराधीत ने राम चरण,में आकर शीश झुकाया है ।
माता को हम तालाश करें,रघुवर को बहुत समझाया है ॥
हे स्वामी खरदूषण शम्बुक, दोनों ही मृत्यु को प्राप्त हुए ।
इन के साथी बहुत राजा हैं, बैठ मन पश्चाताप लिए ॥
इस महा दुःख में हे स्वामी,यदि मिल कर सब चढ़ आएंगे ।
सीता का शोक लिये मन में,आप उन्हें जीत नहीं पाएंगे ॥
इस लिए लंकपाताल चले,वहां निर्भय हो के उपाय करें ।
चलिए यह मेरी प्रार्थना है,भगवान शरण से काज सरें ॥
तब चार हाथियों के रथ पर, चढ़ करके दोनों जाते हैं ।
लेकिन सीता बिन छवि नहीं,मन कहीं लगा नहीं पाते हैं ॥
पाताल लंक द्वारे पहुँचे, था सुन्दर उसका अधिकारी ।
खरदूषण का लघु पुत्र,सैन्य ले करी युद्ध की तैयारी ॥
कुछ देर किया था युद्ध न,सम्मुखलक्ष्मण के टिक पाया है ।
निज माता को ले साथ,युद्ध से लंका की दिशि धाया है ॥
श्रीराम लखन खरदूषण के, महलों में जा आबाद हुए ।
सुन्दर जिन मन्दिर देख वहाँ,भगवान शरण से शान्त हुए ॥
दोहा—सीता हर ला लंक में, दशकंधर महाराज ।
देव अरण्य ठहरा दई, जो वहां था वनराज ॥
श्रीराम देव की पटरानी,शोकों में भरी हुई मारी ।

अशोक वृक्ष नीचे बैठी, नैनो से नीर रहे जारी ॥
जब तक पतिकी सुधि नहीं पायें, अन जलका त्यागकर देती हैं।
एकान्त कभी पा जाती हैं, तो प्रिय को याद कर लेती हैं ॥
वो नीची दृष्टि किये बैठी, नहीं बात का उत्तर देती हैं।
धीरे धीरे मन ही मन में, वो ऐसी बातें करती हैं ॥

गीत—परदेशी क्यों याद आता है ?

मुझे राम का नाम सुहाता है। श्रीराम का ऽ नाम······॥
जब से रावण हर लाया है, नैनों ने नीर बहाया है।
बिन राम जिया घबराता है। मुझे॥···१॥
जब तक न राम की खबर मिले, बैठी हूँ आज प्रतिज्ञा ले।
नहीं अन जल मुझको भाता है। मुझे···॥२॥
हे स्वामी सुधि लो शीघ्र मेरी, हे लक्ष्मण आती याद तेरी।
दिल भर भर मेरा आता है। मुझे···॥३॥
हे विधना कैसे धीर धरूं, बन्धन में पड़ी फरियाद करूं।
अब विरह सहा नहीं जाता है॥ मुझे···॥४॥
प्रीतम "दासी" पे दया करना, रावण से मेरी रक्षा करना।
बिन दरश जिया घबराता है॥ मुझे···॥५॥

दोहा—उधर लंकपे ताल से, सुन्दर लेकर प्राण।
माता चन्द्रनखा सहित, लंका पहुँचा आन ॥

खरदूषण के मरने की खबर, रावण को भी मिल जाती है।
अठदस हजार राखियों सहित, मंदोदरि रुदन मचाती है॥
भाई की गोद में शीश डाल, जब बहन ने हाहाकार करी।
रावण ने धैर्य दिलासा दे, महलों पहुंचाई शोक भरी॥
फिर रावण देवारण्य गया, सीतासे मिलनकी आश में है।
हे सीते मेरे जीवन की, अब डोर तुम्हारे हाथ में है॥
हे चन्द्रमुखी हे पिक बैनी, अपने नैना खोलो तो सही।
मैं तीन खंड का स्वामी हूँ, मेरे बस में है सकल मही॥
है भूमिगोचरी; बनवासी वह राम जिसपे तू मरती है।
मैं अतुल बली विद्याधर हूं, मुझको स्वीकार न करती है॥
दोहा—नीची दृष्टि किये हुए, बोली सीता बैन।
राम दरश बिन है नहीं, मुझको पल भर चैन॥

तर्ज—फिल्म बाबुल

सुन लंकापति, तेरी बिगड़ी मति, मुझको लाया यहाँ।
ओ ऽ ओ ऽ मुझको लाया यहाँ॥
हुई आज्ञा पिता, राम बन को चले।
सेवा करने को लक्ष्मण भी उन संग चले।
मैं पिया संग चली, थी खिली दिल कली।
हर्ष पाया महा। ओ ऽ ओ ऽ हर्ष पाया महा॥१॥
बन में भ्रमते हुए, हम थे तीनों खुशी।
नीचता पर तेरी; मुझको आती हंसी॥

हर के लाया मुझे, क्या कहूँ मैं तुझे ।
नीच कायर महा । ओ ऽ ओ ऽ नीच कायर महा ॥२॥

राम लंका में आवें, खबर पा मेरी ।
खेलती है अरे, सर पे मृत्यु तेरी ॥

खाक में तू रले, न पता तक मिले ॥
देखे सारा जहाँ । ओ ऽ ओ ऽ देखे सारा जहाँ ॥३॥

तेरा अभिमान सारा निकल जायेगा ।
बाण खा, अन्त तू, उनके पछतायेगा ॥

यह है "दासी" कही, वीर भजले सही ।
नहीं रहना यहाँ । ओ ऽ ओ ऽ नहीं रहना यहाँ ! ॥४॥

दोहा—सीता के यह वचन, रावण हुआ उदास ।
भय दिखलावे सिया को, विद्या बल की आस ॥

विकराल सूरतें नृत्य करें, खोपड़ी बजें, डाकिन नाचें ।
मर मनुष्य खून से खप्पर को, मुन्डों की माल गले साजें ॥
भीषण अजगर खींचते सांस, आता समच चट कर जाते ।
फणिधर काले फुंकार मार; वीरों का दिल भी दहलाते ॥
मुंह फाड़े आता बबर शेर, किट किट करती वानर सैना ।
मदमस्त गजों का दल आता, नाना प्रकार का भय देना ।
रावण ने जब प्रारम्भ किया, कुछ डरी सिया कुछ अकुलाईं ।
सब सहा प्रभु का नाम लिया, रावण की शरण नहीं आई ॥

जब सब कुछ करके हार गया, सीता की दृढ़ता डिग न सकी।
होते प्रभात, ले मन उदास, महलों को लौटा लंकपति ॥
सीता के मोह में पागल हो, कभी लेटता है कभी बैठता है।
कर मलता, केश नोचता है, कभी उठकर के चल देता है॥
दोहा—बोली तब मंदोदरी, देख पती का हाल।
क्या चिन्ता है आप को, कहें प्रजा पतिपाल॥
क्या कारण है बतलाओ जरा, क्या खरदूषण का फ़िक्र हुआ।
लेकिन चत्री की रीत यही, मारें या अपना मरण हुआ॥
रावण बोला यदि क्रोध न हो, तो अपने मन की कहता हूँ।
मेरी चिन्ता का कारण तो, कुछ और ही है, बतलाता हूँ॥
श्री राम की रानी सीता को, मैं हर कर के ले आया हूँ।
सब कर प्रयत्न मैं हार गया, खुश उसे नहीं कर पाया हूँ॥
यदि उसकी कृपा नहीं होगी, तो अपने प्राण गवाऊँगा।
दिन रात मैं गम में डूब रहा, जीवित रहने नहीं पाऊंगा॥
यह सुनकर मंदोदरी हंसी, हंस कर रावण से कहने लगी।
वह मंद-भागनी नारी है, जिसने न तुम्हारी शरण गही॥
तुम रूपवान हो गुण निधान, त्रिखंड पती कहलाते हो।
न जाने और क्या चाहती है, क्यों बलात्कार नहीं करते हो॥
दोहा—सुर नर साची में प्रिये, नियम लिया था जोय।
बलात्कार नहीं कर सकूं, जो नहीं चाहे मोय॥

चौबोला

जो नहीं चाहे मोय, कार्य यह तुमको सौंप दिया है।
उस बिन जीवन मुश्किल मेरा, निश्चय जान लिया है॥
इतनी सुन मंदोदरी, चल सीता से मिलने आई।
ऐसे चिन्तातुर क्यों बैठी, तुम्हें मनाने आई॥
मैदान—पती त्रिखंड-पति मेरे, न क्यों मन भाए तेरे।
'अभागिन है तू सीता।
विश्वनारियां, जिसे चाहती, उसको तू ने जीता॥
दोहा—माला उनकी क्या जपे, राम लखन नहीं भाँय।
मम पति से दुनिया डरें, डरूं क्रोध न आय॥
यह सुन कर सीता कहने लगी, मैं तो समझूँ थी तुम्हें सती।
तुम पतिव्रता कहलाती हो; कैसी देती हो मुझे मति॥
यह प्राण भले ही चले जांय, पर जाये मेरा शील नहीं।
यदि राम यहां नहीं आयेंगे, तो जाए मेरो प्राण यहीं॥
उस समय राणियां सब आईं, अरु पाथमें आए दशानन भी
सेनापति मंत्री विभीषणादि परिवार से कानन भरा सभी॥
सीता का करुण रुदन सुनके, करुणा मन उठी विभीषण के
रावण से कहने लगे 'भ्रात तुम ज्ञानी श्रेष्ठ विश्व भरके॥
ये सति पतिवरता नारी अन-जल का त्याग कर बैठी है।
यदि इसके प्राण चले जाएं, हो जाय तुम्हारी हेटी है॥
इसलिये यही है उचित तुम्हें, परनारी की इच्छा छोड़ो।
उत्तम कुल के मेरे भ्राता, जहां से लाये, वहाँ जा छोड़ो॥

दोहा—रावण बोला—'रीति यह राजनीति की ज्ञात ।
भू की सुन्दर वस्तु सब, बंधी राज के साथ ॥

चौबोला—

बंधी राज के साथ और उनका अधिकारी राजा ।
इस नाते सीता पर मेरा सीधा हक हो जाता' ॥
कहे विभीषण, गलत अर्थ क्यों राजनीति का करते ।
ज्ञानी हो अन्याय मार्ग का, यों क्यों पोषण करते ॥

मैदान—

मान लो बात हमारी, गलत यह रीति तुम्हारी ॥
चलन गर इसका होगा ।
सच कहता हूं भ्रात जगत में तुम सिर नीचा होगा ॥

दोहा—समझाया बहु भांति से, रावण माना नाय ।
रिस होके महलों गया, शीश काल मंडराय ॥
इधर विभीषण मंत्र को मंत्री लिये बुलाय ।
लंका रक्षा के सभी सोचें बैठ उपाय ॥

खरदूषण मारण हारे की शक्ति का था आभास इन्हें ।
शत्रु से युद्ध अवश्य होगा, ऐसा मन था विश्वास इन्हें ॥
निर्णय कर मायाकोट रचा, लंका की रक्षा करने को ।
थे सुभट बिठाये द्वारों पर, विश्वस्त चौकसी करने को ॥
सौ सौ योजन तक चहुँ दिशिमें,बैठी चौकियां सजग होकर।
नभ में, जल में, थल में घूमे, थे खबरगीर जागृत होकर ॥

था तप्त लोह सा परकोटा, ज्वाला लपटें नभ चूमती थीं।
योजन भर ऊंचा उड़ आवे वे उसे भस्म कर डालती थीं॥
इस कठिन दुर्ग को भेद यहां आना उनको मुश्किल होगा।
यह सोच हुआ सन्तोषित मन, न जाने शिविमें क्या होगा॥
यह तृतीय खण्ड समाप्त हुआ, श्रीआदि प्रभुकी जय बोलो।
मैं सबसे क्षमा चाहती हूं 'दासी' के गुण अवगुण तोलो॥

—•—

चतुर्थ-खण्ड

[सीता जी की खोज]

मंगलाचरण

दोहा—सब मिल बोलो प्रेम से, जय जय श्री महावीर ।
नाम लेत जिनके कटे, भव रूपी जंजीर ॥

कथा-प्रारम्भ

दोहा—दक्षिण दिशि में था नगर, किष्किन्धा विख्यात ।
वानर वंशी भूप का, वहाँ चलता था राज ॥

राजा बाली, शक्तिशाली, विद्याधर का वहाँ शासन था ।
दशकन्धर अर्धचक्री राजा, चाहे उसपे अनुशासन था ॥
जिनदेवको झुकता शीश भला,नर को कैसे झुक सकता था ।
बाली दीक्षा ले चला गया, सुग्रीव राज अब करता था ॥
रत्नश्रवा सुत अभिमानी की, रावण बनने की सुनो कथा ।
एक बार चढ़ा पुष्पक पर वह;जब उत्तर दिशिको जाता था ॥
कैलाश पड़ा था रस्ते में उसकी इक चोटी पर देखा ।
मुनि बाली बैठे ध्यानमग्न, अभिमान मग्न इसने देखा ॥
फौरन ही उतर पड़ा वहाँ पर,गिरिको हाथों पर उठा लिया ।
निज शक्ति और विद्याबलसे,झूले सा उसको झुला दिया ॥

टूटे झरने, गिरि खन्ड हुए, भूकम्प हुआ, दुनियाँ कांपी।
मुनि का भी छूटा ध्यान, ज्ञान में देखा था रावण पापी ॥
पृथ्वी का कष्ट मिटानेको, खन्डित तप अपना कर डाला।
पग अंगुष्ट का दे भार, दबा दशकन्धर रोवण कर डाला।
वह रोवण रावण बना, निकल बाहर आ मुनि वन्दना की।
थे राग-दोष से रहित मुनि, उपदेश किया उन लंकपति ॥
रावण लंका को चला गया, अब किष्किन्धा का हाल सुनो।
सुग्रीव राज जहां करते थे, अब उनका सब अहवाल सुनो ॥
इनके सुपुत्र अंगद, अंगज और चन्द्ररश्मि बाली सुत थे।
रानी का नाम सुतारा था, दिन हंसी खुशी से कटते थे ॥
सब संग मिल करता राजकाज, उत्तम विधिसे जीवन चलता
पर किसे पता कर्मोंकी गति, था भाग्य खड़ा उन पर हंसता ॥
था एक सहस्त्रगति विद्याधर, बचपन में देख सुतारा को।
इच्छा थी इसको परणालूं, पर मिली न उसे सुतारा वो ॥
वैताली विद्या करी सिद्ध, और अपने मन में पाप लिए।
सुग्रीव रुप को धारण कर, आया मन में अभिलाष लिए ॥
पापी का पाप सहाय हुआ, सुग्रीव राज से बाहर थे।
तारा ने उठ सत्कार किया, आये उसके प्राणाधन थे ॥
लेकिन जब वार्तालाप मध्य लक्षण प्रकृति कुछ मिली नहीं ॥
शंकित मन तारा सोच रही, यह मायावी मम-पति नहीं ॥
और उसी समय सुग्रीव बाहर से महलों में आ जाते हैं।

देखा दोनों को एक साथ, सब अचरज में भर जाते हैं ॥
है असल कौन, अरु नकल कौन, निर्णय न कोई कर पाता है ।
तारा की शील सुरचा को, मारग अपनाया जाता है ॥
तारा भवनों में दोनों ही सुग्रीव नहीं जाने पाये ।
और शील सुरचा की खातिर, पुत्रों ने पहरे बिठलाये ॥

दोहा—इधर असल सुग्रीव जो, फिरते हैं वन माय ।
बलशाली के सामने; नहीं कुछ पार बसाय ॥
हनुमान निज मित्र जो, बुला लिया सुग्रीव ।
परख नहीं वह भी सका, कौन असल सुग्रीव ॥

धुन—वैराग्य के रंग में रंग दे

सुग्रीव चले खरदूषण पे, माग में सुन ही लिया है ।
अवधेश कुमर ने मार दिया; ये भी तो सहारा गया है ॥
क्यों न लचमण पर चलुं, उससे भी बलशाली है वह ॥
इकले ने सबको हराया, कोई अवतारी है वह ।
चलदिए कुछ दिन में ही पाताल पुर में आए हैं ।
सब हाल सुन कर राम ने, सुग्रीव मित्र बनाए हैं ।
यह मुझसे ज्यादा दुखी, गैरने सब कुछ छीन लिया है ॥
अवधेश कुमार ने मार दिया, यह भी सहारा गया है ॥
भगवान की साची में दोनो ने वचन ऐसे दिए ।
दिलवाऊँ रानी, राज्य भी; सुग्रीव से रघुवर कहे ॥
उसको निकालु मार कर जो गैर घट में आ गया ।
इस बाद सीता सुधि मंगाओ, हमको ये गम आ गया ॥

इतना करना उपकार मित्र, दुःख तुमको बता दिया है।
अवधेश कुमर ने मार दिया यह भी तो सहारा गया है॥
दोहा—जो सीता सुधि नहीं मिली, दीक्षा लें बन जांय।
सीता के बिन मित्र हम, रहकर क्या सुख पांय॥
सुग्रीव कहा स्वीकार है सब, मुझको कोई इंकार नहीं।
यदि सात दिनोंके अन्दरमैं, सीताकी सुधि मंगवाऊं नहीं॥
तो अगनि में प्रवेश करूं, यह वचन आज मैं देता हूँ।
हे रघुराई अब आप चलें, सब सेना संग मैं लेता हूँ॥
सब मिलके चले किष्किन्धापुर, श्रीराम संदेशा भिजवाया।
सुनते ही युद्ध को सजकरके, नकली सुग्रीव निकल आया॥
दोहा—असली नकली भिड़ गए, बहुत हुआ संग्राम।
दूर ही से देखें खड़े, लखन और श्री राम॥
चौ०—लखन और श्रीराम देखते, नहीं पहचान में आए।
लड़ते-लड़ते नकली ने असली पै वार चलाए॥
मूर्छा खा सुग्रीव गिरे हैं, होश रहा कुछ नाहीं।
नकली समझ शत्रु को गर्हित, हर्ष करे मन माहीं॥
मैं०—लौट किष्किन्धापुर आया, जीत का बाजा बजवाया।
उधर सुग्रीव उठाया,
पहुँची सेना राम पास, मिल सबने होश कराया॥
दोहा—चेत हुआ सुग्रीव को, कहे राम से वीर।
शत्रु छोड़ मेरा दिया, दिल नहीं धरता धीर॥

चौबोला

दिल नहीं धरता वीर, उसे वापस, क्यों जान दिया है।
राम कहें कुछ शेष है आयु, नहीं पहचान किया है॥
अब विश्राम करो तुम भाई, हम लड़ने जायेंगे।
शत्रु तुम्हारे को जाकर के, मार के हम आयेंगे॥
मैदान—न मन में चिन्ता करना, ध्यान भगवान का धरना

करुँ कल ही मैं सफाई।

देर नहीं कुछ होने पावे, कैसे देत दुहाई॥

दोहा—दूजे दिन मैदान में, पहुँच गए श्रीराम।
उधर नकल किष्किन्धपति, लेकर सैन तमाम॥

श्री राम सामने आते ही; वैताली विद्या निकल गई।
बलभद्र के दर्शन पाते ही, वह अपनी लाज बचाय गई॥
विद्या के जाते विद्याधर, विद्याधर ही रह जाता है।
अपने बदले स्वरुप को लख, भौचक्का सा रह जाता है॥
साहसगति को यों खड़ा देख, आश्चर्य हुआ गुस्सा आया।
राजा, प्रजा और सैन सभी ने, पापी पर हमला ढाया।
फिर रामचन्द्र ने धनुष चढ़ा, इक ऐसा वार किया भारी।
धड़ से सर अलग हुआ उसका, चहुँ ओर रामकी जयकारी॥
सुग्रीव को दीना राज पाट, महलों में जाकर फूल गया।
जो वचन राम को दीना था, उसको बिलकुल ही भूल गया॥
श्रीराम ने सोचा, सीता को ढूंढा, लेकिन कहीं पाई नहीं।

और दुखी हुआ उसका प्राणी,इसलिए पास आया ही नहीं
या महलों में रहकर ही वो, अपने वचनों को भूल गया।
यह सोच रामका विरही हृदय,दुखके झूलमें झूला गया॥
लक्ष्मण ने देखा भाई की, आँखो से पानी जारी है।
सब समझ गया तैयार हुआ, कर में ले तेज दुधारी है॥
चल तीव्र चाल से क्रोध भरे, इक दम महलों में जाते हैं।
साक्षात काल सम देख उन्हें सुग्रीव खड़े थर्राते हैं।
झटसे ही चरणों में लोटे, हर बार ही क्षमा मांगते हैं।
स्वामी मुझको नहीं याद रही, हम दिलसे क्षमा चाहते हैं।
बोले लक्ष्मण श्री राम ने जो, तेरे शत्रु के साथ करी।
वैसी तेरे संग करने को, तलवार हाथ में है धारी॥
सुग्रीव की जितनी राणी थी, देवर मिस उन्हें मनाय रही।
आरती उतारें लक्ष्मणकी;और भूल की याद दिलाय रही॥
दोहा—किया क्षमा सुग्रीव को, लाए साथ लिवाय।
राम चरण में गिर कहे, भूल हुई, रघुराय॥
विद्याधर सैना सहित सारे लिये बुलाय,
जाओ चहुँ दिशमें सभी माताकी सुधि लाव।
मैं अपनी जान गंवा दूंगा, जो सीता की सुधि ना पाई।
उपकार राम ने बहुत किया, माता की खोज करो भाई॥
सेनापति मंत्री और सेना, सब चारों दिशि को जाते हैं।
सुग्रीव भी जाने की खातिर, बीमान एक मंगवाते हैं॥

नभ में चल बहु तालाश किया, सुग्रीव वहाँ पर आया है।
जहाँ रत्नजटी विद्याधर था, उसने सब भेद बताया है॥
रावण ने हरण करी सीता, मेरी भी विद्या हर लीनी।
ना भामंडल को खबर करूँ, ऐसी यह दशा है कर दीनी॥
सुग्रीव दिलासा देकर के, श्रीराम पास ले आते हैं।
वह उठ हर्षित हो रत्नजटी को, अपने हृदय लगाते हैं॥

दोहा—रत्नजटी कहने लगा, सुनिये श्री रघुवीर।
मैं जाता था कार्य वश, भामन्डल के तीर॥

गजल

सुनी आवाज रोने की, सती सीता की मैं स्वामी।
हरण कर ले गया रावण, जो है लंकापति नामी॥
वो कहती जारही हा राम! हा लक्ष्मण! हा बलधारी।
बचालो दुष्ट से आकर! नीर नैनों से था जारी॥
किया अन्याय पापी ने, हरण कर ले गया उनको।
तड़फने और बिलखने की, सुनी मैंने थी चित्कारी॥
सुनी आवाज स्वामी की बहन है यह समझ करके।
करा रावण से युद्ध, उसने हरी विद्यायें मम सारी॥
गिरा नभ से पड़ा पर्वत पे, एक टापू में जाकर के।
है धन्य सुग्रीव, जिन मिस आपके दर्शन मिले भारी॥
वह कहती जा रही हा राम' हा लक्ष्मण हा बलधारी॥

दोहा—रामचन्द्र ने जब सुना सीता का सब हाल।
लंकेश्वर पर क्रोध कर, आँखें हो गई लाल॥

सभा बीच कहने लगे, बतलाओ सब हाल।
लंका नगरी है किधर, चढ़ जावें तत्काल॥

धुन—राधेश्याम

इतनी सुनकर के विद्याधर, सब एक को एक देखते हैं।
मुंह से नहीं बोल निकलता है, हरएक मौन गह लेते हैं॥
तब राम कहें डरते हो क्यों, कुछ तो बोलो मेरे भाई।
सुधि मिलनी थी मुश्किल हमको, अबतो समझो सीता आई॥
बोले विद्याधर सुनो राम, जिस नाम से सब भय खाते हैं।
रावण तो रावण चित्र भी लख, सब प्राण रहित हो जाते हैं॥
वो तीन खन्ड का राजा है, क्या उसका हाल बताएं हम।
उन इन्द्र का मान घटाया है, कैलाश उठाया है इकदम॥
जब लक्ष्मण क्रोधित होकर के, सबसे गर्जन कर के बोले।
गर ऐसा बलशाली रावण, क्यों चोरों की भांति डोले॥
लड़ कर सीता को लेजाता, हम जानते उसे बहादुर हैं।
जो पर नारी चोरी करता, कोई उससे ज्यादा कायर है?
यह सुनकर सबही मौन रहे, भय भरे उपाय ये सोच कहें।
हम लायें बहुत सी कन्यायें, गुण रूपमें अनुपमतायें लहें॥
उनको श्री राम से परणावें, सीता का हट छुड़वा दीजे।
इस तुच्छ बात के कारण क्यों, मृत्यु का आह्वाहन कीजे॥
यह निश्चय दिलवाएं स्वामी, इसमें नहीं देर लगायेंगे।
विनती करते आशा है हमें, स्वीकार आप कर पायेंगे॥

दोहा—सुन कर यह श्री राम ने, कहे वचन गम्भीर।
मेरा निश्चय भी सुनो, धारण कर मन धीर॥

स्वर्गीय अप्सरायें लाओ, उनमें भी है कुछ रुचि नहीं।
सीता के बिन सूना जीवन, बिन उसे छुड़ाये चैन नहीं॥
तुम रहो मगन, ले धनुष हाथ, हम दोनों भाई जायेंगे।
विश्वास हमें अपने ऊपर, सीता को छुड़ा ले आएंगे॥
सिर धुन कर जामवन्त बोला, इक बात तुम्हें बतलाते हैं।
रावण ने केवली से पूछा, मम मृत्यु कब तुम्हें बताते हैं॥
मुनिवर ने उसे यह बतलाया, जो कोटि-शिला उठायेगा।
वह हो नारायण अवतारी, उन हाथों मारा जायेगा॥
सुनते लक्ष्मण उठ खड़े हुए,यह कहते कोट-शिला चलिए।
मैं उसको अवश्य उठाऊँगा,मुनि वचन सत्य निश्चय करिये॥
सब विद्याधर और राम लखन;मिल कोटिशिला पर आते हैं।
आश्चर्य मई उस पर्वत की, पूजा मिल सभी रचाते हैं॥
लक्ष्मण जी मंत्र नवकार जपें,और सिद्धों का स्मरण करते।
पीताम्बर और हार कुन्डल, भुजबन्धनादि कैसे सजते॥
पूजा भी शिला के करते हैं; घोंटों पर्यन्त उठाते हैं।
देवों ने जय जय कार किए, आकाश में फूल बरसते हैं॥
सब राजा भी हर्षित होकर, श्री राम लखन की जय बोले।
इन शक्ति है अनुपम भाई; क्या इनका कोई बल तोले॥
रावण ने तो विद्या बल से, कैलाश को जाय उठाया था।

उनकी शारीरिक शक्ति लख,आश्चर्य सभीको आया था ॥
सब तीर्थों का बन्दन करके, किष्किन्धा पुर में आते हैं ।
सीता की सुधि ले आने को; हनुमान जी को बुलवाते हैं ॥
सोचा सबने बलवान है वह;गुणवान और वर्म-शरीरी भी ।
वह लंका में जा सका है; समझाएगा आखिरी भी ॥
शायद रावण भी मान जाय, सीता को लेकर आयेगा ।
मायामई कोट बनाया है, वो ही लंका में जायेगा ॥

दोहा—श्री राम से भेंट हित, आए श्री हनुमान ।
देखत ही मोहित हुए, बोले स्तुति गान ॥
जैसे थे मैंने सुने, सुन्दर तेज स्वरूप ।
वैसा ही देखा तुम्हें, हे रघुकुल के भूप ॥

विधना ने खाली समय पाय, सांचे में तुमको ढाला है ।
है स्वर्ण-वर्ण नख-शिख सुन्दर,मन देख हुआ मतवाला है ॥
इस नीलाम्बर परिधान मध्य, स्वर्णोपम किरणें फूट रहीं ।
लख सौम्य प्रकृति गंभीर भाव,मानस में भक्ति मचल रही ॥
घनश्याम अंक में ले सूरज, जैसी छवि निज में लाता है ।
लक्ष्मण का वैसा रूप देख, मन भर उमंग में आता है ॥
क्या कहूँ प्रशंसा तो रघुवर, सज्जन की पीछे होती है ।
लेकिन प्रत्यक्ष ही कहने को, यह वाणी विचलित होती है ॥

दोहा—सुन कर हनुमत के वचन, प्रेम सने गंभीर ।
मिले राम, पुलकित हृदय, गिरा खुली गंभीर ।

है हनुमान क्या गुण गाते, बिन सीता हम मुर्झाए हैं ।
यह कार्य करो तुमही भाई, इसलिए तुम्हें बुलवाऐ हैं ॥
यह सुनकर के श्रीशैल तभी, तैयार हुए हैं जाने को ।
श्रीराम मुद्रिका देते हैं, सिय को विश्वास दिलाने को ॥
ये कहा-'सती से जा कहना, हम शीघ्र वहां पर आयेंगे ।
कष्टों को धर्म सहित सहना, हम तुमको आन छुड़ायेंगे ॥
है अधिक तुम्हें कहना ही क्या, तुम शील धर्म पालनहारी ।
चूड़ामणी उसकी ले आना, मम हाल की वह जाननहारी ॥
लेकर के कुछ सेना संगमें, हनुमान विमान से जाते हैं ।
रस्ते में एक बनी अन्दर, वह अग्नि लगी लख पाते हैं ॥
दो चारण-मुनि अग्नि में थे, वहां उनको जान बचाई है ।
लेकर सागर से खारा जल, मूसलाधार वर्षाई है ॥
दोहा—फिर मुनि चर्णों जाय कर, बैठ गए हनुमान ।
इतने में कन्याएं कुछ, पहुँची वहाँ पर आन ॥

गजल

किया उपकार हम सबका कहें हनुमान से सारी ।
हमारे कारण मुनियों को भी, उपसर्ग था भारी ॥
जो साहसगति को मारेगा, मुनिश्वर ने बताया है ।
ये पूछा था पिता जी ने, बनें हम उसकी वर-नारी ॥
इसी कारण करें तप कुछ, दिनों से वन में रहकर हम ।
इक अँगारक हमें चाहता, लगाई अग्नि यहाँ भारी ॥

दोहा—हनुमान ने राम का, सारा हाल सुनाय।
कन्याओं के पिता पे, दीना दूत पठाय॥

गंधर्वराज पुत्रियों सहित, श्रीराम पास में आता है।
रघुवर से परणा कर उनको, फिर लौट निज नगर जाता है॥
सुग्रीव की तेरह कन्यायें, स्वेच्छा से राम को वरती हैं।
मिल रामका सब मन बहलाती, नृत्य गान से सेवा करती हैं॥
कोई चरणों की सेवा करती, कोई मीठी बात सुनाती है।
रघुवर न हँसे ना कुछ बोले, कोई बात न उन्हें सुहाती है॥

दोहा—मौन रहें श्रीराम जी, सीता के वैराग।
बोले कभी तो जानकी, निकलें ऐसे ही राग॥
इधर राम की यह दशा, उधर बढ़े हनुमान।
लंका के परकोट पर, आकर रुका विमान॥

सोहनी-छन्द

जाकर उधर हनुमान का, वीमान कोट पे थम गया।
लंका की चारों ओर से ही, जो था रक्षा कर रहा॥

अन्तरा

सोचा ये विद्या जिन लगाई, उसका मैं मर्दन करूँ।
मायामई इस कोट को, अब तोड़कर चूर्ण करूं॥
लेकर गदा को हाथ में, बख्तर पहन विद्या मई।
मुख में गये पुतली के जो, थी द्वार रक्षा कर रही॥
फुंकारते अजगर हजारों, अग्निकण बरसा रहे।
साहस किसी में था नहीं, जो सामने आ दम भरे॥

पुतली के अन्दर पैठकर, चीरा उदर इक आन में।
पुतली का स्वामी वज्रमुख, तब आगया दर्म्यान में ॥
मारा उसे तब उसकी, पुत्री आई लंकासुन्दरी।
उससे हुआ रण घोर, जिसमें मात खाई सुन्दरी ॥
मोहित हुई हनुमान पर, इन संग ब्याह रचाई है।
सब कोट का विध्वंस कर, जाने की तब ठहराई है ॥

दोहा – लंका के अन्दर पहुंच, गये विभीषण पास।
कहा सिया सुध को, सखे आया हूं तुम पास ॥

हे भाई तुमने रावण को, अब तलक नहीं समझाया है।
मर्याद रहित है काम किया, अपने कुल कलंक लगाया है॥
तब कहा विभीषण ने जो, कोई भी उनको समझाता है।
वह नहीं किसी की सुनते हैं, गुस्सा उनको आ जाता है॥
सुन; यह कहकर हनुमान चले, माता का दर्शन पाना है।
त्रैलोक्य-सुन्दरी हैं कैसी, जिन रावण का मन छीना है ॥
जब देवारण्य मध्य पहुंचे, दूर से जानकी दृष्टि पड़ी।
कर पर कपोल, शोचित मुद्रा, थी विद्याधरी समीप खड़ी ॥
काले काले घुंघर वाले, मुखड़े पर केश थे झूम रहे।
बिन संवरें, बिखरे से, मैले वह धूल धूसरित होय रहे ॥
ग्यारह दिन का उपवास-युक्त तन सारा ही कुम्हलाय रहा।
नैनों से आँसू झरते हैं, और साँस भी रुक २ आय रहा ॥
इतने पर भी रति रम्भा सी, छवि वर्णन करे कौन इनकी।

नहीं तीन लोक में इन सम, नारी, शुद्ध भावना है मनकी ॥
जैसे श्री राम को देखे हैं, ऐसी ही हैं अद्भुत माता ।
मैं राम से इन्हें मिलाऊँगा, तभी ही पाऊँगा सुखसाता ॥

दोहा—देख सिया के हाल को, सोच रहे हनुमान ।
विरह दिया है क्यों इन्हें, क्या चाही भगवान ॥
दबे पाँय से बढ़ रहे, मुद्री दीनी डाल ।
छिप करके देखने लगे, सब माता का हाल ॥

गजल

अंगूठी देख सीता जी के हृदय में हर्ष आता है ।
सुना रावण ने चेटी से, तो मन्दोदरि से कहता है ॥
"कहा दासी ने आकर के, प्रफुल्लित आज सीता है ।
प्रिय जाकरके समझाओ, मान जायेगी सीता है ॥"
सभी सजधज के आई हैं, ये कहतीं जानकी जी से ।
हे रानी आज तुम खुश, देख हमको हर्ष होता है ॥
कृपा जो आज तुमने की, सभी जाती हैं बलिहारी ।
उठो अब महल में चलिए, नहीं हठ अच्छा सुकुमारी ॥

दोहा— सीता बोली पति की, पाई मुद्रिका आज ।
उसे देख हर्षित भई, तुम क्या जानो राज ॥

हे भाई जो मुद्री लेकर, उपकार करन को आया है ।
आकर के बहन को दर्शन दो, क्यों मन मेरा तरसाया है ।
मन्दोदरि समझी बाय लगी, अन-जल जो छोड़े बैठी है

नहीं कोट को भेद कोई आवे,तू कर रही नाहक हेटी है ॥
इतने में हो हनुमान प्रकट, सीता के पास में जाते हैं ।
मंदोदरि देख आश्चर्य करे, क्या सुधि पाने को आते हैं ॥
हनुमान से कहन लगी ऐसे, तुम हमरे सम्बन्धी भारी ।
गुणवान बड़े और बलशाली, क्या अक्ल गई है सब मारी ॥
तुम राम दूत बन कर आये,क्या लज्जा तुम्हें न आती है ।
यदि रावण को मालूम हुआ, तो जान मुफ्त में जाती है ॥
हनुमान ये सुन के कहने लगे,लेकिन मुझको अचरज भारी ।
राजा मय की तुम पुत्री हो, त्रिखंड-पति की हो नारी ॥
लेकिन पर-स्त्री चोर की तुम, क्यों दूती बनकर आई हो ।
क्या उसको रोक नहीं सकती, आते भी ना शर्माई हो ॥
जो पर नारी-रत स्वामी हो, मर्याद रहित जो राज्य करे ।
कितने दिवसों अन्याय चले,निश्चय वह कल या आज मरे ॥
यह सुन मन्दोदरि कुपित हुई,मन ही मन में कुछ सोच रही ।
क्या क्या अपमान करूं इसका,हृदय में ये ही तोल रही ॥
दोहा—इतने में बोली सिया, हे भाई बतलाओ ।
मम स्वामीके पास हैं, तुम सम कितने राव ॥
चोबोला—तुम सम कितने राव, और यह मुद्री कैसे पाई ।
मेरे स्वामी जीवित भी हैं, हाल कहो समझाई ।
लक्ष्मण गए युद्ध के कारण,सकुशल वापस आए ?
पहले बोली मंन्दोदरी, क्या तूने ना सुन पाए ।

मैदान

पवन का ये पुत्र कहाता जी। बहादुर नहीं घबराता जी।
न इस सम और है कोई।
अच्छे अच्छे योद्धाओं को इसने मात खिलाई॥

दोहा—इतने में हनुमान जी, बोल उठे तत्काल।
हे माता सुन लीजिये, सारा सच्चा हाल॥

तुम बाद मिले सुग्रीव, राम ने साहसगती को मारा है।
खरदूषण हनन किया लक्ष्मण, श्रीराम के वही सहारा हैं॥
मुझको सुधि लेने को भेजा, तुम बिन श्रीराम सदा रोते।
हे मात तुम्हारे बिना प्रभू, भर निद्रा कभी नहीं सोते॥
इतनी सुन कर मंदोदरि ने, श्रीराम को कहे वचन खोटे।
वो दोनों दीन भिखारी से, क्या हस्ती लंका को जीतें॥
पति की निंदा सुनकर सीता, क्रोधित हो ऐसे कहन लगी।
अब दोनो भाई आवेंगे, सच मानो गई लंक डिगी॥
लक्ष्मण देवर के हाथों से, तुमको रानी विधवा होना।
यह वचन केवली दुर्निवार, मुझको है क्या लेना-देना॥
जिसने खरदूषण को मारा, शंबूक हना और खड्ग लिया।
उस अद्भुत भारी कोटिशिलाको जो घोटों तक उठा लिया॥
उसके हाथों अय मय-पुत्री, तव-पती अवश्य हनन होगा।
जाकर समझाले आज पति, लंका का नहीं पतन होगा॥
मंदोदरि आग बबूला हो, सीता को मारने धाई है।

अठ-दस हजार राणियाँ सभी, उस पीछे पीछे आई हैं॥
हनुमान ने बीच में आकर के, सीता के प्राण बचाए हैं।
अपमान हुआ मंदोदरि का, सब हाल पति को सुनाए हैं॥
दोहा—इधर सिया से कह रहे, महा बली हनुमान।
भोजन अब कर लीजिए, पूज्य मात गुण खान॥

तर्ज—नागिन (मेरा मन डोले)

हे मात सिये, दुख करो न हिये,
अब कर लीजे जलपान जी, विनती मान हमारी जी।
ये लंका नगरी, राम लेवें सगरी, अपनी हो लीजे मान जी।
रजधानी ये तुम्हारी जी। हे मात सिये···।टेक।
राम लखन आवें, सेना संग लावे, शीघ्र छुड़ावे तुम्हें आनके
रावण की मृत्यु आई, लखन से मारा जाई कोटिशिला भी
ठाई जाय के। माता मेरी कोटिशिला भी ठाई जायके।
राजा सब मान करें, आके प्रणाम करें, नारायण को जान जी।
विनती यह मानो हमारी जी। हे मात···॥
सिया ने विचारा, नियम ये धारा, पति की सुधि जबपाऊँगी
अनजल पाऊँ, नहीं बिसराऊँ, तन मन से मैं निभाऊँगी॥
प्रभू जी तन मन से मैं निभाऊँगी।
हो गई पूरी, नहीं है अधूरी, वचन किया प्रमाणजी। विनती।
भोजन लाए, शुद्ध बनवाए, हनुमत खड़े कर जोर के।

सिद्धों का ध्यान किया, व्रत को है पूरा किया ।
पति को हृदयमें धार के । प्रभू जी पति को हृदय धार के ।
ग्यारह दिनमें, धैर्य धारा मनमें, अब किया सिया जलपान जी ।
विनती मानो हमारी जी ॥ हे मात सिये ॥टेक॥
सीता सती के, धैर्य की महिमा, इन्द्र सुरासुर गावें ।
हनुमान आश्चर्य चकित हो, सिया जी को शीश झुकावें ।
प्रभू जी सिया जी को शीश झुकावें । हर्षित हैं सभी,
प्रभु महिमा बड़ी, 'दासी' भी धरे प्रभु का ध्यान जी ।
विनती मानो हमारी जी । हे मात सिये ॥ टेक ॥
दोहा—कहन लगे हनुमान जी, सुनो मात मन लाय ।
काँधे चढ़ चलियें मेरे, राम से देऊँ मिलाय ॥
सीता बोली, मेरे भैया, पति आज्ञा बिन कैसे जाऊँ ।
तकदीर में जब दर्शन होंगे, तब ही दर्शन करने पाऊँ ॥
रावण को खबर मिली ये जब, हनुमान मुद्रिका लाया है ।
वो रामचन्द्र का बना दूत, सीता सुधि लेने आया है ॥
सेनापति को यह हुक्म दिया, जो बागवान वहाँ रहते हैं ।
जो देशद्रोही वहाँ आया है, क्यों उसको नहीं पकड़ते हैं ॥
आज्ञा मिलते ही दौड़ पड़े, क्या सेना और क्या बनमाली ।
हनुमान पे कोई शस्त्र न था, तदबीर और ही कर डाली ॥
जो वृक्ष लगे उद्यान में थे, उनमें से कुछेक उखाड़ते हैं ।

जो कोई भी समक्ष आवे, उनसे ही उसे मारते हैं।
कुछ पैरों से, कुछ हाथों से, सब सैन्य नष्ट कर डाली है।
कुछ भाग गए, कुछ सिसक रहे, और कुछने मुक्ति पाली है॥
जब भाग गई सारी सेना, उद्यान नष्टि को टूट पड़े।
द्रुम, लता, वृक्ष आदि सारे, पल में उखाड़ के नष्ट करे।
जो सुन्दर महल बने थे वहाँ, उनको ढाहा और फोड़ दिये।
क्या वापी सरोवर एक एक, सबको ही कर विसमार दिए॥
फिर चले सड़क, बाजारों में, दूकाने तोड़ फोड़ डाली।
प्रजा सारी भयभीत हुई, भगवान कौन ये बलशाली॥
थे महल स्वर्ण और रत्नों के, सब बिखर पड़े हैं लातो से।
जो कोई सामने आजावे, वो पीस डालते हाथों से॥

दोहा—रावण क्रोधित हो रहा, सुनकर सारा हाल।
मेघनाथ को भेजता, जा पकड़ो तत्काल॥
इन्द्रजीत भी चल दिया, सेना संग अपार।
बलशाली दोनों बड़े, रावण राजकुमार॥
युद्ध हुआ घनघोर था, देखें सब नर नार।
नाग-पाश में बांध कर, ले आए दरबार॥

श्री हनुमान को लेकर के, रावण के पास में आते हैं।
रावण लोहे की सांकल से, पोरी पोरी बंधवाते हैं॥
यह कहा नीच कायर आकर, क्यों आफत यहां मचाई है।
हो विद्याधर बन भूमि-चरी, का दूत लाज ना आई है।

ये आज हमें मालूम हुआ, बेशक तू पवन का पुत्र नहीं।
नहीं श्रीराम बनवासी का, हरगिज भी बनता दूत नहीं॥
ओ मूर्ख आज तुझको तेरा, यहाँ काल खींचकर लाया है।
जो बनवासी का पायक हो, बन दूत यहाँ पर आया है॥
दोहा—हनुमान सुन कर हंसे, कहे मन्द मुसकाय।
क्या जाने मृत्यु तेरी, मुझसे पहले आय॥
अरे तुझपे होनी है सवार, बेकार रहेगा समझाना।
नहीं शर्म रही, नहीं लाज रही, चल रहा तू अपने मनमाना॥
चोरी से परनारी लाया, मर्यादा का भी पास नहीं।
निज कुलको किया कलंकित है, अपने पर भी विश्वास नहीं॥
अब राम लखन आकर तेरा, कुछ दिन में नशा उतारेंगे।
पीछे पछताते हैं पापी, पहले तो कभी न हारेंगे॥
दोहा—भरा दशानन क्रोध में, सुन कर ऐसे बैन।
कायर कैसा बंध रहा, फिर भी है नहीं चैन॥
चौ०- फिर भी नहीं है चैन, इसे लंका में खूब घुमाओ।
बाल-वृद्ध सब थूके इस पर, यों अपमान कराओ॥
सुन हनुमत ने तोड़े बन्धन, और गगन में आये।
तोड़े रंग महल रावण के, भवन बहुत से ढाये॥
शे०—उजड़ गई सोने की लंका, हुई मन रावण के शंका।
प्रतीक्षा राम को भारी।
लिया सिया आशीष, 'शेल' आ कथा सुनाई सारी॥

दोहा—हाल कहें हनुमान जी, नैनों वर्षे नीर ।
दुखी बहुत माता वहाँ, दुर्बल हुआ शरीर ॥

गज़ल

सुना जब हाल रघुबरने, नीर नैनो से जारी है ।
राम की होके पटरानी, रहे कैसी दुखारी है ॥

अन्तरा

उदय कर्मों का क्या आया, विरह हमने जो है पाया ।
देख चूड़ामणी सीता का, सब सुध बुध बिसारी है ॥
दुखी मन राम का देखा, धैर्य लच्मण ने बंधवाया ।
छुड़ाएं शीघ्र माता को, यही मर्जी हमारी है ॥
चढ़ो लंका पे सब मिल कर, नगारा कूंच का दे दो ।
कहा लच्मण ने, मिल सबने, गमन की की तैयारी है ॥
चली जिस समय सज सैना, बहुत से शुभ शकुन देखे ।
हुए हर्षित हृदय में सोच, जय निश्चित हमारी है ॥
बहुत से मार्ग के राजा, जो रावण के थे प्रतिपच्ची ।
लड़े; हारे; बने साथ जीत निश्चित तुम्हारी है ॥

दोहा—हंस द्वीप में आनकर, डेरे दीने डाल ।
भामण्डल की राह में, ठहरें दिन दो चार ॥
खण्ड चार पूरा हुआ, बोलो जय महावीर ।
जिनबल पर 'दासी' रचे, पंचम-खण्ड गम्भीर ॥

पंचम-खण्ड

युद्ध काण्ड—१

मंगला चरण

दोहा—अजित जीत ज्यों कर्म को, पहुँचे मुक्ति द्वार।
विजय प्राप्त कर राम त्यों, पाये सिय मनुहार॥
यही भाव मन में लिए, प्रेम सहित एक बार।
सब मिल बोलो जोर से, अजित नाथ जयकार॥

कथा आरम्भ

लंका में उधर विभीषण जी, दशकंधर को समझाते हैं।
सीता को वापिस कर दीजे, अपयश क्यों आप कमाते हैं।
हैं राम लखन भी बलशाली, उनको तुम छोटा मत जानो।
राजा भी आन मिले सारे, यह सत्य बात मेरी मानो॥
सुन करके इन्द्रजीत गरजा, रावण का पाय इशारा है।
घर में जाकर बैठो छिपके, गर जीवन लाय उधारा है॥
तुमको किसने आज्ञा दी है, जो बीच में आके पड़ते हो।
खाते हो नमक हमारा अरु, यों हुक्म उदूली करते हो॥
गर इतना प्रिय है राम तुम्हें, तो उससे जाकर मिल जाओ।
मत कायरताकी बात करो, जा खुद उन पायक बन जाओ।

रावण ने गर्ज कहा इसको दरबार से बाहर कर दीजे।
लंका से बाहर हो जावे ना, आने पाए वचन लीजे॥
अपमान जो हुआ विभीषण का, सेना सारी लेकर के चला।
पहुंचा जाकर के हंस-दीप, उत्साह सहित रघुवर से मिला॥
श्री राम ने उर से लगाया है, और वचन हुए हैं आपस में।
यदि प्राण जाँय, तो चले जाँय ना आए फर्क मित्रता में॥
इतने में भामण्डल आया, इक अक्षौहिणी सैन्य लेकर।
और एक अक्षौहिणी सबका था, अब लंकाको जाते मिलकर॥
जहाँ होना था संग्राम युद्ध, भूमि पर फौरन आए हैं।
बाजे बजते रावण ने सुने, फूले नहीं अंग समाए हैं॥
सब राजों को बख्तर बांटे, शस्त्रों को भी तो देते हैं।
और बड़े बड़े राजा आकर, रावण का शरणा लेते हैं।
मंत्री, सेनापति और सैनिक, घर-घर से विदाई लेकर के।
आ जुटे सभी संग्राम बीच, प्राणों को हथेली पे रख के।
जिस समय दशानन जाने लगा, अपशकुन हुए हैं अति भारी।
सब जानते भी तो हैं लेकिन, होनी ने सबकी मति मारी॥
अनगिनती राजा इधर के हैं और उधर के भी हैं बलशाली।
अब युद्धके बाजे बजने लगे और पवन चली है मतवाली॥

आल्हा-छन्द

राम की सैना में से सबसे हनुमान जी आगे जाय।
भामण्डल सुग्रीव चले हैं, योधा एक से एक सिवाय॥

उधर से कुम्भकरण आए हैं, जो त्रिशूल को रहे घुमाय।
मेघनाथ और इन्द्रजीत भी, सब से आगे पहुँचे जाय ॥
राक्षस-वंशी योद्धाओं से, बानर वंशी हट कुछ नांय।
पवन पुत्र तब बढ़े अगाड़ी, सेना काँप २ रह जाय ॥
बहुत देर बीती लड़ते ही, कोई हार मानता नाय।
रावण-पक्षी मरे बहुत से तब मन सोच सोच रह जाये।
इन्द्रजीत और मेघनाथ, यह कैसे इन काबू में लायँ ॥
भामण्डल सुग्रीव के ऊपर, नागपाश फिर दिया चलाय।
दोनों बंधकर नागपाश में, पड़े भूमि मूर्छित हो जांय ॥
कुम्भकरण ने मायाबल से, हनुमान को बाँधा आय।
महाबली हनुमान उसी दम, झटका देकर के छुट जांय ॥
तभी विभीषण रामचन्द्र से, कहने लगे बहुत समझाय।
दो ही राजा थे सर्वेश्वर, दोनो पड़े भूमि पर आय।
मैं जाकर इनको रोकूंगा, तुम दोनों को लाओ उठाय ॥

दोहा—भामन्डल सुग्रीव को, लक्ष्मण लाए उठाय।
सोचें किसी प्रकार से, इन्हें होश में लांय ॥

श्री राम ने कहा तभी भैया, गरुड़ेन्द्र को आज बुलाता हूं।
यह कार्य उन्हीं से सिद्ध होय, मैं वचन की याद दिलाता हूँ॥
इतना कहना रघुवर का था, गरुड़ेन्द्र का आसन कांप उठा।
सब अवधिज्ञान से जान लिया, श्रीराम का कोई कार्य घटा ॥
एक देव को फौरन भेजते हैं, दो विद्याओं को देकर के।

श्रीराम कटक में आता है, बहु दिव्य शस्त्र वह लेकर के ॥
थी सिंह-वाहिनी रामको दी, और गरुड़-वाहिनी लक्ष्मण को।
बलभद्र को हल मूसल सोंपे, त्रिशूल दिया नारायण को ॥
दो छत्र श्वेत और दो कुन्डल, मणिमाला सुन्दर छवि छाई।
श्रीराम लखन धारण करते, शोभा नहीं वर्णन की जाई ॥
उस गरुड़-वाहिनी विद्या ने, उस नागपाश को काट दिया।
सुग्रीव और भामण्डल को, उस सर्प जालसे मुक्त किया ॥
दोनों भाई निज वाहन चढ़, फिर युद्ध भूमि में आते हैं।
गरुणेन्द्र मिले क्या वचन दिये, वह सारी कथा सुनाते हैं ॥

दोहा—इधर विभीषण ने कटक, रावण रोका आन ।
बलशाली की मार से, भगी फौज एक आन ॥

दुर्दशा सुनी जब सेना की, रावण मैदान मध्य आया ।
भाई को आता देख विभीषण, ने प्रणाम में सिर नाया ॥
लेकिन उसको लख दशकंधर, क्रोधित होकर चिंघाड़ उठा।
यह शीश झुकाना छोड़ अरे, करमें अपने करवाल उठा ॥
क्या करता नाटक इज्जत का, पाखंडी कायर मतवाले ।
ओ देशद्रोही, ओ कुलद्रोही, पापी आफत के परकाले ॥
मैं तुझे देखना नहीं चाहता, ना तुझ से सम्बन्ध मेरा।
और मारना भी है पाप मेरी, तलवार न चाहती खून तेरा ॥
आगे से चला जा सी समय, क्यों मरनेको सन्मुख आया।
नहीं बहुत बुरी हो साथ तेरे, फिरता है किसका बहकाया ॥

श्री विभीषण हंसकर बोले, क्या खबर मृत्यु किसकी आई।
लेकिन फिर भी समझाता हूँ, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा भाई।
यह युद्ध क्षेत्र फिर भी तुम से, कुछ हित की बातें कहता हूँ।
नहीं मान बुरा कटु वचनों का, व्यवहारी बातें कहता हूँ।
हैं 'राम' श्री बलभद्र और 'लक्ष्मण' नारायण अवतारी।
कर सत्य केवली वचन उठाई; कोटि-शिला उनने भारी।
इसलिये यही है उचित राम से, मिल कर सन्धि करो भ्राता।
सीता को लौटा प्रेम सहित, करलो उन से बन्धु नाता।

दोहा—मृत्यु नाचती शीश पर, रावण माने नाय।
प्रत्युत्तर में तीव्र शर, रावण दिये चलाय॥
योद्धा दोनों एक से, डटे मुकाबिल आय।
अस्त्र शस्त्र बरसा रहे, हारे कोई नाय॥

आल्हा छन्द

राम मुकाबिले कुम्भकर्ण के, लड़ते हैं त्रिशूल उठाय।
इन्द्रजीत और मेघनाथ के; लक्ष्मण खड़े अगाड़ी आय॥
अद्भुत युद्ध देखकर नभ से, पुष्प देवता रहे गिराय।
हो गये घण्टों लड़ते लड़ते, कोई हार मानता नाय॥
राम और लक्ष्मण दोनों ने, नाग पाश छोड़ी रिसियाय।
देव अस्त्र उस नागपाश ने, तीनों मुश्कें बांधी जाय॥
भामण्डल को सौंपे तीनों, उन कारागृह दिये पठाय।
और विभीषण पे उस रावण, शक्ति का त्रिशूल चलाय॥

लक्ष्मण जी ने आता देखा, काटा उसे बीच में जाय।
वार करे जितने दशकन्धर, एक काम में आता नाय ॥
इससे रावण चढ़ा क्रोधमें, दिव्य अस्त्रको लिया निकाल।
विजै-अमोघ-शक्ति ले करमें, लक्ष्मणपर उसको दी ढाल ॥
इतनी कारी थी वह शक्ति, जिसका वार न खाली जाय।
मूर्छित लक्ष्मण गिरे भूमि पे, हनुमत उन्हें संभाले आय ॥
इधर राम लक्ष्मण को गिरते, देख मुकाबिल में आजायं।
दिव्य बाण रख दिया धनुषपर, राजा कांप कांप रह जायं ॥
छूटा बाण अग्नि थी फैली, जल बरसावे रावण बाण।
सन् सन् वायु बाण छोड़कर, जल के खता किये औसान ॥
बाण छोड़ कर कुछ तेजी से, भेदा बख्तर-रथ एक आन।
सात बार रथ रहित किया, पर रावण रहे मुकाबिल आन ॥

दोहा—रावण वध के कारणे, करे बहुत से वार।
सफल हुआ ना एक भी, करते राम विचार ॥

जिन बाणों से पर्वत बेधे, तो मनुष्य की कोई बात नहीं।
पासा पलटा है किस्मत का, जो धनुष भी देता साथ नहीं ॥
कुछ सोच के रघुवर बोल उठे, कुछ दिन की आयु शेष रही।
हे रावण मेरे बाणों से बच गया, झूठ लव लेश नहीं ॥
मेरे हाथों से लिखा नहीं, अय रावण तेरा मरना है।
अब एक बात कहता तुझको, मैं न्याय का लेकर शरणा है ॥
तेरे हाथों से भाई मेरा, मृत्यु शैय्या पर जा लेटा।

उसका मैं दाह संस्कार करूं, विधना ने लिखा यही लेखा ॥
इतने संग्राम नहीं होगा, यह शर्त तुम्हें अब माननी है ।
भाई के मरने जीने की, मुझे जा कर बात जाननी है ॥
दोहा - रावण ने श्री राम की, बात करी स्वीकार ।
लंका अन्दर जाय के, सोचे बारम्बार ॥
मुझे मारने वाला मारा गया, कुछ हर्ष हुआ इससे भारी ।
फिर कुम्भकर्ण और मेघनाथ को, महिमा गाता है सारी ॥
भाई के मरण से रघुवर को, कहीं उन पे क्रोध न आजाये ।
वो उनके साथ करेंगे वही, जो कुछ भी उनका मन आये ॥
यों शोक समुन्दर डूब इधर, था रावण लगा रहा गोते ।
और उधर राम डेरों में जा, यों कहते हैं रोते रोते ॥

तर्ज—वैराग्य के रंग रंग दे

श्री राम कहें लच्मण से भाई अब कुछ तो बोलो जी ।
मेरा दिल धरता धीर नहीं न अमृत में विष घोलो जी ॥
शेर :—आँखें खोलो, मुख से बोलो, रूठने क्यों राम से ।
तुम बिना सीता भी तजनी, ये ही सोचा शाम से ॥
जा रहे क्यों छोड़ कर, मन मेरा बहुत अधीर है ।
राम रो रो कर कहें, अब कुछ तो दीजे धीर है ॥
क्या सोचा था क्या हो गया, मन भर करके तुम सो लोजी ॥
अवध भी जाऊँ नहीं, पूछें सुमित्रा मात जी ।
लच्मण छोड़े कहाँ, भेजे तुम्हारे साथ जी ॥

किस तरह दिखलाऊंगा, दुनियाको मुंह चिंता बड़ी ॥
वायदा कीना विभीषण से, समस्या है कड़ी।
तुमको लंका का राज देयं। अब मम शब्दों को तोलो जी ॥
ऐश अशरत छोड़ कर, बन बन मेरे संग घूमता।
कष्टों से घबराया नहीं, उठिए चरण में चूमता ॥
वरना तेरे साथ मेरी, भी चिता लग जाएगी।
संग जल जाना मुझे, प्रिये शान्ति तब आएगी ॥
'दासी' भी बहुत अधीर, वीर अब कुछ तो तुम बोलो जी।

दोहा—दुख देखकर राम का, कपि वंशी बेचैन।
रोते रोते राम जी, बोले ऐसे बैन ॥

सुग्रीव चिता तैयार करो, भाई के संग जल मरना है।
अब सीता से या दुनिया से, सम्बन्ध मुझे क्या करना है ॥
इतना कह कर के भाई को, वह हृदय से लिपटाते हैं।
सुग्रीव ने तब समझाए हैं, पर राम नहीं कुछ मानते हैं ॥
यह दिव्य शक्ति हृदय में लगी, स्पर्श नहीं करना चाहिए।
रोने से नहीं कुछ बनता है, कोई उपाय होना चाहिए ॥
हे राम! तुम्हारे भाई ये; नारायण के अवतार हुए।
फिर कैसे ये मर सकते हैं, निश्चय अपने ये रखें हिये ॥
समझाए राम को सबने ही; चुपचाप वो नीर बहाय रहे।
तब भामण्डल इत्यादि ने, मिल कर कुछ और उपाय किये ॥

जल चंदन से पृथ्वी सींची, कपड़े के डेरे डलवाये।
और चौकी सात लगाई हैं, पहरे भी डबल हैं करवाये ॥
भामण्डल और सुग्रीव आदि, खुद पहरे को तैयार हुए।
हनुमान विभीषण इत्यादि, शोकाकुल गश्त लगाय रहे ॥

दोहा—पहुँचा द्वारे पर तभी, एक विद्याधर आन।
हनुमत से कहने लगा, सुनो जरा धर ध्यान ॥

मैं बहुत दूर से आया हूँ, यह खबर केवली से सुनकर।
वहाँ लंकयुद्ध में लक्ष्मण को, एक शक्ति लगेगी बहु खरतर ॥
तब द्रोणमेघ की पुत्री के, कर-जल से वह अच्छे होंगे।
चल पहुँचू समय से ही पहिले, जो भाग्य यदि अच्छे होंगे ॥
आकाश मार्ग से आता हूँ, रघुवर के पास लिवा चलिये।
वहाँ सारी कथा सुनाऊंगा, अब व्यर्थ समय को मत हरिये ॥

दोहा—भामण्डल तब ले उसे, गये राम के पास।
हाल देख कहने लगा—'राम न होय उदास ॥

हे राम नहीं चिन्ता कीजे, मैं रोग की औषधि लाया हूं।
बुलवायें शीघ्र विशल्या को, जिसका सन्देश ले आया हूं ॥
विश्वास करें, श्री मुनियों ने यह तथ्य हमें बतलाया है।
तप पूर्व जन्म के बदले में, इस भव यश यह उन पाया है ॥
चाहे जैसा हो रोग, शक्ति चाहे जैसी ही कारी हो।
उस कर-जल छींटे से रोगों से, पल में मुक्ति सारी हो ॥
एक बार अवध के तीर भरत जी, जब क्रीड़ा को आये थे।

थी शक्ति लगी मेरे देखी, तो जल छींटे दिलवाये थे ॥
अब वह कुमारि है अवध मध्य, लाने का शीघ्र प्रबन्ध करे।
सुन चढ़ विमान हनुमान और भामण्डल तुरत ही गमन करें ॥
जा अवधपुरी में जगा भरत, संक्षेप में हाल सुनाये हैं।
सुनते चढ़ आया क्रोध, शंख को फूंका सैन्य सजाये हैं ॥
तब हनुमान कही लंक दूर, हम को प्रभात पहले जाना।
जलन्हवन विशल्याका दीजे, हो जाय सफल यहाँपर आना ॥
दोहा—यह सुनकर श्री भर्त जी, साथ में कैकई मात।
द्रोणमेघ घर जाय कर, करी विशल्या साथ ॥

गजल

तभी लेकर विशल्या को, श्री हनुमान धाए हैं।
न सूरज की किरण निकली, वो पहले ही ले आए हैं ॥
विशल्या जा के जब उतरी, कटक के बीच आई हैं।
दिव्य शक्ति निकल भागी, शक्ल देवी बनाई है ॥
उसे जाते हुए हनुमान ने, पकड़ी तो वह बोली।
नहीं कुछ भी खता मेरी, बात सारी सुनाई है ॥
गया कैलाश पर रावण, था जब कैलाश को ठाया।
तभी बाली मुनि से हार कर, मन्दिर में था आया ॥
हाथ की नस निकाली, बीन प्रभु आगे बजाई थी।
बीन भक्ति में होकर के, प्रार्थना खूब गाई थी ॥
तभी धरणेन्द्र का आसन हिला, अवधि से जाना है।

हुआ हर्षित मगन होकर, पास रावण के आया है ॥
मुझे रावण को दी नहीं, प्राण छोड़ सुर असुर नर के।
मैं हारी हूँ विशल्या से, किया तप इसने मन भरके ॥
दोहा – हनुमान ने छोड़ दी, शक्ति को फिलहाल।
अब आगे सुन लीजिये, जो कुछ भी अहवाल ॥

श्रीरामचन्द्र के निकट तभी, कर जोर विशल्या आई है।
श्री लक्ष्मण जी के पास उसे, श्री राम ने दी भिजवाई है ॥
एकान्त देख लक्ष्मण जी के, बैठके दबाने पैर लगी।
अपने हाथों से चन्दन घिस, सारे ही बदन पे लगाने लगी ॥
ज्यों २ चन्दन छिड़का जाता, लक्ष्मणजी को सुधि आती थी।
एकदम वह उठकर बैठ गए, चहुँ ओर को दृष्टि जाती थी ॥
कहां है रावण, कहां है रावण, लक्ष्मण जी ऐसे पुकार रहे।
तब दौड़ के लिपट गए रघुवर, भाई की ओर निहार रहे ॥
जैसे थी शक्ति लगी रण में, वह प्राण हीन तन सारा था।
इस कन्या की महिमा सारी, मैं तो सब कुछ कर हारा था ॥
तब लक्ष्मण ने कन्या देखी, तो देखते ही रह जाते हैं।
यह नागकुमारी है कोई, मोहित छवि पे हो जाते हैं ॥
जो एक हजार और कन्या, विशल्या के संग में आई हैं।
इसके हाथों का चन्दन ले, सारे ही कटक में धाई हैं ॥
क्या मनुष्य और गजअश्व तलक, सबकेही घावभर जाते हैं।
वह इन्द्रजीत और कुम्भकर्ण, सब ही अच्छे हो जाते हैं ॥

हर्षित होकर सब कन्यायें, लक्ष्मण जीसे आ कहती हैं।
विशल्या के संग व्याह आपका, देखना हम भी चाहती हैं ॥
श्रीराम ने भी स्वीकार किया, दोनों का व्याह रचाते हैं।
जितना भी कुमंगल आया था, उतना ही हर्ष मनाते हैं ॥

दोहा—उधर खबर पहुँची तभी, रावण के दरबार।
लक्ष्मण की शक्ति हटी, व्याही विशल्या नार ॥

धुन इन्द्र सभा—अरे लाल देव

ये सुनके खबर सोचमें थे पड़े, मेरे वार सारे ही खाली गये।
मेरे बेटे भाई वहाँ फंस रहे, छुड़ाऊँ मैं कैसे ये चिन्ता रहे ॥
अगर छल से लाऊं बहादुर नहीं, कि ये शूरवीरों की शोभा नहीं
तभी मंत्री आए सभी पासमें, दशानन कोसमझाने की आशमें
सुनोस्वामी अभीनहीं कुछ गया, लखन जो माराथाजिन्दाभया
नहीं तुच्छ शत्रुको अब जानिये, करो उनसे संधि कहा मानिये

दोहा—तभी दूत बुलवा लिया सन्धि का प्रस्ताव।
रामदेव के पास जा, बहुत तरह समझाय ॥

तब जाते २ दूत को भी, संकेत दशानन करता है।
सब समझ गया इतने में ही, श्रीराम कटक में जाता है ॥
जाकर रघुवर से कहने लगा, रावण ने मुझे पठाया है।
मैं आया राज लंक का दूं, सन्धि सन्देश कहाया है ॥
और बहुत श्रेणियाँ विद्याधरों, की सबपे शासन आप करें।
पुष्पक विमान जो मेरा है, ले उसको आप विहार करें ॥

पर सीता हम को दे दीजे, उससे ऐसा कहला दीजे ।
तुम कहने से मुझसे खुश हो, स्वीकार करे समझा दीजे ॥
क्यों नाहक सेना मरवाओ, यह मानो हम इकरार करें ।
कुछ और भी इच्छा होवे यदि, कह दीजे हम स्वीकार करें ॥
इतनी सुनकर रघुवर बोले, हमको लंका दरकार नहीं ।
हम आपसे कुछ नहीं चाहते हैं, पर सीता दें स्वीकार नहीं ॥
सीता को लेकर वापस हों, जा वनमें वास लगायेंगे ।
जाकर कहना तुम रावण से, पल की नहीं देर लगायेंगे ॥

चौबोला

दोहा—अभिमानी का दूत था, बहुत फैलाया जाल ।
सबने मिलकर सभा से, इसको दिया निकाल ॥

चौ०—इसको दिया निकाल, वह वापस लंकपुरी में आया ।
सीता को नहीं दें रघुराई, जान बचाकर आया ॥
रावण ने सोचा बहुरूपिण, विद्या सिद्ध करेंगे ।
इन्द्र नगेन्द्र भी मिलकर आए, किसी से नहीं मरेंगे ॥

मै०—अठाई फागुन की आई, महल के अन्दर ही भाई ।
शान्ति प्रभु का चैत्याला ॥
पूजा की करके तैयारी, दिया आदेश निराला ॥

दोहा—कहा मंदोदरी से प्रिये, विद्या साधन भाव ।
नियम धर्म परजा करे, तुम करनाधर चाव ॥

विपक्षी आनकर तुमको, कोई बाधा भी पहुँचाये ।
मेरा आदेश है सब से, कोई मन क्रोध न लाये ॥
कोई मारे, कोई लूटे, क्षमा धारण सभी कीजे ।
जो आज्ञा यह नहीं माने, सजा फिर बहुत ही पाए ॥
यह सुन रानी मंदोदरि ने, किया प्रबन्ध है भारी ।
दिया सन्देश रावण का, सभी माने हैं नर नारी ॥
श्वेत हैं वस्त्र मणि माला, रूप रावण का आला था ।
वर्ण था नील मरकत सा, प्रति-हरिपद निराला था ॥
खबर ये रामदल में भी, हुई विद्या के साधन की ।
कपि वंशी हैं घबराये, शान्ति उड़ गई आनन की ॥
जायेंगे लंकपुर स्वामी, सभी रघुवर से कहते हैं ।
विघ्न कर जैसे भी होगा, ध्यान उसका डिगाते हैं ॥

दोहा—समय बहुत अच्छा प्रभु, लंका लेलो जाय ।
क्या क्या हम जाकर करें, दीजिये हमें बताय ॥

तब राम कमल लोचन बोले, यह न्याय नीति का काम नहीं ।
वीरों के लिए है लाज युक्त, मर्यादा तजना नाम नहीं ॥
पाकर गुपचुप संकेत लखन का, गुपचुप सारे जाते हैं ।
परकोट किया खंडित, नगरी में जाकर उधम मचाते हैं ॥
प्रजा में हा हा कार मची, भगवान ये क्या आफत आई ।
प्रजा सारी बन फरियादी, रावण महलों में चली आई ॥

नहीं कोई मुकाबिल में आया, तब कपिवंशी यह माना है।
अब चाहे जितना नष्ट करो, ऐसा मौका कब आना है॥
तब शान्तिनाथ के मन्दिर से, कुछ यक्ष-देव आ जाते हैं।
विकराल बदन सब देख डरे, कपिध्वज वापिस आजाते हैं॥
तब राम कटक के देव चले, यक्षों में बहुत ही युद्ध हुआ।
लंका के देव जो मुख्य थे दो, श्री रामादल को गमन किया॥
वह पूर्णभद्र और मणिभद्र, श्रीराम पे आ फ़रियाद करें।
दशरथ सुत महा न्यायकारी, ये क्यों ऐसा अन्याय करें॥
क्या तुम्हें नहीं कुछ पता राम, लंका में क्या उत्पात हुए।
कपि-वंशी राजकुमारों ने, नर नारि सभी भयभीत किये॥
सुन लक्ष्मण जी ये बोल उठे, तुम कैसे फ़रियादी आये।
क्या रावण भी है न्याय प्रिय, जो पक्षपात करने आये॥
यक्षो तुम को मालूम है सब, रावण की आग लगाई है।
वह सीता को हर लाया है, हम करें आज मन चाही है॥
अब दुराचरण करके भी वह, अभिमान बहुत ही करता है।
फिर राम लड़ें आश्चर्य ही क्या, बोलो पानी कहां ढलता है॥
रावण ने क्या उपकार किया, हे यक्षो यह भी बतलाओ।
और हमने क्या अपराध किया, जो पक्षपात तुम ठहराओ॥
वह विद्या भारी साध रहा, हम उसे डिगाना चाहते हैं।
कुछ और नहीं इच्छा हमको, इतना उद्योग साधते हैं॥
दोहा—इतनी सुन लज्जित हुए, वचन न निकले सार।

इतना ही कह कर गए, सुनिए लखन कुमार ॥

गजल

प्रजा को कष्ट ना होवे, ना धन हरने कोई पाये ।
न रावण को अरब पहुँचे, नहीं मरने कोई पाये ॥
और ही यत्न करके क्रोध, तुम उसको दिला देना ।
महासाधक अडिग रावण, डिगे ना कुछ भी कर लेना ॥
यह कहकर के गए दोनों, सबको अंगद ले आया है ।
पहुँचे लंकेश के महलों, न लेकिन मार्ग पाया है ॥
गये मुशकिल से मन्दिर तक, स्तोत्र प्रभु का गाते हैं ।
फिर रावण के निकट आ, कर के माला छीन लेते हैं ॥
वो माला टूट जाती है, चुन के हाथों में देते हैं ।
डालते हैं कभी गल में, कभी सर पर लगाते हैं ॥
कभी जाकर राणियों को, बहुत ही त्रास देते हैं ।
पकड़ करके मंदोदरि को, वहीं पर खींच लाते हैं ॥
निकट लाकर के रावण, के वचन ऐसा सुनाया है ।
चोर श्रीराम की रानी, हरण करके तू लाया है ॥

दोहा—तेरी भी अब राणियां, हर कर हम ले जांय ।
चमर करे सुग्रीव पर, मंदोदरि हर्षाय ॥

मंदोदरि रावण से लिपटी, हे नाथ मेरी रक्षा कीजे ।
क्या आप दशानन नहीं रहे, क्या होगया है बतला दीजे ॥
इतने में विद्या सिद्ध हुई, जय जय कारे कर आती है ।

हे स्वामी कुछ आज्ञा दीजे, रावण को शीश झुकाती है ॥
बलभद्र, चक्री, अर्धचक्री को, मैं छोड़ सभी को वश करती ।
विद्याधर, मानुष चीज ही क्या, देवों का मान भी हर लेती ॥
इतनी सुन अंगद भाग गया, आकाश मार्ग से होकर के ।
सब हाल बताया लक्ष्मण को, वहां का सब उसने जाकर के ॥
अब रावण का कुछ हाल सुनो, स्नान किया भोजन पाया ।
विद्या की परीक्षा लेने को, क्रीड़ा स्थल में वह आया ॥
बहु रूप बना कर देखे हैं, पद चाप से ही भूकम्प किया ।
श्रीराम के दल में भय उपजे, उत्पात सभी ने देख लिया ॥
फिर देवारण्य में जाता है, सीता भी भय खा जाती है ।
उस बहु रूपिणी विद्या से, वह चिन्तित भी हो जाती है ॥
रावण कहता है, हे सीते अब राम लखन को मरे सुनना ।
फिर मेरे साथ कुल पृथ्वी पर, विहार संग चल कर करना ॥
सीता कानों पे हाथ धरे, यह शब्द न सुनना चाहती थी ।
और कहती है, हे दशमुख सुन, मैं जीवित उनकी आश में थी

तर्ज—(बहरे तवील)

अय दशानन जरा ध्यान देकर के सुन,
तूने सीता को अब तक भी जाना नहीं ।
चाहे साम और दाम भय भेद दिखा,
मेरे शील को अब तक पहचाना नहीं ॥
दो ही चीज मेरी गर्दन के लिये,

भुजा राम की या तलवार तेरी ॥
वीरबाला हूँ मैं वीर भगनि हूँ मैं,
वीर पत्नी मुझे कोई डर ही नहीं ॥
स्वर्ण के हैं महल तेरे मणियों जड़े,
हैं सहस्रों ही रानी, सबर ना करे।
पर स्त्री का चोर कहें सब तुझे,
अरे कायर रही कुछ शरम ही नहीं ॥

दोहा—बिलख २ कहे जानकी, सुनो दशानन बात ।
मेरे पति यदि आप से, खा जायेंगे मात ॥

मेरे पति की यदि मृत्यु, विधाता ने तेरे हाथों लिक्खी ।
तो मेरे शब्द सुना देना, कह देना जनक दुलारी कही ॥
हे नाथ तुम्हारे दर्शन को, यह प्राण अभी तक अटक रहे ।
सीता भी संग तुम्हारे चले, क्यों मुझको भव में पटक रहे ॥
तुम जीवन तक मेरा जीवन, परलोक भी तुम संग जाना है ।
पतिव्रत धर्म है अखंड मेरा, सत पथ पर चरण बढ़ाना है ॥
यह कहके मूर्छा खाय गिरी, रावण ने पश्चाताप किया ।
मुझे इन्हें अलग करना था नहीं, कहे दासी ऐसे कहता गया।

दोहा—देवारण्य से चल दिया, आयुधशाला जाय ।
अस्त्र शस्त्र की परख भी, करूँ समय है नाय ॥

तब बहुत अपशकुन होते हैं, आयुध शाला दरवाजे पर ।
एक सर्प खड़ा कर फण ऊँचा, रास्ता रोके था आने पर ॥

लंका में उपद्रव होते थे, और उल्का-पात भी होता था।
वायु से छत्र भी उतर गया, रावण का आसन हिलता था ॥
यह देख २ कर मंदोदरि, जो नीति शास्त्र जाननहारी।
मन्त्रियों से कहती थी क्यों नहीं,राजा को समझाते भाई ॥
मंत्री बोले हे रानी जी, स्वामी क्या कुछ नहीं जानते हैं।
सबने उनको समझाया है, वह नहीं किसीकी मानते हैं ॥
इसलिये आप ही अब जायें, है यही मुनासिब समझायें।
आयुधशाला में हैं स्वामी, दर्शन उनके वहां पर पायें ॥

दोहा—मंदोदरि जाने लगी, कर अद्‌भुत शृंगार।
आते देखी दशानन, पूछा कर मनुहार ॥

चौ०—पूछा कर मनु हार प्रिये, है काम कौन सा आया।
आयुधशाला में आने का, जिससे कष्ट उठाया ॥
तब रानी रोनीसी होकर, हाथ जोड़ कर कहती।
राम लखन हैं शक्तिशाली, यूं चिन्ता है गहती ॥

मैदान—खड्ग सूर्यहास हाथ आया,मरा खरदूषण क्या माया।
शक्ति ने क्षमा है मांगी ॥
पुन्यात्मा हैं दोनों भाई, आज समझ में आई ॥

दोहा—रामचन्द्र बलभद्र हैं, रत्न है सीता नार।
लक्ष्मण से भ्राता हैं जिन, नारायण अवतार ॥

फिर जिस सीता को लाए हो, क्या उसका रूप निराला है।
महलों में आपके तो स्वामी, नारी इक से इक आला है ॥

अपने मुख से अपनी प्रशंसा, करना भी नहीं चाहती हूं ।
जैसा कहो वैसा रूप धरूं, मैं आप से आज्ञा मांगती हूं ॥
रावण बोले हे प्रिये तुम्हारा, रूप अभी क्या कुछ कम है ।
देवांगना भी लज्जित होती, सीता की भी उपमा सम है ॥
ऐसा है तो फिर क्या कारण, जो सीता को हर लाए हो ।
भाई बेटे सब ही बिछुड़े, प्राणों पर खतरा लाए हो ॥
हे देव मुझे आज्ञा दीजे, सीता को लेकर के जाऊँ ।
श्रीराम बड़े ही दयालु हैं, यह सब झगड़ा निबटा आऊं ॥
रावण बोला जाओ जाओ, तारीफ उन्हीं की करती हो ।
उन्हीं के पासचली जाओ, यहाँ आकर क्यों दुख भरती हो ॥
मंदोदरि कहने लगी प्रभु, मैं राग द्वेष वश नहीं कहती ।
वह नारायण बलभद्र जो हैं, इस कारण मैं हरदम डरती ॥
रावण बोला वह नाम मात्र के, पदवीधर कहलाते हैं ।
हैं भूमिगोचरी रंक निबल, कुछ दिन में मारे जाते हैं ॥

दोहा—इसी तरह की हो रही, दोनों में कुछ बात ।
रावण आए महल में, हर्ष में बीती रात ॥
सभी रानियों से किया, प्रेम-प्रीति व्यवहार ।
लख प्रभात होने लगे, युद्ध हेतु तैयार ॥
पूरन पंचम खण्ड यह, जय बोलो महावीर ।
'दासी' है यह अल्प-मति, राम चरित् गंभीर ॥

— —::— —

षष्ठम-खण्ड

युद्ध काण्ड-२

[रावण वध और सिया मिलाप]

मंगलाचरण

दोहा—श्री चौबीसों जिन सुमर, सरस्वती सिर नाय।
युद्धकथा वर्णन करूँ, सुनो भविक मन लाय॥

कथा प्रारम्भ

रावण आया युद्ध में, इधर लखन और राम।
विद्यामयी रथ पर चढ़ा, जैसे पर्वत श्याम॥

राजा मय लड़ने को आये, हनुमान इधर से धाये हैं।
रथ रहित किया कई बार, तभी मयराज बहुत घबराये हैं॥
दशकन्धर उनके लिये एक, रथ मायामई तैयार किया।
उस पर चढ़ कर राजा मय ने, हनुमान से डट कर युद्ध किया॥
देखा व्याकुल जब पवन कुमर, भामण्डल मदद हेतु आये।
उनका भी वह ही हाल हुआ, सुग्रीव भी आन मात खाये॥
रावण के भ्रात विभीषण भी, मय के सम्मुख थक जाते हैं।
बहुरूपिणी के प्रभाव से ही, मयराज हार नहीं पाते हैं॥
यह देख चले श्री रघुराई, राजा मय से लड़ने आये।
मायामई रथ को करा चूर, मयराज पे राम विजय पाये॥

उस समय राम सम्मुख रावण, ऐसे गज रथ पर आता है।
जिसको हजार हाथी खींचे, बहुरूपिणी से बनवाता है॥
जब राम पास आते देखा, तो लक्ष्मण मध्य आन बोले।
ओ चोर, दुराचारी लम्पट, तू मुझसे छिपा कहां डोले॥
था तेरी ही तालाश में मैं, रह खड़ा कहां पर जाता है।
तेरे संग आज करूँ ऐसी, जो काल नहीं कर पाता है॥

दोहा—रावण कहे कुपुत्र तुम, दशरथ दिये निकाल।
दीन दरिद्री से फिरो, जीवन हुआ बवाल।
अब बच कर कहाँ जा, सको मृत्यु मेरे हाथ॥
काल खड़ा सम्मुख तेरे, राम भी जावे साथ॥

[धुन—वैराग्य के रंग में रंग दे चोला आन]

लक्षमण जी हंसकर ये बोले, ओ कायर ओ अभिमानी।
सर पर तेरे मौत खेलती, निश्चय अब हमने जानी॥
शक्ति गर रखता है कुछ, तो वार अपने कर जरा।
है नहीं तुझको खबर, घट पाप का तेरे भरा॥
अब भी कुछ बिगड़ा नहीं, सीता को लाकर दीजिए।
राम प्रतिपालक हैं शरणागत, शरण गहि लीजिए॥
क्यों अपयश में डूबे है, यह दुनिया है आनी जानी।
लक्ष्मण जी हंस कर ये बोले, ओ कायर ओ अभिमानी॥
रावण अनेकों मेघबाण और नाग बाण भी छोड़ता।
और वायुबाण व गरुड़बाण से, लक्षमण सब तोड़ता॥

दस दिन हुआ है युद्ध ऐसा, देवता यश गावते।
दोनों हैं बलशाली बड़े, कह पुष्प वह बरसावते ॥
'दासी' को भी आश्चर्य बड़ा, नहीं हार किसी ने मानी।
लक्ष्मण जी हंस कर बोले, ओ कायर ओ अभिमानी ॥
दोहा—तब तो रावण ने रचा, विद्या बल से ठाठ।
एक शीश कट दो बनें, चार कटें तो आठ ॥
इस तरह हजारों शीश भुजा, बहुरूपिणी से रावण ने करी।
श्रीलखनलाल ने शक्ति से, अपनी वह सारी काट धरी ॥
दो हाथों वाले लक्ष्मण ने, विद्या का मान घटाय दिया।
तब रावण ने देवो पुनीत, श्री चक्र सुदर्शन याद किया ॥
श्री चक्र याद करते आया, फैला प्रकाश नभ मण्डल में।
वह प्रभा पुंज चकित प्रकाश, आ शोभित था दायें कर में ॥
दशकन्धर को तैयार लखा, लक्ष्मण पर चक्र चलाने को।
श्री राम वज्रव्रत तान बढ़े, आगे तब उन्हें बचाने को ॥
हल मूसल जो गरुडेन्द्र दिये, उनसे भी उसे रोकते हैं।
सिंह वाहन पर आरूढ़ राम, लक्ष्मण को पीछे करते हैं ॥
भामण्डल हनुमान, विभीषण, अस्त्र शस्त्र लेकर आए।
प्राणों की आशा छोड़ सभी, राजा इक साथ उधर धाए ॥
लेकिन नहीं रोक सका कोई, कर तीन प्रदक्षिणा लक्ष्मण की।
सेवक जैसा कर में आया, पदवी धारी नारायण की ॥
रघुवर को हर्ष अपार हुआ, देवों ने पुष्प वर्षाये हैं।

वानरवंशी कहें वही हुआ, जो मुनियों ने बतलाए हैं ॥
लक्ष्मण ने कहा अब भी मानो, नहीं रावण फिर पछताओगे।
मैं क्षमा तुम्हें कर सकता हूँ, यह समय फिर नहीं पाओगे ॥
अब क्षीण होगया पुण्य मेरा, रावण यह निश्चित जानता है।
लेकिन अभिमान के वश होकर, वह एक बात नहीं मानता है ॥
तब छोड़ा लक्ष्मण चक्र और, रावण का कटकर शीश गिरा।
सेना विह्वल होकर भागी, सबने मिल जय जयकार करा ॥
देखा यह दृश्य विभीषण ने, मूर्छा खाकर गिर जाते हैं।
जब होश हुआ तो भाई के, गुण याद करें और रोते हैं ॥

दोहा—श्रीराम ने विभीषण, हृदय लिये लगाय।
　　होनहार होती प्रबल, बार बार समझाय ॥
　　दाह क्रिया कर दीजिये, रावण की तत्काल।
　　सब राजा यह कह रहे, हे लंकेश विशाल ॥

इतने में रानी मंदोदरि, रानियों सहित रोती आई।
सुन, हिड़की छुटी विभीषण की, सबको समझाया रघुराई ॥
रावण के दाह संस्कार हेतु, श्री राम ने भामण्डल से कहा।
तुम इन्द्र, मेघ अरु कुम्भकर्ण, तीनों को अब बुलवाओ जरा ॥
सब डरते डरते लाते हैं, कहीं क्रोध ना उनको आ जाये।
चिन्ता थी रावण चिता देख, विभीषण तक ना गरमा जाये ॥
श्रीराम कहीं चारों मिलकर, पहले की तरह ही राज करो।
लेकिन तीनों ने नहीं मानी, और कहा क्षमा महाराज करो ॥

हम तो अब दीक्षा धारेंगे, शुभ भाग्य से मुनि-संघ आया है।
यह सब कर्मों के लेख राम, तुम दोष न कुछ लख पाया है॥
सीता का हरण, भ्रात का वध, सैनिक संहार यहां देखा।
इससे यह हमको ज्ञात हुआ, झूठा है जग का सब लेखा॥
लेकिन जब होनहार ठहरी, होकर अवश्य ही रहती है।
संघ के स्वामी थे अनन्त वीर्य, उनको आमुक्ति वरती है॥
सुन मुनि को केवल ज्ञान, वहां इन्द्रादि देव आगमन हुआ।
सब हर्ष सहित वन्दन करके, प्रभु से जिन-धर्मोपदेश सुना॥
श्री इन्द्रजीत और मेघनाथ, वह कुम्भकर्ण भी बलधारी।
संसार का बन्धन तोड़ चले, दीक्षा लेते हैं सुखकारी॥
मन्दोदरि और सारी रानी, मिल संयम धारण करती हैं।
श्री मंदोदरि के साथ साथ, सब भेष अर्जिका धरती हैं॥
वहाँ से चलकर श्री राम लखन, लंका नगरी में आते हैं।
सब नर नारी हर्षित होते, इन के ही यश गुण गाते हैं॥

दोहा—सीता जी से मिलन को, राम हुए तैयार।
देवारण्य आने लगे, गज पर हो असवार॥

चौबोला

दोहा—लंकेश्वर के भवन से, देवारन गये आय।
करि छोड़ पैदल चले, निकट सिया के जाय॥

चौ०—सिया निकट रहे जाय, देख विद्याधरी ऐसे बोली।
सीते तेरे प्रीतम आये, दर्शन से भर झोली॥

पहले तो वह स्वप्न ही समझी, नजर उठा कर देखा।
सचमुच प्राणेश्वर आए हैं, खतम विरह का लेखा॥
चौ०—आंख में पानी भर लाई, खड़ी है राम पास आई।
बोल नहीं निकला मुख से।
देख रहे हैं राम सिया को, दुबली पड़ गई दुख से॥
दोहा—नीर भरा है नैन में, बोल निकलता नाय।
स्वर्ण मूर्ति जैसे जड़ी, थिर ऐसी दिखलाय॥
तब राम भुजाओं में भरकर, हृदय से लिपटा लेते हैं।
इस युगल जोड़ी का मिलन देख, देवता पुष्प बरसाते हैं॥
कहते हैं-सीता धन्य धन्य, और बोले जय जयकारा भी।
है अखंड शील पालनहारी, है धैर्य धन्य और साहस भी॥
दोनों एक दूजे को देखें, हृदय नहीं भरने पाते हैं।
फिर राम सिया का हाथ गहे, हाथी पर ला बिठलाते हैं॥

गजल

चले दोनों हर्ष में भर, भवन लंकेश के आये।
जहाँ चैत्यालय शान्ति नाथ का, जा कर दर्श पाये॥
किया कुछ ध्यान दोनों ने, पढ़ा स्तोत्र भी सुन्दर।
निमंत्रण देने इतने में, विभीषण जी भी हैं आये॥
राम सीता, विशल्या और लखन राजा सभी मिलकर।
मनाते हर्ष वे भारी, विभीषण के महल आये॥
दोहा—सब ने मिल करके किया, वहां पर ही स्नान।
मेहमानी लंकेश घर, सुन्दर भोजन पान॥

श्री राम लखन का मंगलमय, राज्याभिषेक भी करवाया।
जितनी नारी लछमण ब्याही, उनको लंका में बुलवाया॥
कनमाला और रत्न माला, जितपद्मा भी वहाँ आई हैं।
सिंहोदर वज्रकर्ण की भी, कन्या आई हर्षाई हैं॥
श्रीकुम्भ, मेघ अरु इन्द्रजीत, मुनियों को केवल ज्ञान हुआ।
आयु कर पूरी मोक्ष गए, लंकेश विभीषण राय हुआ॥
श्रीराम लखन को लंका में, छः वर्ष व्यतीत हुए भारी।
इक रोज मुनि नारद आए, कहें-देव दुःखी हैं महतारी॥
श्री राम लखन दोनों सुनकर, हो दुखित नैन जल भर लाए।
और चलने को तैयार हुए, विभीषण ने कुछ दिन ठहराए॥
दोहा—पन्द्रह दिन ठहरा लिए, लंक पुरी में और।
राम लखन सिया आ रहे, मचा अवध में शोर॥
रत्नों और स्वर्णों के वाहन, भर-भर के अयोध्या आन लगे।
लंका के विद्याधर उनको, सब नगरी में वर्णन लगे॥
नहीं कोई दरिद्र अवध में रहा, लगे ढेर स्वर्ण के घर २ में।
विद्याधर सिलावट रचने लगे, श्री अवधपुरी को नए ढंग में॥
कहीं स्वर्णों के चैत्याले रचे, कहीं महलों की शोभा न्यारी।
कहीं स्वर्ण सरोवर वन उपवन, श्री स्वर्गसी ही महिमा सारी॥
अनुपम सुन्दरता से है बनी, वह नगरी अयोध्या सुखकारी।
चले राम लखन सब लंका से, पुष्पक विमान की असवारी॥
जितने वन पर्वत दरश पड़े, सीता को दिखाते जाते हैं।

दुलहन सी सजी अयोध्या में, श्रीराम लक्ष्मण आते हैं ॥
गज पर चढ़ कर श्री भरत चले, स्वागत की अजब तैयारी है।
और उधर से राम लखन उतरे, जिन साथ बहुत सी नारी हैं ॥

गजल

भरत जी ने निकट आकर, राम चरणों में सिर नाए।
भुजाओं में भरे श्री राम, जी ने उर से लिपटाए ॥

अन्तरा

चले नगरी के अन्दर सब, छवि बरनी नहीं जाती।
प्रजा दर्शन को सब आई, उमंगों में हैं हर्षातीं ॥
सभी माताओं से मिलते, चरण में लेट जाते हैं।
माँ बेटे बीती कह करके, नीर नैनों बहाते हैं ॥
दिखाती हाव भावों को, नृत्यकी कर रहीं छम-छम।
कहीं बाजे कहीं श्री राम के, गुण गा रहे जम-जम ॥
कहीं श्री मन्दिरों में भी, प्रभु पूजन हो सुखकारी।
राम लक्ष्मण के आने पर सुखी नगरी के नर नारी ॥

दोहा—तीन खंड के बन पती, लखन और श्री राम।
धर्म राज्य जग में करें, पूर्ण अर्थ अरु काम ॥
पर जग में सुख थिर नहीं, होनहार बलवान।
सीता जी के भाग्य की, कथा सुनें गुणवान ॥

सीता रावण के घर में रहीं, रघुवीर उसे ले आए हैं।
मर्यादा रहित चलें कैसे, गम्भीर ये शब्द सुनाए हैं ॥
कुछ जन कानाफूसी करते, कुछ निडर पथों पर बतलाते।

इस भांति सिया के अशुभ कर्म, हों उदय भाग्य का रंग लाते ॥
यों देख जगत की अस्थिरता, व्यापा वैराग्य भरत मन में।
छोड़ो जग, साधो आत्मध्यान, यह भाव उठा उनके मन में ॥
रावण का गज त्रैलोक्य-मंडन, श्री राम उसे ले आये थे।
दर्शन से भरत के मिली शान्ति, बीते भव स्मरण हो आये थे ॥
उन भव-रागों को किया याद, परिणाम सामने आया है।
अनजल तक करि ने त्याग दिया, आतम से ध्यान लगाया है ॥
था भाग्य अयोध्या का उत्तम, दो ऋषि निकट नगरी आये।
दर्शन करने को राम लखन, संग में सब नर नारी धाये ॥
कुल भूषण और देश भूषण, की करके तीन वन्दनाएँ।
लेते हैं भरतजी जिन-दीक्षा, सब नर-नारी मिल गुण गायें ॥
श्री भरत के साथ हजारों, राजा संयम धारण करते हैं।
वह गज भी श्रावक व्रत लेते, और कठिन तपस्या करते हैं ॥
कैकेई भी अर्जिका होकर के, अब धर्म साधना करती है।
'दासी' भी पार उतरने को, जिन राजका शरणा लेती है।
दोहा—भरत मुनि होकर किया, दुद्धर तप धर ध्यान।
शुक्ल ध्यान जैसे हुआ, पाया केवल ज्ञान ॥
कुछ दिन पृथ्वी पे विहार किया, फिर मुक्ति पुरीको जाते हैं।
वह गज भी व्रत उपवासोंसे, कुछ अधिक क्षीण दिखलाते हैं ॥
और अंत समाधि मरण से मर, वह छठे स्वर्ग में जाते हैं।
और इधर भरतका शोक बहुत, श्रीराम और लखन मनाते हैं ॥

चौ०—अवधपुरी की प्रजा सब, कहती है कर जोर।
राज्य तिलक श्रीराम को, करना है कल भोर॥
दोहा—करना है कल भोर तिलक, श्रीराम हमारे राजा।
राम कहें लक्ष्मण को होगा, चक्र उन्हीं को साजा॥
सुनकर के सब गए लखनपर, लखन कहें नहीं भाई।
मैं तो सेवक उन चरणों का, यह क्या बात सुनाई।

मैदान

नहीं जब माने दोनों जी, सिंहासन एक छत्र दो जी।
तिलक दोनों को किया है।
सब प्रजा अयोध्या की मिलकर, उत्सव में भाग लिया है।
दोहा—एक रात श्री जानकी, सपने देखे सोय।
श्वेत वर्ण सुन्दर बहुत, अष्टापद हैं दोय॥
दोनों आकर सीता जी के, मुख में परवेश कराया है।
आकाश से पृथ्वी पर है पड़ी, दूजा भयकारी आया है॥
जब भोर हुई पति पास गई, स्वप्नों का फल बतला दीजे।
कहें राम पुत्र दो जुड़वा हों, और चर्मशरीरी लख लीजे॥
दूजा सपना हानिकारक, सो पूजा दान करो रानी।
धर्म ध्यान से ही शान्ति मिलती, ये ही बतलाती जिनवाणी॥
श्री रामचन्द्र सब मन्दिरों में, पूजा विधान कराते हैं।
इतने में वसंत ऋतु आई, सब मिल उपवन में जाते हैं॥
गज पर चढ़कर सियाराम चले, लक्ष्मण भी साथ में आते हैं।

सब रानियें दोनों की आईं, मिलकर के वसंत मनाते हैं ॥
दोहा—अशुभ उदय जब होत है, अशुभ कार्यसब होंय।
अंग फरकते दाहिने, सीता जी के सोय ॥
मम आंख दाहिनी फरकत है, सब रानियों से बतलाती हैं।
क्या होनहार बाकी मेरी, जो मुझको भय दिखलाती हैं ॥
सब रानियें कहती सर्वश्रेष्ठ, तुम रानियों में हो पटरानी।
तुमको क्या दुःख हो सकता है, यह सत्य हमारी है वाणी ॥
कुछ सोचके सीता ने फौरन, भंडारी को बुलवाया है।
कैमेच्छिक दान बटे नित ही, नौ मासों तलक, बताया है ॥
हाथी पर चढ़ कर इक सेवक, सारी प्रजा से कहत फिरे।
जो इच्छा हो सो ले जाओ, दरबार राम से तुम्हें मिले ॥
दोहा—होनहार मिटती नहीं, करो अनेक उपाय।
सीता जी के अशुभ ने, रंग दिखाया आय ॥

गजल

राम दरबार लगने पर, प्रजा सब मिल के जाती है।
कुछ कहना चाहते, लेकिन, बात मुंह तक न आती है ॥
कहा श्रीराम ने भाई, कहो क्या कहने आए हो।
नहीं भय कीजिए मन में, संदेशा कौन लाए हो ॥
जो था सब से बड़ा मुखिया, कांपते स्वर में यों बोला।
प्रजा हो चली मर्यादा रहित अमृत में विष घोला ॥
रही रावण के घर सीता, उसे फिर राम ले आए।

नहीं फिर दोष जनता को, करे जो जिसका जी चाहे ॥
यह सुन कर राम ने सोचा, हमारा कुल बड़ा नामी ।
हुए वृषभादि, भरतेश्वर, जो थे षट-खंड के स्वामी ॥
क्या उस कुल में प्रथम मैं, ही कलंकी राव कहलाऊँ ।
न ऐसा होगा अय 'दासी' सिया को वन में भिजवाऊँ ॥

दोहा—बहुत दुखी हुए राम जी, सोचे बारम्बार ।
प्राणों से भी प्रिय मुझे, सीता उत्तम नार ॥

निर्दोष दोष कोई भी नहीं, सीता इतना मैं जानता हूँ ।
कैसे उसका परित्याग करूं, यदि कहा प्रजा का मानता हूँ ॥
जो उसको वन में भिजवाऊँ, हृदय टुकड़े हो जाएगा ।
वह गर्भवती वन में घूमे, जीवन नीरस हो जाएगा ॥

दोहा—राम बहुत ही सोचते, निश्चय पर आ जांय ।
एक सेवक को भेजकर, लक्ष्मण लिए बुलाय ॥
लक्ष्मण आए शीघ्र ही, सुना राम से हाल ।
क्रोध बढ़ा सुनकर बहुत, आंखें होगई लाल ॥

मैं लूंगा उनकी जबां खींच, जो सति की निन्दा करते हैं ।
क्या राज-दंड का भय न रहा, वह बिन आई क्यों मरते हैं ॥
इतना कह कर तैयार हुए, मैं युद्ध करन को जाऊँगा ।
बतलाओ कौन कौन पापी, मैं पकड़ के फौरन लाऊँगा ॥
तब राम कहें अय वीर मेरे, है क्रोध का तो कुछ काम नहीं ।
रावण ने बुरी दृष्टि देखी, रखना अच्छा परिणाम नहीं ॥

जो प्रजा कहे वह सत्य कहे, नहीं कुल को दाग लगाना है।
सीता की पातिव्रत्य जानूँ, पर त्याग अवश्य ही करना है॥
लच्मण ने कहा सुनें स्वामी, यह तर्क आपका ठीक नहीं।
भगवान के आगे द्रव्य चढ़े, क्या लखने में है दोष कहीं॥
दुर्जन तो निन्दा धर्म की भी, और मुनियों तक की करते हैं।
उनके कहने से नहीं छुटे, वह स्वयं नर्क में पड़ते हैं॥

दोहा—लखन भ्रात की बात से, हुआ राम को क्रोध।
होनी होकर ही रहे, नहीं आता है बोध॥

चौ०—नहीं आता है बोध राम ने, सेनापति को बुलवाया।
सीता को ले जाकर वन में, छोड़े, हुक्म सुनाया॥
सेनापति यह आज्ञा पाकर, सीता पास सिधाया।
तीरथ वन्दन चलिये माता, आकर यही बताया॥

चौ०—हुई हर्षित सुन सीता जी, चली कुछ समय ना बीताजी।
दाहिनी आंख फरकती।
सखियां पीछे चली सिया के, उन्हें धैर्य दे तजती॥

दोहा—आऊँगी मैं शीघ्र ही, सखियों को समझाय।
रथ में बैठी जाय कर, सारथि वेग चलाय॥

चल करके सारथि सिंहनाद, अटवी के अन्दर जाता है।
वह अटवी बहुत भयानक है, प्रकाश तलक नहीं आता है॥
जब बीच वनी के पहुंचा है, सेनापति हाल बताता है।
दोषारोपण वह जनता का; औ राम का हुक्म सुनाता है॥

परित्याग शब्द के सुनते ही, सीता को मूर्छा आती है।
कुछ देर में होय सचेत सती, सेनापति से बतलाती है॥

दोहा—ठीक किया जो कुछ किया, नहीं मुझे इंकार।
कह देना श्रीराम से, शब्द कहूं दो चार॥

तर्ज—फिल्म जागृति

वनवास क्यों दिया मुझे स्वामी ने बेकसूर।
सेनापति जाकर के सुनाना उन्हें जरूर॥
मेरे हरण पे क्यों करी, लंका पे चढ़ाई।
क्यों खून की नदियां, वहां जाकर के बहाई॥
लंकेश को बरबाद करा, मुझ को छुड़ाई।
परित्याग करने को, करी थी मेरी रिहाई॥
हा कर दिया सदा को मेरे दिल में ये नासूर। सेनापति
प्रजा के मनरंजन को, जो त्यागा मुझे हे राम।
जिन धर्म को मत त्यागना, कहना है मेरा काम॥
निंदा करे हैं धर्म की, ऐसे भी हैं तमाम।
वह छोड़ने से ना मिले, शिव सुन्दरी का धाम॥
मुझको तो उनके प्रेम का, अब भी रहे सरूर। सेनापति
इस वक्त तो लाले पड़े हैं मेरी जान के।
जिन्दा रही तो दूँगी परीक्षा भी आन के॥
कोई भी नहीं दोष किया मैंने जान के।
वो जानते तो हैं सभी, पक्के हैं आन के॥

किस्मत में मेरी था यही, उनका भी क्या कसूर। सेनापति
विधना ने ये जोड़ी थी ऐसे वक्त मिलाई।
चाहते हुए भी चरणों में, रहने नहीं पाई॥
कैसे सहुँ उनका विरह यह भी ना बताई।
भगवान ले ले गोद में, अब तेरी दुहाई॥
'दासी' भी दुखित होके, कहती है ये जरूर। सेनापति—
दोहा—कहने को तो कह गई, रह रह मूर्छा आय।
सेनापति रोवे बहुत, सीता तजी न जाय॥
हा कैसे रहेंगी इस वन में, माता तो बहुत सुकुमारी है।
इस वन में ठहर नहीं सक्ते, अच्छे अच्छे बलधारी हैं॥
सब से ही बड़ा पाप है यह, करना दूजे की सेवकाई।
यदि सेवक आज नहीं होता, क्यों देता सती को दुःख भाई॥
सेवक की कीमत ही क्या है, स्वामी की आज्ञा पालते हैं।
चाहे हो अच्छी, चाहे बुरी, आज्ञा को नहीं टालते हैं॥
मुड़ २ कर देख जानकी को, सेनापति वापस चलता है।
और इधर सचेत हुई सीते, तन मन में दाह लग जाता है॥
तर्ज—फिल्म शहीद (सीता विलाप)
रावण की कैद से छूट के भी मुझको तो नहीं आराम मिला।
परित्याग किया क्यों राम मेरा हरबार यही आता है गिला॥
वन वन भटकती मैं फिरूं, हाय राम तुमने यह क्या किया।
आता नहीं दिल को सबर, हाय राम तुमने ये क्या किया॥

अरमान दिल में था यही, रहूं चरण शरण में आपकी ।
किस्मत को यह मंजूर था, हाय राम तुमने यह क्या किया ॥
दुख अपना मैं किससे कहूँ, आदीश का शरणा गहूं ।
विपदा के साथी हो तुम्हीं; हाय-राम तुमने यह क्या किया ॥
तुम जानते हो गर्भ से, इस हाल में कैसे तजी ।
आई नहीं तुमको दया, हाय-राम तुमने यह क्या किया ॥
तुम से पति पा करके भी, सदमों पे सदमे सह रही ।
"दासी" को आशा दर्शकी, हाय-राम तुमने यह क्या किया

दोहा—सहन करत श्री जानकी, क्या विधना के लेख ।
　　गर्भवती बनकर फिरे, पशु तक रोवें देख ॥

पुन्डरीक पुरी का राजा जो, उस वनमें उसी समय आया ।
हाथी पकड़न सैना के सहित, वज्रजंघ नाम सुन्दर काया ॥
सम्यकदृष्टि पर उपकारी, सीता का रुदन सुन पाया है ।
दो चार सैनिकों को भेजा, देखो यहाँ कौन सताया है ॥
सैनिक जब चलकर आए हैं, उन्हें देख सिया डर जाती है ।
आभूषण देती है उतार, रो रो करके बिलखाती है ॥
इतने में वज्रजंघ आए, करुणा से हृदय भर जाता है ।
हे बहिन कौन; कहां से आई, सब हाल जानना चाहता है ॥
मैं रामदेव की रानी हूँ, लक्ष्मण देवर बलधारी हैं ।
भामण्डल की प्रिय बहिन, मुझे सब कहते जनकदुलारी हैं ॥
है नाम जानकी सीता भी, अब तो निरभागिन कहलाई ।

वनवास हरण रावण द्वारा, अब तक की बातें बतलाई ॥
सुनकर राजा सीता से कही, तुम धर्म की बहिन हुई मेरी ।
अब शीघ्र चलो तुम संग मेरे, रक्षा प्रतिपाल करूं तेरी ॥
यह सुनकर सीता हर्ष भरी, मानो भामण्डल भाई है ।
विश्वास हृदय धारण करके, संग जाने की ठहराई है ॥
मणि जड़ित पालकी में लेकर, राजा वन से चल देते हैं ।
जो राव प्रजा मारग में थे, दे भेंट सिया से मिलते हैं ॥
वज्रजंघ ने नगरी सिंगारी, सब नारियां स्वागत करती हैं ।
सीता की सेवा तन मन से, हर्षित हो हो कर करती हैं ॥
जो द्रव्य भेंट में आता है, सीता सब धर्म में देती है ।
मन धर्म ध्यान में दे करके, दुख अपने को कम करती है ॥

दोहा—इधर सिया पुन्डरीक पुर, पहुंच गई फिलहाल ।
उधर अवध सेनापति, जाय सुनाया हाल ॥

कव्वाली

सुनो स्वामी सिया को, ऐसे वन में छोड़ आया हूं ।
मनुष्य तक नहीं का संचार, यह मैं देख आया हूं ॥
कहाती सिंहनाद अटवी, भयानक है बहुत भारी ।
पशु पक्षी हजारों ही, बहुत से सिंह बलधारी ॥
कहा माता ने जो वह आपसे, कहने को आया हूं ॥
सुनाया हाल रघुवर को, दुखित हो मूर्छा खाई ।
हुआ जब होश फिर तो, याद सीता की बहुत आई ॥

हाय यह क्या किया मैंने, वज्र हृदय हुआ मेरा।
गर्भ के भार से सीता, हुआ वन बीच क्यों डेरा॥
कर्म के फल ने आ घेरा, यही विश्वास लाया हूं।
कहो सेनापति! सचमुच क्या वन में छोड़ आए हो॥
मौन सेनापति धारा, आप कह कर लजाए वो।
दुःखी होकर विलखते हैं, तभी फिर मूर्छा आई॥
लखन आ होश में लाए, ये क्या करते हो रघुराई।
ढूँढ़ माता को लाएंगे, यह "दासी" से बताया हूं॥

दोहा—क्या समझाऊं आप को, ज्ञानी हो तुम वीर।
होनहार टलती नहीं, हृदय धारो धीर॥

कर्मों से ही ये निमित्त मिलें, टाले से नहीं टलते भाई।
और कर्म ही रक्षा करते हैं, पर्वत से चाहे गिर जाई॥
आकाश से नीचे आन गिरे, या सिन्धु में भी पड़ जाये।
यदि आयु कर्म सहाई है, बिन मौत न कोई मर पाये॥
माता की रक्षा भी होगी, चाहे वन बीच छोड़ आये।
यदि आप चाहते हैं स्वामी, कर के तालाश उन्हें लाये॥
समझाया लक्ष्मणजीने बहुत, तब रामको थोड़ा धैर्य हुआ।
अबपुण्डरीकपुर चलो चलें, जहाँपर लवकुशका जन्म हुआ॥
यह षष्टम-खण्ड समाप्त हुआ, आगे लवकुश की कथा कहूँ।
मिल कर सब प्रेमसे जय बोलो, महावीर, क्षमा सब चूक चहूं॥

सप्तम-खण्ड

[लव-कुश वृतान्त]

मंगलाचरण

दोहा – नमन करूं जिन देव को, सिद्धन शीश निवाय ।
पद्म नाभ दोऊ बाल की, कथा कथूं सुखदाय ॥
सब मिल बोलें प्रेम से, एक बार जयकार ।
चौबीसों जिनराज की, काटे कष्ट हजार ॥

कथा प्रारम्भ

सीता को वन से ला करके, भवनों में बसा दिया राजा ।
सेवा में दासी दास खड़े, था सब प्रकार से सुख साजा ॥
था गर्भभार दुर्बल शरीर, लेकिन स्वभाव में तेजी थी ।
तेजस्वी जीवों के स्वभाव की, सीता में आई छवि थी ॥
धीरे धीरे दस मास गये, दो युगल पुत्र उत्पन्न हुए ।
उत्सव मनाये बहु वज्रजंघ, थे लव कुश प्यारे नाम दिये ॥
दुःख भूल गई सीता सारे, जब शब्द तोतले बोलते हैं ।
अरु पकड़ धायकी उंगली को, आंगन के बीच डोलते हैं ॥
सब शस्त्र शास्त्र की विद्यायें, क्रम से पढ़कर विद्वान् बने ।
होगए युवा और बलशाली, कहां तलक कोई गुणगान करे ॥

और पुन्डरीक पुर के राजा, निज बत्तीस सुन्दर कन्यायें ।
पा योग्य कुमार लवण जी को, सारी की सारी परणायें ॥
इक राजा प्रथु उसकी कन्या, मदनाकुश की खातिर माँगी ।
उस ने देने से मना किया, कुल जांच करन की है ठानी ॥
ऐसा उत्तर सुन वज्रजंघ, के मन में क्रोध बढ़ा भारी ।
कर युद्ध जीत लाने निकले, ले कर के संग सेना भारी ॥
लव कुश को भी मालूम हुई, दोनों भाई दलबल से चले ।
सीता बोली हो बाल अभी, तुम युद्ध करन कैसे निकले ॥
बोले दोनों भाई माता, क्यों कायरता सिखलाती हो ।
हमको आशीर्वाद दीजे, वीरों की मां कहलाती हो ॥
इतना कह दोनो कूच किया, और आये जहां संग्राम मचा ।
दोनों भाई ने मिल करके, प्रलयंकारी वहां युद्ध रचा ॥
दोहा—डाल दिये हथियार तब, पृथु ने पीठ दिखाय ।
अनंग कहें कुल कौन है, मेरा सुनकर जाय ॥
चौ०—मेरा सुनकर जाय कि कुल है, कौन पिता और माता ।
शत्रु आगे पीठ दिखाते, हुए नहीं शर्माता ॥
मैं तो आया स्वयं बताने, लाज न भगते आती ।
शूरवीर हो डटो सामने, कायरता नहीं भाती ॥
मै०—यह सुनकर ठहर गया राजा, हर्ष का बजवाया बाजा ।
क्षमा दोनों से माँगी ॥
लगन देख कर कुश से की, है कन्याओं की शादी ।

दोहा—आस पास की दिग्विजय, हेतु चले दोऊ भ्रात।
राजा देश विदेश के, हार नवावें माथ॥
विजित किये बहु देश, और लौटे फिर निज देश।
मां, मामा दोनों मुदित, विक्रम वैभव देख॥
उधर अवध आये मुनि, नारद सुन सिय हाल।
दुखी हृदय ले चल दिये, ढूंढन को तत्काल॥
जा सिंहनाद अटवी ढूंढी, और फिर सारा जग छाना है।
पुन्डरीक पुरी के उपवन में, इक रोज हो गया आना है॥
वहां लव कुश आये क्रीड़ा को, दोनों ने उन्हें प्रणाम किया।
देवर्षि वेश देख करके, नारद का बहु सन्मान किया॥
नारद ने इनको देख परख, यह होनहार हैं जान लिया।
ऐश्वर्य तुम्हारा राम लखन सा, होवे यह आशर्वाद दिया॥
सुनकर यह लव-कुश तब बोले, हैं राम लखन कहां के राजा।
सब हाल बताया नारद ने, त्रिखंड-पति का पद साजा॥
उनकी महिमा को कौन कहे, यश इंद्र स्वर्ग में गाते हैं।
प्रजा के मन रंजन के लिये, पत्नी का त्याग कराते हैं॥
दोहा—और तो सब कुछ ठीक है, जो कहते ऋषिराज।
पत्नी वन में छोड़ कर, किया है काज अकाज॥
चौ०—किया है काज अकाज रामने, उनका मान घटायें।
अवधपुरी को शीघ्र चलें हम, बल उनका अजमायें॥
सुन करके सीता यह बोली, यह क्या सोची बेटा।

वहाँ न जाने दूंगी तुमको, कर्म मेरा है हेटा ॥
मैं०—पूछते दोनों भ्राता जी, रोकती क्यों हो माता जी।
सबब इसका बतलाओ ॥
ऐसा है क्या राज, आँख में जो आँसू भर लाओ।
दोहा—तब सीता कहने लगी, सुनो पुत्र मम बात।
मेरे रोने का सबब, अवधपुरी तुम जात ॥
श्रीराम तुम्हारे पूज्य पिता, हैं अर्धचक्री लक्ष्मण चाचा।
बलभद्र नरायण हैं दोनों, ये वचन हमारा है सांचा ॥
हे पुत्र सुनो दे ध्यान, यदि कोई मैं अमंगल सुन पाऊं।
तुम दोनों का, उन दोनों का, तो उस से पहले मर जाऊं ॥
इतना सुनकर दोनों भाई, माता को धैर्य बंधाते हैं।
सब अच्छा ही होगा माता, तुम को विश्वास दिलाते हैं ॥
श्रीराम ने अच्छा नहीं किया, परित्याग तुम्हारा यों करके।
जाकर हम मान घटायेंगे, यह निर्णय किया, युद्ध करके ॥

लावनी छन्द

सब नारद से मिल कहें, ऋषि क्या कीना ?
जो पिता पुत्र में कलह, आन रच दीना ॥
नारद ने कही मुझको, कुछ पता नहीं था।
यह हैं सीता के पुत्र, ये ज्ञान नहीं था ॥
अब भी अच्छा ही रहे, इन्हें जाने दो।
हो पिता पुत्र का मेल, समय आने दो ॥

बिन सिया राम का, जीवन भी छवि छीना।
जो पिता पुत्र में, कलह आन रच दीना॥
यह सुन कर सब, सीता को धैर्य बंधाया।
जो होनहार सो होय, कर्म की माया॥
लव-कुश ने मिल कर, गमन शीघ्र है कीना।
सब राजाओं को, अपने संग है लीना॥
नहीं किसी को कोई, कष्ट मार्ग में दीना।
जो पिता पुत्र में, कलह आन रच दीना॥

दोहा—जा कर सरयु तीर पे, डेरे दिए लगाय।
राम लक्ष्मण ने सुना, युद्ध करन कोई आय॥
करी तैयारी राम ने, राजा सब बुलवायँ।
भामण्डल हनुमान और, विभीषणादी आँय॥
वानर वंशी मिल सभी, आए अयोध्या तीर।
लवकुश से लड़ने चले, राम लखन दोऊ वीर॥

तब नारद भामण्डल से मिल, कर सारा हाल सुनाते हैं।
यह दोऊ भ्रात हैं सिया पुत्र, तुमको ये राज बताते हैं॥
सुन भामण्डल बहु दुःख माना, सीता से मिलने जाते हैं।
भाई से मिल कर सीता के, अविरल अश्रु बह जाते हैं॥
दे धैर्य बिठा कर निज, विमान ले आये साथ रणस्थल में।
नभ से देखा जब सियायुद्ध, कुछ साता सी पहुँची मन में॥

सुग्रीव विभीषण हनुमत से, यह नारद जी बतलाते हैं।
यह लवकुश दोनों युगल भ्रात, और सियापुत्र कहलाते हैं॥
सब राव युद्ध में शिथिल हुए, सुनकर नारद की वाणी को।
नभ मारग से आते देखा, सब ने सीता महारानी को॥
सब झुक झुक उन्हें प्रणाम करें, कहें धन्य पतिव्रता नारी।
जो पड़ा धैर्य से सभी सहा, है धन्य धन्य साहस भारी॥
श्री राम लवण से करते थे, संग्राम उधर डट कर भारी।
लक्ष्मण मदना-कुश पर करते थे, बाणों की वर्षा कारी॥
थे यह दोनों सुत वंश-अंश, हथियार वार नहीं करते हैं।
यह देख राम और लक्ष्मण के, मन इस शंका से भरते हैं॥
यह कौन वीर हैं अवतारी, जो आकर टिके मुकाबिल हैं।
आधी भू के राजा नमते, फिर यह क्यों डटे मुकाबिल हैं॥
लवकुश को तो सब हाल ज्ञात, पर इनको कुछ मालूम नहीं।
द्विगुणित बलसे करते हैं युद्धपर, विजय इन्हें मिलती ही नहीं॥
हल मूसल दिव्य अस्त्र सारे, सब चित्र लिखे हो जाते हैं।
जो नारायण के अस्त्र चले, सब ऐसे ही बन जाते हैं॥
मदनाकुश ने लक्ष्मण जी पर, धीरे से सेल चलायी है।
था बहुत बच, कर के मारा, तो भी चक्कर ले आयी है॥

गजल

नेत्र लक्ष्मण के घूमे हैं, सारथि रथ फिराया है।
युद्ध से लौट कर चलता, अवध की ओर आया है॥

कहा लक्ष्मण ने क्यों रथ को, मेरे लाए घुमा रण से ।
रहा नहीं ख्याल क्या तुमको, वीर घर जन्म पाया है ॥
युद्ध में मृत्यु जीना है, दिखाना पीठ मृत्यु है ।
चलो शत्रु के सम्मुख ही, समय कैसे गंवाया है ॥
घुमा रथ लक्ष्मण रण में, शीघ्र शत्रु पे आए हैं ।
सुदर्शन चक्र को कर याद, फिर कुश पर चलाया है ॥
चला, कुछ दूर वापस लौट, फिर से हाथ आया है ।
नहीं कुश पर किया हमला, दुबारा फिर चलाया है ॥
चलाया बारहा लक्ष्मण, वह वापस लौट आया है ।
लखन् 'दासी' खड़े सोचें, ये क्या भगवन माया है ॥

दोहा—राम लखन के शस्त्र सब, हो गए हैं बेकार ।
पुनि पुनि देखें ध्यान से, सोचें बारम्बार ॥

बलभद्र नारायण हम हैं नहीं, ये ही अवतारी आए हैं ।
लक्ष्मण ने कोट-शिला ठाई, मुनियों के वचन गंवाए हैं ॥
रावण मारा और चक्र मिला, क्या ये सब बातें मिथ्या थीं ।
सब अस्त्र शस्त्र चित्राम बने, इन सब ने आज अवज्ञा की ॥
तब हाथ उठा ऊँचे स्वर में, नारद यूं कहते थे रण में ।
यह पुत्र तुम्हारे प्यारे हैं, गई गर्भवती सीता वन में ॥
मुनियों के वचन न झूठे हों, बलभद्र नारायण तो तुम हो ।
यह दोनों अंग तुम्हारे हैं, नहीं शस्त्र चलें इन पर सम हो ॥
यह सुन कर राम लखन ने तब, शस्त्रों को नीचे डाल दिया ।

रथ से उतरे मिलने को चले, लव कुशने भी आ चरण गहा ॥
तब राम लखन ने प्रेम सहित, सीने से उन्हें लगाया है ।
आंखों में आंसू लाकर के श्रीराम ने यह बतलाया है ।
मुझ मम निर्दयी को है बेटा, थे गर्भ में तुम्हें निकाल दिया ।
प्राणों से प्यारी सीता को, दे वनोवास महापाप किया ॥
यदि वज्रजंघ वहाँ नहीं आते, तो कैसे तुम्हें देख पाता ।
भामंडल सम मम हितकारी, उन पहुँचाई हमको साता ॥
लव कुश को साथ बिठा करके, ले अवधपुरी में आते हैं ।
कर राजकुमारों के दर्शन, नर नारी हर्षित होते हैं ॥

दोहा— दृश्य सभी लख व्योम से, सीता वापस जांय ।
भामण्डल, हनुमान तब, कहे राम से आय ॥

हे पद्मनाभ, हे कमल नेत्र, हम सब की इच्छा सुन लीजे ।
निर्दोषित जनक दुलारी को, अब तो वापस बुलवा लीजे ॥
श्री राम कहें बन्धु उनको, लोकापवाद से त्यागी है ।
दें कठिन परीक्षा कुछ सत् की, तब बनें मेरी अनुरागी हैं ॥
उनको समझा देना यह भी, मुझको उन पर सन्देह नहीं ।
पर बिना परीक्षा जनहित में, मुझको उनका स्वीकार नहीं ॥
लेकर सन्देश दोनों आये, बोले अब मात अवध चलिये ।
श्री राम ने तुम्हें बुलाया है, इसलिये विलम्ब नहीं करिये ॥

दोहा —सुन सीता कहने लगी, सुनो भ्रात हनुमान ।
दुर्जन वचनों से मेरा, मन संतप्त महान ॥

यदि क्षीर समुन्दर से सींचूं, तो भी न घाव मिटे कारी।
तब राम वचन को छुपा कहा; थी चूक राम की यह भारी॥

श्रीराम की आज्ञा है माता, अब निश्चय ही चलना होगा।
दुर्जनों को उन दुर्वचनों का, निश्चय ही फल चखना होगा॥
तब चली सिया अनुराग भरी, रघुवर के दर्शन पाने को।
उद्यान में जाकर ठहरी है, भई भोर उठी तब जाने को॥

हस्ती पर चढ़ सखियों को ले, दरबार राम में जाती है।
द्वारे से पैदल चल कर के, श्री राम पास तक आती है॥
सब राजा सिय को कभी लखें, और कभी राम को देख रहे।
लक्ष्मण पर कभी दृष्टि जाती, कभी सोच कर्म की रेख रहे॥

श्रीराम सिंहासन पास खड़ी, सीता इन्द्राणी लगती है।
श्रीराम विरह से मुख मलीन, फिर भी सबका मन हरती है॥
रघुवर ने देखा जानकी को, जो रामचरण अनुरागी है।
सोचें इसका है प्रेम प्रबल, अनुपम अनन्य अनुरागी है।

मन भाव दबाकर, कहा प्रकट, मैं तुम्हें देखना नहीं चाहता।
कुछ शील परीक्षा दो सबका, जिससे मुझको हो सुख साता॥
कुछ दिव्य कायकर दिखलाओ, तब मेरे संग रह सकी हो।
लोकापवाद से त्यागी थी, उस दोष को तुम हर सकी हो॥

दोहा—जनक दुलारी ने सुनी, श्री राम की बात।
बिलख २ कहने लगी, पीला पड़ गया गात॥

तज—जादूगर सैयां

लीजो सुन स्वामी, तुम्हीं जग नामी।
सत्य कहूँ सब बात, परीक्षा होने दो॥
आज्ञा तुम्हारी, मानू मैं सारी।
कभी ना लौटी बात, परीक्षा होने दो॥

हे पद्म नाभि, वन में क्यों त्यागी, ऐसा कौन कसूर था।
उसी समय कहते, परीक्षा ले लेते, मुझको सब मंजूर था॥
कसर ना छोड़ो नाथ॥ परीक्षा होने दो॥ १॥
मृत्यु जो आती, कुमरण पाती, मिलती दुर्गति राह है।
सुख नहीं चाहूँ, कुछ नहीं पाऊँ, मोक्ष पुरी की चाह है॥
क्या आता तुम्हारे हाथ॥ परीक्षा होने दो॥ २॥
हर्षित होईये, आज्ञा कीजिये, अग्नि कुंड जलवाईये।
आशु-विष लाइये, मुझको पिलाइये, कोईभी दिव्य दिलाइये॥
सब लेलू मैं एक साथ॥ परीक्षा होने दो॥ ३॥
सत्यदिखाऊंगी, शंका मिटाऊंगी, चरणोंकी दासी मैंआपकी।
आपकेसिवाय कोई,पुरुष न जानासोई, मालाजपू मैं तुम नामकी।
आदीश प्रभु की आश॥ परीक्षा होने दो॥ ४॥

दोहा—राम बहुत कुछ सोच कर, बोले फिर इक बार।
अग्नि परीक्षा दीजिये, निश्चित यही विचार॥

सीता जी ने स्वीकार किया, श्रीराम ने आज्ञा सुनवाई।
तीन सौ हाथ चौरस गहरी, एक बड़ी वापिका खुदवाई॥

सूखा इंधन अगरु चन्दन, से उसे लबालब भरवाया।
घृत स्नेह के कुप्पे कई उलट, अग्नि से उसको दहकाया॥
जो उठी आग हो क्या बयान, आकाश से जाकर लगती है।
तब सारी प्रजा जोड़ के कर, श्रीराम से विनती करती है॥
हे देव! न ऐसा कोप करो, माता नहीं बचने पायेंगी।
हे राम! सिया हैं महासती, पर आग अवश्य जलायेगी॥

—दोहा—

राम कहें ऐसा ही था, क्यों कीना अपवाद।
अब तो मेरी जानकी, करवायें विश्वास॥

देव प्रसन्न अब होइये, कहे विभीषण राय।
भामण्डल हनुमान भी, रो रो कर समझाय॥

लव-कुश सोचें हाय क्या, होगया काज अकाज।
माता फिर दीखें नहीं, क्या सोची रघुराज॥

चौबोला

दोहा—नारद भी कहते यही, सुनले राम-सरोष।
अवधि ज्ञान बल मैं कहूँ, है सीता निर्दोष॥

चौ०—है सीता निर्दोष न झूठी, करें प्रशंसा साधु।
माने मेरी सीख रोक दें, है ये काम असाधु॥
अग्नि भड़कती जाती थी, निर्घोष राम कर बोले।
अग्नि परीक्षा होनी होगी, जो होना सो होले॥

मै०—बात नहीं किसी की मानी जी, जो निश्चय मन ठानी जी
राम ने वही कराया ।
देख पति हठ सुकुमारी, ने आगे कदम बढ़ाया॥
दोहा—इधर सिया का पग बढ़ा, आगे सुनो बयान ।
उसी समय श्री सकल मुनि, पाया केवल ज्ञान ॥
बन्दन करने श्री इन्द्रदेव, देवों के संग में आते हैं ।
वहां अग्नि जलती देख, ध्यान में सब घटनायें लाते हैं ॥
सीता की अग्नि परीक्षा है, सतवन्ती का मत कायम हो ।
हे मेघ रुको और करो मदद, जिससे सीता यश कायम हो ॥
इतना कह करके इन्द्र चले, और मेघ वहां रह जाता है ।
चलते चलते सीता का पग, अग्नि समीप आ जाता है ॥
ऋषि नारद और नरेशों की, भी हाय सीख मैं ना मानी ।
यह सोच सिया पग बढ़ा देख, नयनों में राम भरे पानी ॥
इतने में सीता उठती है, सिद्धों को स्मरण करती हैं ।
नवकार मन्त्र का जाप करे, सम्यकदृष्टि ना डरती हैं ॥
ज्वाला लपटों के निकट पहुँच, सीता सिद्धों का ध्यान किया ।
नवकार जपा सम्यकदृष्टिन, मन से भय पाप निकाल दिया ॥
दोहा—राजा परजा देखते, सुन्दर सिया शरीर ।
जलथल कर अवगाह हो, सब ही हुए अधीर ॥
सीता करती प्रार्थना, हे प्रभु दीन दयाल ।
सत्य व्रत्त यदि है मेरा, आप करो प्रतिपाल ॥

[सीता जी अग्नि प्रवेश के समय प्रार्थना करती हैं।]

धुन, नागिन—मेरे राम के सहारे आजा।

आदीश प्रभु अब आ जा, मेरी लाज बचाले आ जा।
है परीक्षा मेरी, अब शरण हूँ तेरी॥
मरु देवी दुलारे आ जा, मेरी लाज बचा ले आ जा॥
पाप हृदय में मेरे कभी आया हो! आया हो!
भस्म कर देना स्वामी, मेरी काया हो! काया हो!!
श्री राम सिवा, नहीं पुरुष लखा॥
मेरा सत्य दिखाने आ जा। मेरी लाज बचाले आजा॥१॥
पतिव्रत धर्म जो मेरा अटल! हां अटल!!
नीर बन जाये, अग्नि, समस्या जटिल! हां जटिल!!
देख दुनिया भी ले! दोष मुझ को जो दें!!
मम ताप मिटा जा, आजा! मेरी लाज बचाले आजा॥२॥
इतना कह के सिया, झट कूद पड़ी! हां पड़ी!!
श्री राम के हृदय में, करुणा भरी! हां, भरी!!
दृश्य बदले तभी, देखे दुनिया सभी।
'दासी के सहारे आ जा। मेरी लाज बचाले आजा॥३॥
दोहा—करी प्रार्थना सिया ने, बढ़ी अगनि में जाय।
जिधर जिधर बढ़ते चरण, अग्नि बनी जल जाय॥
अगनि से सरोवर बन जाता, ये सत्य की महिमा सारी है।
चहुं ओर कमल हैं फूल रहे, आश्चर्य भरे नर नारी हैं॥

देवों ने रच के स्वर्ण कमल, शतदल वाला सिय पधराई ।
आरती उतारी कर पूजा, सती की महती महिमा गाई ॥
फिर उस जल ने लेकर उछाल, मैदान सरोवर कर डाला ।
घुटनों से लेकर शीश तलक, सबको ही वहां डुबा डाला ॥
नर नारी घबरा जाते हैं, बच्चों को अधर उठाते हैं ।
सीता से प्रार्थना सभी करें, कृपा की आश लगाते हैं ॥
हे जिनवाणी सम शुद्ध सिये, सच्ची अखण्ड शीला माता ।
हम निरपराध हैं क्षमा करो, दुर्जन को करो दण्ड माता ।
तब सीता ने देवों से कह, पानी को कम करवाया है ॥
घटते घटते चरणों तक ही, जाकर के वह ठहराया है ।
लव कुश आके माता के दोनों, ओर खड़े हो जाते हैं ।
अगनि में तपे स्वर्ण जैसी, वह चमक सिया में पाते हैं ॥
थी स्वर्ण मूर्ति देवांगना सी, जानकी तेजमयी सोहती ।
रघुवीर खड़े अनुराग भरे, सब तन मन उनका है मोहती ॥
रघुवीर पास आ सीता के, ले क्षमा, याचना करते हैं ।
अब मेरे साथ चलो रानी, आँखों में आंसू भरते हैं ॥

चौबोला

दोहा—तब सीता कहने लगी, हो कर के गम्भीर ।
नहीं सुख थिर संसार में, स्वामी धरिये धीर ॥

चौ०—स्वामी धरिये धीर, बहुत कर्मों के दृश्य देखे हैं ।
देव आपके साथ बहुत, दुनिया के भोग भोगे हैं ॥

अब तो इच्छा है आगे, मैं नारि जन्म नहीं पाऊँ।
इसीलिये मैं करूँ साधना, बन्धन से छुट जाऊँ॥
०—क्षमा अब मुझको करनाजी, दोष मम मन मत धरनाजी।
नहीं अभिलाषा है कोई।
दीक्षा लेना चाहूँ स्वामी, आज्ञा दीजे सोई॥
दोहा—काले घुंघराले मसृण, लम्बे लम्बे केश।
करकमलों से लोचकर, किया अर्जिका वेश॥
श्री राम देखते ही रहते, चरणों में उनके फेंक दिए।
दोनों कुमार थे पास खड़े, नैनों में अपने नीर लिये॥
श्री राम को इत मूर्छा आई, उत सिया मुनिजी पास गई।
केवली सकल भूषण समीप, ली दीक्षा श्री जिन धर्ममई॥
लक्ष्मण ने कर भ्राता सचेत, बहु भांति उन्हें समझाया है।
पर मोह वशी हो पद्मनाभ, देवों पर रोष दिखाया है॥
कहते हैं मेरी रानी को, यदि आज देव नहीं देवेंगे।
मैं उनसे युद्ध करूँगा निश्चित, वह मुझसे बच नहीं पावेंगे।

गजल

दिखाया सत्य रानी का, किया सन्मान भी भारी।
किया है उचित देवों ने, सत्य को देखा नर नारी॥
नहीं लेकिन उचित उनको, मेरी रानी को ले जाना।
मेरी आज्ञा बिना यह सब, करें ऐसा क्यों मनमाना॥
गए वहां पर जहां सीता, अर्जिका वेश में सोहैं।

बनी योगिन लिये अद्भुत छवि, सुर नर का मन मोहें ॥
देख कर गंध कुटी श्रीराम, वैभव त्याग कर आये ।
नमन कर केवली को बैठ, धर्मोपदेश सुन पाये ॥
धर्म धारी राम जी धर्म सुन, इक प्रश्न करते हैं ।
मैं दीक्षा कब धरूं, भगवन् , जिससे भव पार तरते हैं ॥
दोहा—राज तजुं नारी तजुं, भाई तजा न जाय ।
एक लखन के प्रेम वश, दीक्षा धरी न जाय ॥
क्या दीक्षा है का योग कभी, या जीवन यों ही जायेगा ।
तब वचन केवली कहते हैं, कुछ दिन न योग हो पायेगा ॥
बलभद्र नारायण की जोड़ी, कुछ काल राज का भोग करो ।
फिर लखन मृत्युको प्राप्त होय, इसके ही बाद तुम योग धरो ॥
हो चर्म शरीरी इसी भव में, ही मोक्ष राम तुम पाना है ।
यह सुन कर सब हर्षित होते, सन्तोष राम मन आना है ॥
फिर प्रश्न विभीषण ने पूछा, रावण जैसे पंडित ज्ञानी ।
सीता का हरण किया कैसे, यह भी बतला दीजे स्वामी ॥
ऐसा बलधारी शूर वीर, ऐसी म्रत्यु को क्यों पावे ।
अपवाद हुआ क्यों सीता का, फिर यश भी देवों से पावे ॥
उत्तर केवल ज्ञानी ने दिया, साथी सब अनेक भवों से हैं ।
सीता रावण और लक्ष्मण के, भव भव के बैर सभी के हैं ॥
हर योनि में और हर भव में, तीनों के साथ कुछ होते हैं ।
सीता के जीव पे ये दोनों हर, भव में लड़ कर मरते हैं ॥

यह राम लखन भाई भाई, इनका भी स्नेह भवों का है।
ज्यादा लिखने से कथा बढ़े, यह नाता यूं ही सबों का है॥
जिस भव में सीता वेदवती, लक्ष्मण का जीव पिता इसका।
उस भव में जीव ने रावण के, उससे मांगा रिश्ता इसका॥
पर पिता ने कर इंकार दिया, तब आकर उसने मार दिया।
और क्वारी वेदवती घर में, जबरन उसका हर शील लिया॥
तब भरी रोष से वेदवती, उस जीव से यही वचन कहती।
मम शील हरा और पिता हना, इसका बदला परभव लेती॥
वह कर्म बन्ध, वह भाव बन्ध, इस भव में यों सम्मुख आया।
सीता का पिता हुआ लक्ष्मण, वह जीव दशानन कहलाया॥
गत भव में दशानन ने मारा, इस भव में इसने मार दिया।
कारण सीता का जीव बना, यों कर्म बन्ध नव बांध लिया॥
अपने गत भव में सीता ने, एक मुनि की निन्दा कीनी थी।
मुनि पास बहिन बैठी उनकी, इन पाप की उपमा दीनी थी॥
इन दोनों का पापी नाता, यह लोकापवाद फैलाया था।
तब मुनि ने अनजल त्याग दिया, वहां नगर देवता आया था॥
उसने ही इससे कह कर के, लोकों से यह कहलाया था।
मैंने मिथ्या अपवाद किया, और मुनि से क्षमा कराया था॥

दोहा—श्रावक व्रत धारे तभी, मरण समाधि धारि।
स्वर्गों में देवी हुई, फिर हुई जनक दुलारि॥

चौ०—फिर हुई जनक दुलारि, मुनि निंदा से निंदा पाई।

मिथ्या कही अपने मुंह से, जा मुनी से क्षमा कराई ॥
इसीलिए इसका भी यश, देवों ने आन किया है।
निकट भव्य है, मोक्ष पायगी, सभी बताय दिया है ॥
मै०—राम के सेनापती सुन जी, धरूं दीक्षा मन ठानाजी।
पास रघुपति के आये।
लें ये सम्पदा आप, धरूं दीक्षा यह मम मन भाये ॥

दोहा—राम कही मम संग ही, दीक्षा लेना धार।
सिया चली तुम जा रहे, धैर्य न आता सार ॥

तब सेनापति कर जोर प्रार्थना, रघुवर से यह करते हैं।
हर बार विचार न बन सकते, न कारज आ के सरते हैं ॥
इस समय तो मन वैराग्य हुआ, भव बन्धन से छुट सक्ता हूँ।
यह शुभ की घड़ी आई स्वामी, मैं क्षमा आपसे चाहता हूँ ॥
श्रीराम ने आँसू भर कर के, आज्ञा सेनापति को दी है।
यदि तुम जाते हो तो जाओ, एक कलित कल्पना मन की है ॥

दोहा—यदि तुम जाओ मोक्ष में, तब तो हो लाचार।
स्वर्गों में जाओ अगर, हमें सम्बोधो सार ॥
वचन देओ सेनापती, भूल न जाना वीर।
ऐसा कह कर के गए, सीता जी के तीर ॥
अर्जिकाओं के बीच में, श्वेत वस्त्र को धार।
जिमी तारों में चमकती, चन्दा की द्युति सार ॥

वह सुन्दर सरस्वती शोभे, श्रीराम ने आकर नमन किया।

कुछ देर देखते रहे, राम; आंखों से जलकण पोंछ लिया ॥
दोनों भाई स्तुति करें, अपराध की क्षमा कराते हैं।
दिल बार बार भर आता है, पर फिर वापस घर आते हैं॥
नर नारी अवध के कहते हैं, बिन सिया राम नहीं सोहते हैं।
ज्यों चाँद चाँदनी बिन होता, ऐसे ही राम भी लगते हैं ॥
क्या वज्र हृदय सीता का है, जो ऐसे पति को छोड़ दिया।
लवकुश की भी ममता न करी, इकदम से नाता तोड़ दिया ॥

दोहा—इधर सिया तप करत है, हृदय धर कर धीर।
उपवासों से हो गया, दुर्बल बहुत शरीर ॥
देख तपस्या सिया की, सभी अर्जिका जोय।
अनुकरण उसका करें, उसकी चर्चा होय ॥

गजल

तपस्या करते सीता को, वर्ष बासठ गुजर जाते।
रही आयु सिरफ तेतीस दिन, यह ग्रन्थ बतलाते ॥
समाधी धार लेती है, अन्न जल त्याग देती है।
अंत में सोलवें स्वर्गों में, जा प्रत्यैन्द्र होती है ॥
बहुत ऐश्वर्य और ऋद्धि, देव आश्चर्य करते हैं।
देवांगनाएँ हजारों हैं, देव सब सेवा करते हैं ॥

दोहा—पुण्य कथा श्रीराम, की सुने श्रमण चित लाय।
जिस पर चलकर भव कटें, अन्त मोक्ष मिल जाय ॥

यह सप्तम खण्ड समाप्त हुआ, अब मोक्षगमन का शेष रहा।
'दासी' उसको लिखना चाहती, जो पुन्य बन्ध अवशेष रहा ॥

अष्टम-खण्ड

[मोक्ष-गमन]

मंगलाचरण

दोहा—कर जिनेश की आरती, सिद्धन शीश नवाय ।
कथा राम निर्वाण की, कहूँ सुनो मन लाय ॥

कथा-प्रारम्भ

एक समय की बात थी, अपने महल मंझार ।
सुना राम हनुमान ने, दीक्षा लीनी धार ॥
हंस पड़े राम बोले यह कथा, दीक्षा कैसे धारण करली ।
सब भोग तजे आश्चर्य बड़ा, ममता तज दी भक्ति भजली ॥
श्रीराम लखन ले मन अजरज, त्रिखंड राज को भोग रहे ।
और उधर स्वर्ग में एक दिवस, यह इन्द्रराज ने वचन कहे ॥
कब भाग्य उदय अपना होगा, जब मनुष्य जन्म धारेंगे हम ।
मुनि होकर करके तप, दुद्धर फिर मोक्ष गति पायेंगे हम ॥
एक देव कहे यहां ऐसा ही, सब इन्द्र प्रत्यैन्द्र कह देते हैं ।
जब मनुष्य गति मिल जाती है, दीक्षा का नाम न लेते है ॥
श्रीराम जीव प्रन्यैन्द्र यहाँ, पाँचवे स्वर्ग का अधिकारी ।
वह भी यूं ही कह देते थे, अब दीक्षा ना लें हितकारी ॥
सब इन्द्र कहें श्रीराम सभी, नारी और राज भी तज सकें ।

लक्ष्मणका स्नेह है उन्हें बहुत, इसलिये न दीक्षा धर सके ॥
दो देव दुराचारी उनमें, सोचें हम चले परीक्षा लें।
श्रीराम भवन में जा करके, उनकी मृत्यु घोषित कर दें ॥
विक्रिया शक्तिवश महलों में; रानियां रुदन बहुभांति करें।
तब राम मृत्यु का समाचार, प्रहरी आकर लक्ष्मण को दें ॥
यह सुनकर हाय शब्द निकला, और लक्ष्मण तुरत अचेत हुए
ऐसी प्रगाढ निद्रा आई; जिससे न कभी सचेत हुए ॥
पहले तो रूठे हुए समझ, सब रानियां उन्हें मनाने लगी।
कोई नृत्य करे कोई लय स्वरमें, संगीत से सजन रिझाने लगी
जब किसी तरह भी ना बोले, निर्जीव समझ के रोने लगी।
रोना सुन राम वहां पहुंचे, उनकी सब रानी आने लगी ॥

दोहा—देख लखन की यह दशा, चित्र लिखे से राम।
खड़े खड़े मूर्छित गिरे, रोकें उन्हें तमाम ॥
होश हुआ कहने लगे, कहां चले रणधीर।
कौन मुझे अब धैर्य दे, बतलाओ बलवीर ॥

सोहनी-छन्द

रूठ के क्यों आज, मेरे वीर ऐसे सो गए।
आज्ञाकारी थे मेरे, क्यों आज तुम बिसरा गए ॥
दूर से ही देख कर, उठ जाते स्वागत को मेरे।
आज क्यों नहीं बोलते, बर्बाद मुझको कर गये ॥
देख लक्ष्मण की दशा, लव-कुश भी फौरन चल दिए।

संसार ये है असार, दीक्षा धारने को बन गए॥
राम के आनन्द की, घड़ियाँ सभी जाती रहीं।
नारियों पुत्रों को तज कर, वीर में ही लग गए॥
कुछ खबर तन की ना मन की, इक लखन का ध्यान है।
हाल क्या लिख सकती "दासी" राम चरित्र महान है॥

दोहा - बार २ श्रीराम जी, हृदय लेय लगाय।
इक पल को छोड़ें नहीं, चख २ भरते हाय॥

सोते हैं भुजाओं में लेकर, विश्वास किसी का नहीं करते।
कानों में रात को कहते हैं, हे वीर बात क्यों नहीं करते॥
इस समय अकेले हम दोनों, फिर भी तुम क्यों नहीं जागते हो।
लव-कुश दीक्षा लेने को गए, क्यों उन्हें न वापिस लाते हो॥
क्या सीता आई याद तुम्हें, वह तो परलोक सिधार गई।
अपने दुःख में वह आप सहायक, होके इस दुनियां से गई॥
हे वीर अयोध्या की रक्षा, तुम बिन कैसे हो पायेगी।
अब कौन यहां है बलशाली, सारी नगरी लुट जायेगी॥
जैसे शक्ति से जागे थे, अब भी वैसे ही उठ जाओ।
जाओ खोजो महिमण्डल में, कोई नई विशल्या ले आओ॥
हाथों में उड़ाये फिरते हैं, नाना उपचार कराते हैं।
मृत्यु का कौन इलाज करे, ज्ञानी होकर भरमाते हैं॥

दोहा—विभीषण अरु सुग्रीव ने, सुना राम का हाल॥
अवपुरी को सब चले, जान लखन का काल।

गजल

बैठ विमान में आते, राम को सब ही समझाते।
धार्मिक तत्त्व की चर्चा कर, और दुःख को भुलवाते॥
विभीषण राम से कहते, दाह क्रिया भी अब करिये।
विवेकी आप हैं ज्ञानी, हृदय का शोक भी हरिए॥
सुना यह राम ने कहने, लगे भाई मेरे जीते।
अमंगल वचन भाई को, सभी हर बार क्यों कहते॥
वीर है लक्ष्मण भाई, त्रिखंड जीते हैं भुजबल से।
तुम अपने भाई बेटों की ही, क्रिया क्यों नहीं करते॥
कहा लक्ष्मण से अय भाई, चलो कहीं और बैठेंगे।
जहां इन पापियों के, शब्द सुनने में न आयेंगे॥
तुमने रावण की मृत्यु पर, रुदन कैसा मचाया था।
मेरे भाई जैसा भाई, विश्व भर में न पाया था॥
लगी अपनी सभी जानें, दूसरों का ना दुःख मानें।
सभी को आता है उपदेश, देना हम भी तो जानें॥
हे भाई क्यों नहीं जागो, मुझे सब से ही कहलाते।
कभी इतना नहीं सोते, नहीं "दासी" से बतलाते॥

दोहा—ऐसा कह उठ कर चले, कांधे धर लिये वीर।
राम दशा को देखकर, सब ही होय अधीर॥

महलों में पहुँच कर लक्ष्मण को, चन्दन से चर्चित करते हैं।
स्नान करा कर मुकुट लगा, कंगन औ हार पहनाते हैं॥

फिर तरह तरह के सुन्दर भोजन, सेवकों से मंगवाते हैं।
अपने हाथों से ग्रास उठा, लक्ष्मण जी को वे खिलाते हैं॥
लेकिन कैसे खायें लक्ष्मीधर, जीव तो उनके था ही नहीं।
अब तो यह कथा यहाँ ही रही, हमको जाना है और कहीं॥
दोहा—चन्द्रनखा का पुत्र और, इन्द्रजीत का कुमार।
सब मिल अवध को चल, दिए बदला लेने सार॥
लक्ष्मण की मृत्यु हुई, राम बहुत हैरान।
बदला लेने का समय, अब पहुंचा है आन॥

कव्वाली

सभी राजाओं को ले कर, अयोध्या चल के आते हैं।
उधर स्वर्गों में आसन देवों, के हिल हिल के जाते हैं॥
जटायु के जीव ने जोड़, कर अवधि से जाना है।
राम के भाई लक्ष्मण ने, हाय मृत्यु को पाना है॥
मुझे पाला था जिस श्रीराम, ने उन पर विपत आई है।
दिया मरते को मंत्र नवकार जिस से देवगति पाई॥
सोच के ऐसा जाने के लिए तैयार होते हैं॥ उधर स्वर्गों..
दूसरा देव भी सुन के कहे, वह स्वामी हैं मेरे।
था उनकी सैन का सेनापति, यह याद है मेरे॥
विपत में आके सम्बोधुं, वचन उनको दिया मैंने।
गया क्यों भूल यहाँ आकर, दिलाई याद है तुमने॥
करें सेवा मिल के दोनों, अवध में चल के आते हैं।

उधर श्रीराम ने सुन कर, धरा कांधे पे भाई को।
उठा कर के धनुष अपना, चले हैं युद्ध करने को॥
इधर देवों ने सब पर मोहिनी डाली विक्रिया की।
दोनों ही देव मिल के कर, रहे रक्षा अयोध्या की॥
हुए मोहित सभी पागल, ऐसी माया दिखाते हैं॥ उधर...

चौबोला

दोहा—अवध के चारों ओर ही, पर्वत पड़े दिखाय।
कोट मिले आकाश तक, मारग नहीं दिखाय॥
चौ०—मार्ग नहीं दिखाय, राम की नगरी दुर्गम भाई।
पश्चाताप करें सब इसको, नहीं ले सका कोई॥
रास्ता भी कहीं नजर न आए, वापस कैसे जाईं।
दक्षिण दिश का मार्ग देव ने, उनको दिया दिखाई॥

मैदान

मार्ग में सब ही सोचें जी, चचा से आये छुप कर।
उन्हें क्या उत्तर देंगे।
कैसे मुख दिखलाएँ जा कर, दीक्षा सभी धरेंगे॥
दोहा—दीक्षा जब सब ने लई, देव पास में आंय।
अपना हाल बताय कर, सब से क्षमा करांय॥
फिर दोनों देव वहाँ से चल, श्रीराम पास में आते हैं।
कुछ ऐसे कार्य करे मिल कर, श्रीराम मूर्ख बतलाते हैं॥
कभी तेल निकाले बालू से, और बीज शिला पर बोते हैं।
कभी जल का मंथन घृतके लिए, मृत बैलसे हल जुतवाते हैं॥

यह देख राम कहते पागल, कहीं यह सब कुछ हो सक्ता है।
तब देव कही लछमण भी मरकर, क्या जिन्दा हो सक्ता है॥
लछमण भाई तो नीके हैं, यह शब्द अमंगल क्यों बोलो।
तब देव एक मुर्दा लाए, कहते उससे भैया बोलो॥
मुर्दा जीवित क्या हो सक्ता, रघुवर ने कथन विचारा है।
तब देवों की बन आई है, कहते अनुकरण तुम्हारा है॥
तुम बड़े पुरुष कहलाते हो, और हमको अच्छे लगते हो।
जो आप करे वही कार्य करे, फिर हमें मूर्ख क्यों कहते हो॥
छः माह की अवधि बीत गई, अब चेत राम को आई है।
जिनवाणी हृदय प्रकट भई, भाई की क्रिया कराई है॥
संसार स्वरूप समझ सोचा, जीवन का कौन भरोसा है।
इसको जो त्यागे धन्य वही, वैराग्य हिये में उपजा है॥

दोहा—दीक्षा लेने राम जी, जाते घर को त्याग।
शत्रुघन भी साथ में, लेन चले वैराग्य॥

श्री अनंग लवण के पुत्र को तब, श्रीराम तिलक कर देते हैं।
और अवधपुरी का राजभार, सब उसको दे चल देते हैं॥
विभीषण सुग्रीव आदि राजा, जितने भी राम सनेही हैं।
बीसों हजार दीक्षा धारी, सब बने मुनि वैसे ही हैं॥
श्रीराम सुव्रत आचार्य निकट, आकर के दीक्षा लेते हैं।
कोमल कर पल्लव से अपने, वह केश लोंच कर देते हैं॥
जिस समय उतारे हार मुकुट, कंगन, कुण्डल, नीलाम वस्त्र।

दो देव और बहु देव करें, नभ से इन पे रत्नों की वृष्टि ॥
तप भी ऐसा करते रघुवर, जो औरों से नहीं बन आये।
उपवास पंच ही सदैव करें, कर्मों को सतत खिपाय रहे ॥
इक दिन इक नगरी में गए, वहां देख सभी अचरज करते।
इस रूप रंग नवयौवन में, कोई नहीं तप ऐसा करते ॥
पृथ्वी पति राम देव महिमा, सब ही मिल करके गाते हैं।
उत्साह भरे सब नारी, सुध बुध अपनी बिसराते हैं ॥
अच्छे २ व्यंजन भोजन, आहार को इनके बना रहे।
किस भाग्यशाली के आयेंगे, आपस में सभी बताय रहे ॥
गज भी बन्धन को तोड़ चले, राजा भी देखने आता है।
वह राम पे मोहित हो करके, निज भृत्यों से यह कहता हैं ॥
इनको भोजन के हेतु मेरे, घर पर ले करके आ जाना।
प्रेमी पर अज्ञानी राजा, भोजन की विधि को न जाना ॥

दोहा—सेवक जा चरणों कहें, राजा रहे बुलाय।
आप योग्य भोजन प्रभु, एक वहीं बन पाय ॥

चौ०—एक वहीं बन पाय, राम ने अन्तराय तब जाना।
बिना आहार वनों में आये, जनता ने दुःख माना ॥
फिर से ले उपवास पंच, और यही प्रतिज्ञा धारी।
जो वन मिले आहार, लेय, नगरी ना जांय विचारी ॥

मै०—ये निश्चय धारण करते जी, ज्ञान अवधि पा लेते जी।
लखन के भव बहु जाने ॥

अपने भी तो जान लिये हैं, ममता को नहीं माने।

दोहा—इक राजा को अश्व इक वन में लाया घुमाय।
रानी पीछे आ रही, देख पति हरषाय॥
निकट सरोवर बैठकर, भोजन रहे बनाय।
इतने में श्री राम मुनि, गए आहार को आय॥

गजल

बड़े उत्साह से आहार, दोनों ने दिया वन में।
नवधा भक्ति सात गुण भी, जो हैं दातार के मन में॥
रत्न देवों ने वर्षाये, किए जयकार सुर नर ने।
कटक चक्री करे भोजन, हुई अक्षय निधि क्षण में॥
चले अहार लेकर राम तो, वन ध्यान आ धरते।
देव आकर करें पूजा, उसी राजा की आ वन में॥
राम आ कोट शिला पर, लगाकर ध्यान तिष्टे हैं।
उठाई लक्ष्मण ने जो, मंत्र नवाकार जप मन में॥

दोहा—उसी समय जो स्वर्ग में, जीव सिया जा जाय।
हुआ प्रत्यैन्द्र वह सोचता, अवधि ज्ञान के माय॥

अवधि से जाना लक्ष्मण की, मृत्यु से राम दुखित होते।
और अब मुनिव्रत धारण करके, शिव जानेका सामां करते॥
कुछ ऐसा उपाय करूं जाकर, जो राम ध्यानसे डिग जायें।
इस कारण मेरे पास सोलवे, स्वर्ग बीच ही आ जायें॥
दोनों मिल नदीश्वर जायें, और बहुत दिनों तक साथ रहें।

सब चैत्यालों का वन्दन कर, लक्ष्मण का जीव तलाश करें ॥
यह सोचके मध्यलोक में जहां, श्रीराम खड़े वहाँ आते हैं ।
विक्रिया से जानकी रूप धरा, वसंत ऋतु दिखलाते हैं ॥
सब ओर फूल ही फूल खिले, पत्ती २ थी महक रही ।
प्रत्यैन्द्र रूप सीता धारी, श्रीराम से ऐसे कथन कही ॥
हे देव आपकी आज्ञा बिना, मैंने जो दीक्षा धारी है ।
सो भ्रमण बहुत कीना मैंने, लेकिन शान्ति नहीं पाई है ॥
मैं आपके चरणों में आई, हूँ देव क्षमा कर दीजे ।
प्रसन्न होइये अब स्वामी, चरणों में अपने ले लीजे ॥
यह योग तो वृद्ध अवस्था, में अच्छा लगता है सब जाने ।
इस उम्र में क्यों धारण है किया, यूं मेरा हृदय दुःख माने ॥
और बहुत से विद्याधरों की कन्या, मेरे साथ में आई हैं ।
सब ही तो आपको चाहती हैं, मुझको आगे धर लाई हैं ॥
कहती हैं देवी तुम्हारी कृपा, से राम देव इमको परणें ।
सो अबये ध्यान छोड़ियेगा, क्यों जाते, शिव रमणी वरनें ॥
बहु सुन्दर २ विद्याधरी, माया से बनी वहां आई हैं ।
कोई गाए कोई नृत्य करे, कोई राम से यूं बतलाई हैं ॥
यह फूल कौन, यह लता कौन, हमको बतला दीजे स्वामी ।
यश आपका सुनकर आई हैं, तुम जगतपति हो जग नामी ॥
श्रीराम बहुत दृढ़ हृदय बने, ये सब कुछ करके हार गये ।
घातिया कर्म का नाश किया, फौरन ही केवल ज्ञान हुये ॥

दोहा—इन्द्र देव ने आन की, गंध कुटी निर्माण।
जय जय केवली राम की, कह करते गुण गाण॥
सीता जी के जीव ने, क्षमा कराई सार।
चरणों में पड़ राम ने, नमन करे बहु बार॥
इन्द्र देव मिल के कहे, सुनो देवाधि देव।
नाथ विहार अब कीजिये, और उपदेश भी देव॥

श्रीराम देव ने विहार किया, प्रत्यैन्द्र नर्क में जाते हैं।
वह भूमि तीसरी दुखदाई, सब नारकी देख के डरते हैं॥
नहीं इनका तेज सहार सके, सब रोते हैं और भागते हैं।
प्रत्यैन्द्र कहा मुझसे ना डरो, पापों से डरो जो मारते हैं॥
लच्मण के जीव को सम्बोधा, और सम्यक ज्ञान कराते हैं।
शम्बूक जो असुर कुमार बना, उसको जिनधर्म सुनाते हैं॥
रावण का जीव पूछता है, कौन, कहाँ से आते हैं।
प्रत्यैन्द्र कहें सीता का जीव, तप करके स्वर्ग लहाते हैं॥
तुम लंकपुरी के राजेश्वर, मोह में फंस कर यहां नर्क पड़े।
श्रीराम ने खूब तपस्या की, कायोत्सर्ग थे धार खड़े॥
अब चार घातिया नष्ट किये, और केवलज्ञान उपाये हैं।
और धर्मोपदेश भी देते हैं, भव्यों को पार लगाते हैं॥
आयु पूरी कर मोक्ष जांय, सुर नर उन का गुण गाते हैं।
हम भी तो उनके पास ही से, कर नमस्कार यहाँ आते हैं॥

दोहा—रावण का तब जीव यूं, कहता होय उदास।

हाय २ विषयों का फल, होगया सर्व ही नाश ॥

चौ०—होगया सर्व ही नाश, नर्क की भूमि पड़े हैं आकर ।
तुम भी करके तपस्या पहुँचे, स्वर्ग सोलवें जाकर ॥
बोले प्रत्यैन्द्र साथ में मेरे, आप स्वर्ग को चलिए ।
लगे उठाने, तब शरीर के, परमाणु हो बिखरे ॥

मै०—कहा तब उन्होंने जाओ जी, तपस्या का फल पाओ जी
स्वर्ग से मनुष्य होयकर ॥
मोक्ष प्राप्ति होवे तुमको, सुन्दर भोग भोग कर ॥

दोहा—सम्यकज्ञान दिया जो तुम, वही बहुत महाराज ।
कुछ शान्ति हमको मिले, नर्क विषे भी आज ॥

तब प्रत्यैन्द्र नर्क से चल करके, श्रीराम पास में आता है ।
कर नमस्कार श्री चरणों को, अपनी शंकायें कहता है ॥
हे प्रभु आप तो मोक्ष चले, भवसागर मुझको छोड़ दिया ।
रावण लक्ष्मण क्यों नर्क में हैं, इनने क्या ऐसा पाप किया ॥
प्रभु वीतराग सद्ज्ञान युक्त, आनन्द कन्द सर्वेश्वर थे ।
सब स्वर स्वरूप ले थे समक्ष, जो २ प्रत्यैन्द्र के मन पर थे ॥
मन इच्छा के ज्ञाता प्रभु ने, इस भांति इन्हें बतलाया है ।
कुछ भव के कर्म भोगकर के, रावण उत्तम पद पावे है ॥
अगले युग में इस भरतखंड में, वह तिर्थंकर पद पाये ।
और जीव तुम्हारा उसभव में, गणधर बन उनका गुण गाये ॥
वह भव दोनों के अन्तिमभव, उस बाद न भूपर आना हो ।

और जीव लखन कुछ कर्म, भोगकर तिर्थंकर पद पाना हो।
अगली बीसी विदेह की जो, उसमें अवतार धरें धारण।
इन्द्रादिक आकर पूज रचें; ये सब शुभ कर्मों के कारण॥
इनसे पहले के जो भव हैं, उन में तीनों का साथ रहे।
इक भव में हो तुम चक्रवर्ती, वह युगल पुत्र बन साथ रहे॥
और भ्रात तुम्हारे भामण्डल, आहार दान के बदले में।
जा भोग भूमि में उत्तम फल, भोगेंगे, दान के बदले में॥
लव-कुश की शंका कुछ न करो, वह दोनों चर्म शरीरी हैं।
इस भव से मुक्ति पायेंगे, वह लाये काय अशरीरी हैं॥
क्षय सात वर्ष का आयु कर्म, कर हमको मुक्ति पाना है।
शुभ कर्मों से दुष्कर्म कटें, यह जिन वाणी ने माना है॥
यह सुन प्रत्येन्द्र फौरन ही चल, कर पहुँच स्वर्ग में जाते हैं।
थोड़े भव बाकी रहे सोच, निज मन में हर्ष मनाते हैं॥
दोहा—आयु कर्म को पूर्ण कर, रामचन्द्र महाराज॥
सिद्धेश्वर पद प्राप्त कर, जाते मुक्ति विराज॥
यह राम-चरित्र समाप्त हुआ, जो जीवन में नव भाव भरे।
सब पढ़ें सुनें सत् चित् लाकर, 'दासी' सबसे अरदास करे॥
'कम्पा' पर अनुकम्पा प्रभु की, प्रेरणा उन्हीं से पाई है।
नहीं छन्द ज्ञान नहीं शब्द ज्ञान, भक्तिवश ही लिखपाई है॥
पुरकाजी मुजफ्फरनगर मध्य, छोटा सा कस्बा है अनूप।
इस अग्र वंश की दासी ने, है धरा वहां यह नारि रूप॥

थे पिता मुसद्दी लाल, और जिनधर्म की पालन हारी हूँ।
हो रचना में जो भूल चूक, वह क्षमा चाहने हारी हूं ॥
रचना के गुण सब राम के हैं, उन से मेरा सम्बन्ध नहीं।
शक्ति वश कुछ लिख पाई हूँ, बुद्धि का मुझ में अंश नहीं॥

सम्वत् चौबीस सौ बया, सी शु चैत्र शभ मास।
ग्रन्थ रत्न सम्पूर्ण यह, पढ़ें, सो पूरे आश॥
एक बार मिल बोलिये, प्रेम सहित जयकार।
महावीर अवतार की, होवे बेड़ा पार॥

——:o:——

सूचना

इस ग्रन्थ को यदि कोई धर्म प्रेमी सज्जन प्रभावना में १०० या ५० प्रतियां मंगायेंगे तो उन्हें विशेष सुविधा दी जायेगी। इसके लिये वह प्रकाशक ~~अथवा वितरक~~ से पत्र व्यवहार करें।

—प्रबन्धक

प्रकाशक
कम्पावती जैन 'दासी'
द्वारा/श्री मदन मोहनलाल जैन
१५३४ कूचा सेठ, देहली-६

वितरक
~~विक्रेता प्रकाशन संघ~~
~~दरीबा कलाँ~~
~~देहली-६~~